सामुदायिक

RNI No. MPBIL02443/2020-TC

GOONJ

National News Magazine

वर्ष : 01 अंक : 12 दिसंबर 2021 मूल्य: ₹ 25 पृष्ठ : 52

स्मार्ट सिटी की और अग्रसर ग्वालियर

नवंबर 2021 का अंक

ग्वालियर, दिसंबर 2021
(वर्ष 01, अंक 12, , पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

सह संपादक
मनोज सिंह भदौरिया

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह

सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी

क्रिएटिव टीम
दर्शिता चौबे, नेहल सिंह

एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह, स्निग्ध तोमर

संकलन
भरत सिंह, सचिन सिंह

कानूनी सलाहकार
अरविन्द दूदावत

कार्यालय प्रभारी
आकांक्षा तिवारी

छायांकन/सिटी रिपोर्टर
अनिल सिंह सिकरवार

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7880075908)

IN THIS ISSUE...

ग्वालियर को स्मार्ट शहरों की पंक्ति में अग्रणी स्थान पर लाना हैः जयति सिंह

26 ग्वालियर को गार्बेज फ्री सिटी 3 स्टार अवार्ड

परिवहन विभाग का विशेष चैकिंग अभियान

23 जांबाज कर्तव्यनिष्ठ आईपीएस अफसर हैं अमित सांघी

विज़न ज़ीरो पर किया जागरूक

47 शरीर के लिए कैल्शियम डाइट बहुत ज़रूरीः डॉ. रोज़ा ओलयाई

GOONJ OF THE MONTH

GOONJ STAR

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। संपादक कृति सिंह। सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा। RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं स्तंभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) संपर्कः 7880075908

क्लीन ग्वालियर, ग्रीन ग्वालियर

ग्वालियर का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ अब शहरवासियों के बीच ऑन एयर हो चुका है शहरवासियों का गूंज 90.8 एफ.एम. को अच्छा रिस्पॉस मिल रहा है। लोग गूंज एफ. एम. के माध्यम से ग्वालियर शहर से जुड़े इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन, कम्युनिटी, एग्रीकल्चर, शिक्षा आदि विषयों पर कई जानकारी मिल रही हैं।

हमारा यह पहला प्रयास होगा कि आमजन से जुड़े मुद्दों पर फोकस हो आमजन की आवाज और उनसे जुड़े पहलूओं को सार्थक रूप से उठाना ही हमारा पहला कर्तव्य रहेगा। गूंज का मुख्य उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचना और उन्हें अपना एक हिस्सा बनाना है।

गूंज एक मंच प्रदान करता है उन आवाज़ों को जो समाज में उभरकर नहीं आप पा रही हैं। ऐसे बहुत हुनरमंद कलाकार हैं जो पूरे विश्व में ही शहर का नाम रोशन कर सकते हैं लेकिन उनको अपने सपने साकार करने की सीढ़ी नहीं मिल पा रही है। गूंज के ज़रिए वो अपनी कला का जादू बिखेर सकते हैं।

स्मार्ट सिटी

वहीं दूसरी ओर ग्वालियर शहर को विकास में अग्रणी बनाने एवं विकासपथ पर आगे बढ़ने में मददगार साबित हो रहा स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट जिसमें केन्द्र व प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत हो रहे कामों से ग्वालियर तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है। स्मार्ट सिटी द्वारा ग्वालियर शहर में विकसित किए गए प्रयास आज हम सबके सामने हैं और एक नया ग्वालियर हमें देखने को मिल रहा है। ग्वालियर शहर स्मार्ट सिटी की ओर अग्रसर होता जा रहा है। शहर में नित नए विकास कार्य स्मार्ट सिटी योजना के अन्तर्गत किए जा रहे हैं।

विज़न ज़ीरो

वहीं बात अगर विज़न जीरों की करें तो परिवहन विभाग ने सड़क दुर्घटनाएँ रोकने और दुर्घटना में घायल लोगों की जान बचाने के लिए सुरक्षित प्रणाली पर आधारित विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना तैयार की है। विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना पाँच स्तम्भों पर आधारित है। इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड़, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरांत सहायता शामिल है। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जाएगा। विज़न जीरो को सफल बनाने में सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। हम सबका नैतिक दायित्व है यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जा सके। हम जिस तरह का सड़क सुरक्षा तंत्र तैयार करेंगे, उसी में हमें परिवार व मित्रों के साथ गुजरना होगा।

स्वच्छता

वहीं बात अगर स्वच्छता की करें तो स्वच्छता रैंकिंग-2022 के लिए ग्वालियर शहरवासी यह प्रण लें कि अबकी बार अपने ग्वालियर को स्वच्छता में नंबर 1 बनाकर ही दम लेंगे। स्वच्छता में ग्वालियर को पहले पायदान पर पहुंचाने के लिए नगर निगम के साथ मिलकर सभी शहरवासियों, सामाजिक संस्थाओं, समाजसेवियों, को एक साथ आगे बढ़कर स्वच्छता की अलख जगाने होगी और हमें खुद से ही शुरूआत करनी होगी कि हम कैसे ग्वालियर को स्वच्छ रखें। सड़कों पर गंदगी ना करें, कचरा नियत स्थान पर ही डालें, नगर निगम तो अपना काम कर ही रहा है लेकिन शहरवासियों को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी तब ही हमारा ग्वालियर स्वच्छता में नंबर 1 बनेगा। स्वच्छता रैंकिंग में दो पायदान पिछड़ने के बाद अब ग्वालियर ने ठान लिया है कि स्वच्छता में ग्वालियर जैसा कोई नहीं थीम पर काम होगा। स्वच्छता में ग्वालियर को अव्वल शहर बनाने के लिये पुख्ता रणनीति बनाने की जरूरत है साथ ही जनप्रतिनिधिगण, समाजसेवी, स्वयंसेवी, विद्यार्थी व व्यवसाइयों सहित समाज के सभी लोगों को भागीदार बनाकर शहर में स्वच्छता को जन आंदोलन का रूप दें तब ही स्वच्छता में हम अग्रणी होंगी। गूंज न्यूज नेटवर्क भी शहरवासियों से अपील करता है कि ग्वालियर को स्वच्छता में नंबर 1 बनाने में ग्वालियर नगर निगम का सहयोग करें और अपनी जिम्मेदारी निभाएं शहर को क्लीन रखें।

कृति सिंह
संपादक

> स्वच्छता में ग्वालियर को अव्वल शहर बनाने के लिये पुख्ता रणनीति बनाने की जरूरत है साथ ही जनप्रतिनिधिगण, समाजसेवी, स्वयंसेवी, विद्यार्थी व व्यवसाइयों सहित समाज के सभी लोगों को भागीदार बनाकर शहर में स्वच्छता को जन आंदोलन का रूप दें तब ही स्वच्छता में हम अग्रणी होंगी। गूंज न्यूज नेटवर्क भी शहरवासियों से अपील करता है कि ग्वालियर को स्वच्छता में नंबर 1 बनाने में ग्वालियर नगर निगम का सहयोग करें और अपनी जिम्मेदारी निभाएं शहर को क्लीन रखें।

स्मार्ट सिटी की ओर अग्रसर ग्वालियर

ग्वालियर को स्मार्ट शहरों की पंक्ति में अग्रणी स्थान पर लाना है: जयति सिंह

ग्वालियर स्मार्ट सिटी परियोजना की सीईओ जयति सिंह के नेतृत्व में स्मार्ट सिटी की महत्वपूर्ण परियोजना निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है. नए बस स्टैंड, दीवारों को सुन्दर पेंटिंग से सजाने काम जोर से चल रहा है स्मार्ट सिटी द्वारा कराए जा रहे निरंतर विकास पथ के कार्यों से ग्वालियर शहर निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है और एक नया ग्वालियर हमारे सामने उभर रहा है जिसमें आकर्षक लाईटिंग, पार्कों का सौंदर्यीकरण, आकर्षक साइन बोर्ड जैसे अनेकों कार्य स्मार्ट सिटी के द्वारा किए जा रहे हैं। केन्द्र व प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत हो रहे कामों से ग्वालियर तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है। ग्वालियर सिटी को स्मार्ट सिटी बनाने से पहले लोगों को भी स्मार्ट बनना होगा। स्मार्ट सिटी द्वारा ग्वालियर शहर में विकसित किए गए करीब करोड़ों की लागत के निर्माण बनकर तैयार हैं ग्वालियर शहर स्मार्ट सिटी की ओर अग्रसर होता जा रहा है शहर में नित नए विकास कार्य स्मार्ट सिटी योजना के अन्तर्गत किए जा रहे हैं।

भारत सरकार की स्मार्ट सिटी मिशन के दूसरे चरण में ग्वालियर को स्मार्ट सिटी के रुप में शामिल किया गया है। स्मार्ट सिटी मिशन का उद्देश्य आधुनिक तकनीक के माध्यम से स्थानीय विकास करना एवं आमजनो के जीवन में गुणवत्ता लाकर उनको और सक्षम बनाने में गति देने हेतु भारत सरकार की एक अभिनव पहल है। ग्वालियर की पहचान एक ऐतिहासिक शहर के रुप में होती है, इसकी पहचान को बनाये रखकर किस प्रकार स्मार्ट शहर में तब्दिल किया जा रहा है, और इसमें क्या क्या चुनौतियो सामने आ रही है। इन्ही सब मुद्दो पर ग्वालियर स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड की सीईओ श्रीमती जयति सिंह नें एक खास मुलाकात में अपने विचार रखे। उनसे खास मुलाकात के प्रमुख अंश:

ग्वालियर को स्मार्ट सिटी मिशन में शामिल हुये लगभग 5 साल पूरे होने को है, इस बीच में स्मार्ट सिटी द्वारा शहर में कई विह्यह्यकास कार्य किये गये है साथ ही करोडो रुपये के स्मार्ट कार्यो का लोकार्पण और शिलान्यास कराया गया है आप क्या मानती है इन कार्यो से आम लोगो को कितनी सुविधा मिल सकेगी।

ग्वालियर स्मार्ट सिटी की पूरी अवधारणा इसी उद्देश्य को लेकर है कि हम आम नागरिक को किस प्रकार स्मार्ट और आसान तरीके से सुविधाये उपलब्ध करा सकते है

और इसी उद्देश्य को लेकर स्मार्ट सिटी कार्पोरेशन द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे है इस कार्यकाल में ग्वालियर स्मार्ट सिटी के कई करोड रुपये के विकास कार्यो को कराया गया है और कई परियोजनाये अपने अंतिम चरण में है, यदि हम देखे तो शहर को अभी तक कई महत्वपूर्ण परियोजना स्मार्ट सिटी द्वारा पूर्ण कराकर समर्पित की गई है जिनमें कंट्रोल कमांड सेंटर, स्मार्ट सिटी बस सर्विस, स्मार्ट पार्क, स्मार्ट प्लेग्राउंड, स्मार्ट संकेतक, स्मार्ट क्लासरूम, सौर ऊर्जा, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, मल्टी लेवल स्मार्ट पार्किंग, डिजीटल म्यूजियम, आईटीएमएस जक्शन, टाउन हॉल का पुर्नउद्धार, महाराज बाड़ा स्थित भवनों के बाहरी हिस्सों का सौंदर्यीकरण जैसी कई महत्वपूर्ण परियोजनाये है जिनसे शहर के आम लोगो को सीधा फायदा मिल रहा है। तो वही कई बडी और महत्वपूर्ण परियोजनाये जैसे स्मार्ट रोड, डिजिटल लाइब्रेरी, एलईडी स्ट्रीट लाइटिंग, फसाड लाइटिंग, कटोराताल का जीणोद्धार सहीत म्यूजिकल फाउंटेन, रिवरफ्रंट डेवलपमेंट, 33केवी जीआइएस सवस्टेशन का कार्य भी प्रगति पर है। जो शहर विकास में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करेगी। मेरा मानना है कि इन सभी स्मार्ट कार्यो से जहाँ शहर सुन्दर और स्वच्छ बन रहा है तो वही आम नागरीको को भी बेहतर सुविधाये मिल पा रही है।

2. शहर में नागरिकों को आवागमन में सुविधा हो इसके लिये किस तरह के प्रयास स्मार्ट सिटी कार्पोरेशन द्वारा किये गये है।

शहर में नागरिको को बेहतर आवागमन और प्रदुषण मुक्त वातावरण मिल सके इसके लिये जीएससीडीसीएल के द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे है। शहर में सूत्र सेवा का शुभारम्भ हो चुका है जिसमें इंटर और इंट्रा सिटी बसें चलाई जा रही है। वही अंतर्राज्यीय बस सेवा भी शुरु की जा रही है, इस सेवा से शहरो के मध्य और शहर के भीतर आवागमन में आम नागरिको को बेहतर सुविधाये मिल सकेगी। इसके साथ ही अंतर्राज्यीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) परियोजना को भी जल्द शुरु किया जायेगा जिससे शहर को आधुनिक बस स्टेण्ड प्राप्त हो

सकेगा। इसके साथ ही शहर में आईटीएमएस परियोजना के द्वारा शहर के चौराहो तिराहो पर अत्याधुनिक ट्रैफिक सिग्नल लगाये जा रहे है जिनका एकीक्रत प्रणाली के द्वारा कंट्रोल कमांड सेंटर से मोनिटरिंग की जा रही है।

3. ग्वालियर एक ऐतिहासिक शहर के रुप में अपनी पहचान रखता है आप ग्वालियर स्मार्ट सिटी की सीईओ है आप इस पहचान को कायम रखते हुये किस प्रकार ग्वालियर को स्मार्ट सिटी बनायेगी।

ग्वालियर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रुप से संपन्न होने के साथ ही गौरवशाली परंपरा का साक्षी रहा है। ग्वालियर का किला, मोहम्मद गौश का मकबरा, तानसेन की समाधि, विक्टोरिया हॉंल, टाउन हॉंल, बैजाताल, बारादरी जैसी ऐतिहासिक घरोहरे स्मार्ट सिटी की अवघारणा को साकार करने में मील का पत्थर साबित होगी। ग्वालियर स्मार्ट सिटी केम्पेन का मकसद भी इन ऐतिहासिक घरोहरो को मूल स्वरुप में ही संरक्षित कर ग्वालियर के नागरिकों और पर्यटको तक स्मार्ट सिटी का संदेश पहुंचाना है। इसके साथ ही बाबडी एवं कुंओं का जीर्णोद्धार और महाराज बाडा स्थित भवनो के बाहरी हिस्सो के सौन्द्रीयकरण, और अत्याधुनिक लाइटिंग व्यवस्था जैसी परियोजनाओं से ऐतिहासिक विरासत को सहेजा जा रहा है।

4. स्मार्ट सिटी के क्रियांवन में आपको किस तरह की चुनौती का सामना करना पड रहा है और इन चुनोतियो से निपटने के लिये आप क्या उपाय कर रही है

स्मार्ट सिटी मिशन के अंतर्गत ग्वालियर शहर के पास अपनी तीन सबसे ज्यादा जरुरी चिंताओं को संबोधित करने का एक अनूठा अवसर है शहरी गतिशीलता, अपशिष्ट प्रबंधन और जनसुविधाओ को बेहतर तरीके से आमलोगो को पहुचाना और हम स्मार्ट सिटी मिशन के तहत वह हर आधुनिक तकनीक का समावेश कर उपाय और प्लानिंग कर रहे है जिससे इन चुनौतियो से बेहतर तरीके से निपटा जा सके और स्मार्ट सिटी मिशन के उद्देश्य को पूर्ण किया जा सके।

5. ग्वालियर शहर को ऐतिहासिक शहर के रुप में जाना जाता है और यहाँ पर्यटन की भी अपार संभावानाये है लेकिन फिर भी ग्वालियर शहर पर्यटन नक्शे पर जो स्थान मिलना चाहिये वह अभी भी ग्वालियर को प्राप्त नही हुआ है क्या मानते है कि स्मार्ट सिटी में शामिल होने के बाद ग्वालियर को यह दर्जा प्राप्त होगा।

ग्वालियर भारत के नक्से पर एक ऐतिहासिक शहर के रुप में पहचाना जाता है और यहाँ की पुरानी ऐतिहासिक घरोहर और उनकी बनावट शैली की अपनी एक अलग पहचान और ईतिहास है, साथ ही संगीत के क्षेत्र में ग्वालियर शहर की अपनी एक विशिष्ठ पहचान है, इन्ही घरोहरो को सहेजकर साथ रखकर ग्वालियर शहर को स्मार्ट सिटी मिशन के तहत विकसित और सुन्दर बनाने की परिकल्पना की गई है जीएससीडीसीएल मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी के रूप में ग्वालियर की पहचान को मजबूत बनाने के लिए पर्यटक आगमन, पर्यटन-सर्किट और पर्यटन बुनियादी ढांचे में सुधार का लक्ष्य लेकर चल रहा है। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत ग्वालियर शहर में पर्यटन सूचना केन्द्र बनाये गये है, साथ ही ऐतिहासिक ईमारतो का जीर्णोद्धार के साथ सुंदर बनाने के लिये कई विकास कार्य किये गये है। इसमे डिजीटल लाइब्रेरी, कंट्रोल कमांड सेंटर, टाउन हॉंल, डिजीटल म्यूजियम सहीत बहुत से ऐसे विकास कार्य स्मार्ट सिटी द्वारा किये गये है जिनके द्वारा ऐतिहासिक स्वरुप को कायम रखते हुये आधुनिकता का समावेश किया गया है वही इसके साथ ग्वालियर को संगीत नगरी के रुप में स्थापित करने के लिये भी प्रयास किये जा रहे है जो निश्चित ही शहर को उसकी पुराने बैभव और पहचान को कायम रखने में महत्वपूर्ण साबित होगे।

6. स्मार्ट सिटी द्वारा शहर में सभी जनसुविधाओ को सुगम हो प्रभावी बनाने के लिये एकीक्रत प्रणाली के रुप में कंट्रोल कमांड सेंटर का निर्माण किया गया था। क्या इससे उन उदेश्य की प्राप्ति हो पा रही है।

स्मार्ट सिटी द्वारा मोतीमहल स्थित ऐतिहासिक ईमारत को इसके मूलस्वरुप को कायम रखते हुये इसमे स्मार्ट सिटी के कंट्रोल कमांड सेंटर को बनाया गया है। इस एकीक्रत प्रणाली को बनाने के पीछे उद्देश्य था शहर में आपात स्थिती में सभी जरुरी सुविधाओ को प्रभावी तरीके से क्रियांवित करने के साथ ही पारदर्शिता के साथ आम लोगो तक मूलभूत सुविधाये को पहुचाना। मुझे यह कहते हुये खुशी हो रही है कंट्रोल कमांड सेंटर

नें इन उद्देश्यो में खरा उतरा है। कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी में कंट्रोल कमांड सेंटर ने अपनी अहम भूमिका को साबित भी किया। इसके साथ ही नगरीय जनसेवाओ की मोनिटरिंग और उनके तुरंत निराकरण करवाना इसके द्वारा ही संभव हो सका है।

7. स्मार्ट सिटी के तहत ग्वालियर शहर में किस तरह की परियोजनाये क्रियान्वयन किया जा रहा है और वर्तमान में ग्वालियर शहर को आप स्मार्ट सिटी में किस स्तर पर खडा देखते है।

स्मार्ट शहरों की चुनौती के दूसरे दौर में, स्मार्ट सिटी मिशन के तहत, ग्वालियर स्मार्ट सिटी प्रस्ताव का चयन भारत सरकार ने किया। हम लोग लगातार प्रयास कर रहे है कि शहर की मूलभूत समस्याओ को समझकर स्मार्ट सिटी मिशन के तहत कार्ययोजनाये तैयार कर विकास कार्यो को गति प्रदान की जा सके, ताकि शहर का एक सुव्यवस्थित विकास हो, इसका ही परिणाम है कि ग्वालियर स्मार्ट सिटी नें राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओ में ना केवल प्रतिनिधित्व किया है। बल्कि अपने युनिक आइडियाज और कार्यो को लेकर सम्मानित भी हुआ है।

8. ग्वालियर के ह्द्धय स्थल महाराज बाडा शहर का मुख्य व्यवसायिक क्षेत्र है लेकिन साथ ही शहर के हेरिटेज के रुप में भी अपनी पहचान रखता है बाडा पर किस तरह के विकास कार्य किये जा रहे है।

ग्वालियर के महाराज बाडा को एबीडी के तहत स्मार्ट सिटी मिशन में शामिल किया गया है जिसके तहत यहाँ के पूरे क्षेत्र में कई विकास कार्य प्रस्तावित है जिसमे महाराज बाड़ा का पुनरुद्धार, बाड़े स्थित भवनो के बाहरी हिस्से का सौन्द्रीयकरण, संरक्षण के साथ ही टाउन हॉल, सरकारी प्रेस बिल्डिंग, गोरखी कॉम्प्लेक्स, सेंट्रल लाइब्रेरी का पुनरुद्धार, गांधी मार्केट का पुर्ननिर्माण, आर्ट एंड क्राफ्ट मार्केट आदि शामिल है इसके अलावा महाराज बाडा को प्रदुषण मुक्त और वाहनमुक्त क्षेत्र बनाने के लिये भी व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है। इन विकास कार्यो से जहाँ महाराज बाडे के ऐतिहासिक स्वरुप को कायम रखा जा सकेगा वही इसके व्यवसायिक महत्व को भी आधुनिक सुविधाओ के

साथ पुर्नस्थापित किया जा सकेगा।

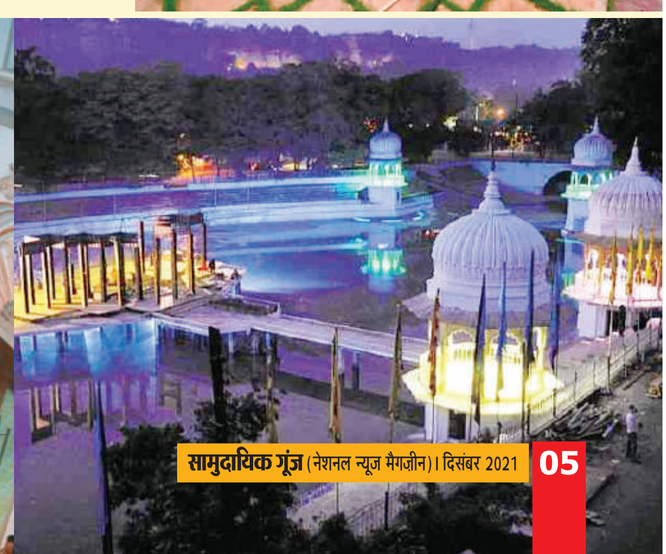

9. वर्तमान में शहर में स्मार्ट सिटी मिशन के तहत किस तरह के विकास कार्य क्रियांवित है और क्या नये विकास कार्य किये जाने की योजना है।

ग्वालियर स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के अंतर्गत 11 मोड्यूल के तहत करोडो रुपये की लागत के विकास कार्य क्रियांवित करवाये जा रहे है, हमारा प्रयास है कि शहर के अंदर चल रहे सभी विकास कार्य अपनी समय अवधि में और गुणवत्ता के साथ पूर्ण हो। जिससे सही मायनो में हमारा शहर ग्वालियर स्मार्ट शहरो की पंक्ति में अग्रणी स्थान पा सके। वर्तमान में डिजीटल म्यूजियम और प्लेटोरियम, स्मार्ट प्ले ग्राउंड, स्मार्ट पार्क, आईटीएमएस जक्शन, स्मार्ट संकेतक, टाउन हॉल, स्मार्ट वॉशरुम और कैफे जैसे महत्वपूर्ण विकास कार्यो का लोकार्पण कर जनता को समर्पित किये जा चुके है, जो आम जनता के लिये बहुत उपयोगी साबित हो रहे है वही इसके अलावा अन्य महत्वपूर्ण प्रोजेक्टस जैसे स्मार्ट रोड, डिजीटल लाईब्रेरी, 33केवी जीआइएस सबस्टेशन, स्मार्ट स्ट्रीट एलईडी लाइट, गोरखी स्कूल का पुर्ण निर्माण और अटल म्यूजियम सहीत महाराज बाडे के सोन्द्रीयकरण को लेकर होने वाले काम भी लोकार्पण के लिये प्रगतिशील है। जिनके पूरे होने से ग्वालियर शहर को एक नई पहचान मिल सकेगी।

10. आप स्मार्ट सिटी की सीईओ है आप ग्वालियर की जनता को क्या विश्वास देना चाहेगी?

ग्वालियर को एक स्मार्ट शहर बनाने का सपना संभव हो सके इसके लिये ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा शहर के विकास को चरणबद्ध तरीके से क्रियांवन किया जा रहा है, जिसके लिये कई माध्यम और तकनीक का प्रयोग कर शहर के विकास को सुनिश्चित किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ग्वालियर के आमजन से स्मार्ट सिटी मिशन के तहत ग्वालियर को स्मार्ट रुप से विकसित करने और इसे सुन्दर शहर बनाने में सहयोग प्राप्त होगा और जीएससीडीसीएल को इस विकासपथ के दौरान आने वाली समस्याओं के लिए आप सभी से अभिनव और समावेशी समाधान मिलेंगे। हमारा उद्देश्य शहर के पुराने ऐतिहासिक स्वरुप को कायम रखते हुये नई तकनीक के उपयोग के साथ लगातार विकास करना है।

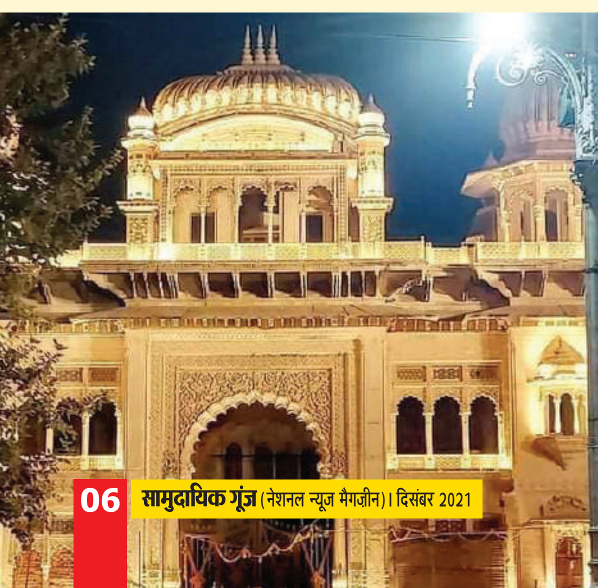

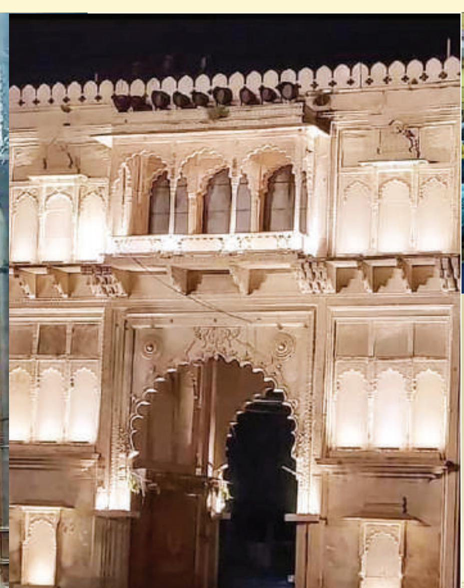

आखिरी सांस तक देश की सेवा में लगे रहे जांबाज जनरल बिपिन रावत

जनरल बिपिन रावत भारतीय सेनाध्यक्ष के तौर पर अपना 3 साल का कार्यकाल पूरा करके 31 दिसंबर को रिटायर हुए जिसके बाद वो चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का पद संभाला. 62 साल के उम्र में बिपिन रावत चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद पर नियुक्त हुए। बिपिन रावत का जन्म उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले में हुआ। रावत ने ग्यारहवीं गोरखा राइफल की पांचवी बटालियन से 1978 में अपने करियर की शुरुआत की थी। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ बिपिन रावत देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ हैं। उन्होंने 1 जनवरी 2020 को यह पद संभाला। रावत 31 दिसंबर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक सेना प्रमुख के पद पर रहे। पिता लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत, जो सेना से लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए। 31 दिसंबर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक थल सेनाध्यक्ष के पद पर रहे। जनरल बिपिन रावत भारतीय सेनाध्यक्ष के तौर पर अपना 3 साल का कार्यकाल पूरा करके 31 दिसंबर को रिटायर हुए जिसके बाद वो चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का पद संभाला. 62 साल के उम्र में बिपिन रावत चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद पर नियुक्त हुए।

कठिन परिस्थितियों से लड़ने वाले जांबाज योद्धा थे बिपिन रावत

आतंकियों को घर में घुसकर मारने वाली सर्जिकल स्ट्राइक के चाणक्य, माँ भारती के जांबाज वीर सपूत, अदम्य साहस की साक्षात प्रतिमूर्ति, देश पर अपना सर्वस्व कुर्बान करने के लिए हर वक्त तत्पर रहने वाले एक महान योद्धा और देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के पद को सुशोभित करने वाले वीर जनरल बिपिन रावत के असमय निधन ने प्रत्येक देशभक्त भारतीय को झकझोर कर रख दिया। देश के प्रथम सीडीएस की पत्नी व 11 अन्य सहयोगी स्टाफ की हेलीकॉप्टर क्रैश में मृत्यु की खबर आने से देश में शोक की लहर व्याप्त है। जनरल बिपिन रावत उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में 16 मार्च 1958 को सैन्य पृष्ठभूमि वाले परिवार में लक्ष्मण सिंह रावत के घर पैदा हुए थे, उनका परिवार कई पीढ़ियों से सेना में शामिल होकर लगातार देश सेवा कर रहा था। जनरल बिपिन रावत, सेंट एडवर्ड स्कूल, शिमला और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खडकसला के एक बहुत ही होनहार छात्र थे। उनको दिसंबर 1978 को भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून से 11वें गोरखा राइफल्स की पांचवीं बटालियन में नियुक्त किया गया था। उनकी नियुक्ति के समय बड़े संयोग की बात यह रही की इस बटालियन में ही उनके पिता लक्ष्मण सिंह रावत ने अपनी सैन्य सेवाएं दी थी और बाद में वह सेना के लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। उनको बहादुरी पारिवारिक विरासत में मिली थी, जिस विरासत की रक्षा के लिए वह हर वक्त तत्पर रहते थे।

> **देश के अंदुरुनी हिस्सों व दुर्गम सीमाओं पर कठिन परिस्थितियों में सफल रणनीति बनाकर काम करने के लिए मशहूर जनरल बिपिन रावत को देश के विभिन्न भागों में नासूर बन गये आतंकवाद के सफाया का बहुत लंबा अनुभव प्राप्त था, उन्होंने पूर्वोत्तर के राज्यों में आतंकवाद के सफाये के लिए बड़े अभियान चलाये थे, वर्ष 2015 में पूर्वोत्तर में घटित एक आतंकियों के हमले की घटना के बाद म्यांमार में सीमा पार करके घुसकर आतंकियों का सफाया करना उनकी आक्रामक कार्यशैली को दर्शाता है, जम्मू-कश्मीर के उरी में सैन्यबलों के काफिले पर आतंकियों के हमले की कयराना घटना के बाद वर्ष 2016 में एलओसी पार जाकर पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में सर्जिकल स्ट्राइक करना उनके सैन्य कार्यकाल की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।**

जिस तरह से देश ने 8 दिसंबर 2021 बुद्धवार को माँ भारती की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले इस बहादुर योद्धा को एक आकस्मिक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में खो दिया, वह देश के अपूरणीय क्षति है। दिलोदिमाग झकझोर देने वाली यह दर्दनाक दुर्घटना तमिलनाडु के नीलगिरि जिले के कुन्नूर में बुधवार 8 दिसंबर 2021 को घटित हुई थी। सूत्रों के अनुसार देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) बिपिन रावत सुबह 9 बजे स्पेशल एयरक्राफ्ट से पत्नी मधुलिका रावत के साथ दिल्ली से तमिलनाडु के एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए उड़ान भरते हैं, सीडीएस रावत 11=35 बजे सुलूर में वायु सेना स्टेशन पर पहुंचते हैं, यहां से एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए वेलिंगटन जाने के लिए सीडीएस बिपिन रावत व उनकी पत्नी मधुलिका रावत समेत कुल 14 लोग हेलिकॉप्टर में उड़ान भरते हैं, लेकिन अफसोस इसके कुछ ही देर बाद दोपहर 12=20 बजे तमिलनाडु के कुन्नूर में उनका हेलिकॉप्टर घने जंगल में दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

दुर्घटना स्थल से आबादी वाला इलाका करीब होने के चलते घटना स्थल पर कुछ ही देर में स्थानीय लोग मौके पर पहुंच गए, वहां उन्होंने टुकड़े-टुकड़े में बिखरे हेलीकॉप्टर को धूं-धूंकर के जलता हुए देखा, लोगों ने इस सैन्य हेलीकॉप्टर के जलते मलबे की आग बुझाने का कार्य तत्काल शुरू कर दिया, बाद में मौके पर पहुंचे प्रशासन के द्वारा घटनास्थल से तीन लोगों को रेस्क्यू करके अस्पताल में पहुंचाया गया, लेकिन डॉक्टर दो लोगों के जीवन बचाने में नाकाम रहे। हालांकि जांबाज योद्धा शौर्य चक्र से सम्मानित ग्रुप कैप्टन वरुण सिंह का पहले वेलिंगटन आर्मी हॉस्पिटल में उपचार किया गया, फिर उनको गुरुवार को बेहतर उपचार के लिए बेंगलुरु के सैन्य अस्पताल में सिफ्ट किया गया, जहां यह वीर योद्धा अस्पताल में जीवन की जंग लड़ रहा है, ईश्वर से प्रार्थना है कि वह जांबाज वरुण सिंह के

प्राणों की रक्षा करें और उनको जल्द स्वस्थ करें। हालांकि बुद्धवार की शाम को ही प्रशासन ने घोषणा कर दी कि हेलीकॉप्टर में सवार 13 लोगों की दुर्घटना में मृत्यु हो गयी है, इस दुर्घटना में जांबाज सीडीएस बिपिन रावत व उनकी पत्नी मधुलिका रावत की भी मृत्यु हो गयी है।

देश के अंदुरुनी हिस्सों व दुर्गम सीमाओं पर कठिन परिस्थितियों में सफल रणनीति बनाकर काम करने के लिए मशहूर जनरल बिपिन रावत को देश के विभिन्न भागों में नासूर बन गये आतंकवाद के सफाया का बहुत लंबा अनुभव प्राप्त था, उन्होंने पूर्वोत्तर के राज्यों में आतंकवाद के सफाये के लिए बड़े अभियान चलाये थे, वर्ष 2015 में पुर्वोत्तर में घटित एक आतंकियों के हमले की घटना के बाद म्यांमार में सीमा पार करके घुसकर आतंकियों का सफाया करना उनकी आक्रामक कार्यशैली को दर्शाता है, जम्मू-कश्मीर के उरी में सैन्यबलों के काफिले पर आतंकियों के हमले की कयराना घटना के बाद वर्ष 2016 में एलओसी पार

जाकर पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में सर्जिकल स्ट्राइक करना उनके सैन्य कार्यकाल की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। वर्ष 2017 में डोकलाम में सड़क निर्माण को लेकर जब भारतीय और चीनी सेनाएं आमने-सामने थी और दोनों सेनाओं के बीच युद्ध जैसी स्थिति 70 से ज्यादा दिनों तक चली थी उस वक्त सेना प्रमुख जनरल रावत की अगुआई में भारतीय सेनाओं ने चीनी सेना का डटकर सामना किया था और आखिर में चीनी सेना को पीछे हटने पर मजबूर किया था। जनरल बिपिन रावत हमेशा भारत की सुरक्षा के लिए पाकिस्तान से बड़ा खतरा चीन को मानते थे, उनकी यह बात गलवान घाटी में सत्य भी हुई जब चीनी सैनिकों ने भारत के भूभाग में जबरन घुसने का दुसाहस किया था और भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को मुंहतोड़ जवाब दिया था।

जम्मू-कश्मीर में उन्होंने विभिन्न छोटे-बड़े अभियान चलाकर आतंकियों के सफाये का कार्य किया, वहीं राज्य में अनुच्छेद 370 हटाने के वक्त पूरी दुनिया ने उनके बेहतरीन सैन्य प्रबंधन को देखा है। वह देश के ऊंचाई वाले दुर्गम युद्ध क्षेत्रों में सैन्य अभियान चलाने के विशेषज्ञ थे, वह एलओसी व एलएसी पर बनने वाली हर तरह की हालातों और उसके चप्पे-चप्पे से वाकिफ थे, रावत को देश के अंदर आतंकवाद रोधी अभियानों में काम करने का वर्षों का एक बहुत लंबा अनुभव था।

जनरल बिपिन रावत को उनके उत्कृष्ट कार्यो के लिए परम विशिष्ट सेवा मेडल दिया गया था, उन्हें उत्तम युद्ध सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, युद्ध सेवा मेडल, सेना मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल जैसे बेहद महत्वपूर्ण सम्मानों से समय-समय पर सम्मानित किया गया था, उन्हें स्वॉर्ड ऑफ़ ऑनर से भी सम्मानित किया गया था। जनरल बिपिन रावत ने अपने बुलंद हौसलों के दम पर उत्तराखंड के पौड़ी जनपद के छोटे से सैण गांव से दिल्ली के ताकतवर सत्ता के गलियारों रायसीना हिल्स तक का सफर पूर्ण स्वाभिमान के साथ तय किया था। उनको 31 दिसंबर 2016 को सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया था, जनरल रावत को 30 दिसंबर 2019 को देश का पहला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) नियुक्त किया गया था। इस भूमिका में जनरल रावत ने सशस्त्र बलों के तीन विंग भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना के बीच बेहतर तालमेल पर ध्यान केंद्रित करते हुए उनकी समस्याओं व आधुनिकीकरण पर विशेष ध्यान दिया, जनरल रावत को देश की सेनाओं के आधुनिकीकरण का शिल्पकार माना जाता है, वह सैन्यबलों को अत्याधुनिक हथियारों से सुसज्जित करने के लिए लगातार कार्य कर रहे थे। जनरल बिपिन रावत की पत्नी मधुलिका रावत आर्मी वेलफेयर से जुड़ी हुई थीं, वो आर्मी वुमन वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्ष भी थीं, बिपिन रावत अपने पीछे दो बेटी कृतिका व तारिणी को छोड़कर गए हैं, दोनों बेटियों पर अचानक से दुखों का पहाड़ टूट गया, उन्होंने मां-बाप को एक साथ खो दिया है, ईश्वर उन्हें दुख की इस घड़ी से लड़ने की शक्ति प्रदान करें।

जीवन पर एक नजर

– पिता लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत थे जो कई सालों तक भारतीय सेना का हिस्सा रहे।
– 2011 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से सैन्य मीडिया अध्ययन में पीएचडी।

– जनरल बिपिन रावत इंडियन मिलिट्री एकेडमी और डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज में पढ़ चुके हैं। इन्होंने मद्रास यूनिवर्सिटी से डिफेंस सर्विसेज में एमफिल की है।
– देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से रक्षा एवं प्रबन्ध अध्ययन में एम फिल की डिग्री।
– मद्रास विश्वविद्यालय से स्ट्रैटेजिक और डिफेंस स्टडीज में भी एम फिल।
– बिपिन रावत ने भारतीय सैन्य अकादमी से स्नातक उपाधि प्राप्त की है।
– आई एम ए देहरादून में इन्हें सोर्ड ऑफ़ ऑनर से सम्मानित किया गया था।
– दिसंबर 1978 में भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून से ग्यारह गोरखा राइफल्स की पांचवीं बटालियन में नियुक्त किया गया था, जहां उन्हें स्वॉर्ड ऑफ़ ऑनर से सम्मानित किया गया था।
– पूर्वी क्षेत्र में एक इन्फैंट्री बटालियन की कमान संभाली।
– एक राष्ट्रीय राइफल्स सेक्टर और कश्मीर घाटी में एक इन्फैंट्री डिवीजन की भी कमान संभाली है ।
– उन्हें वीरता और विशिष्ट सेवाओं के लिए यूआईएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एसएम के साथ सम्मानित किया जा चुका है।
– पिता लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत, जो सेना से लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए।
– आतंकवाद रोधी अभियानों में काम करने का 10 वर्षों का अनुभव है।
– 31 दिसंबर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक थल सेनाध्यक्ष के पद पर रहे।
– जनरल बिपिन रावत भारतीय सेनाध्यक्ष के तौर पर अपना 3 साल का कार्यकाल पूरा करके 31 दिसंबर को रिटायर हुए जिसके बाद वो चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का पद संभाला।
– उन्होंने 1 जनवरी 2020 को यह पद संभाला। रावत 31 दिसंबर 2016 से 31 दिसंबर 2019 तक सेना प्रमुख के पद पर रहे।
– 62 साल के उम्र में बिपिन रावत चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद पर नियुक्त हुए।
– उन्हें वीरता और विशिष्ट सेवाओं के लिए यूआईएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एसएम के साथ सम्मानित किया जा चुका है।

21 साल बाद हरनाज़ संधू के सिर पर सजा मिस यूनिवर्स का ताज

लारा दत्ता के खिताब जीतने के 21 साल बाद भारत की हरनाज़ संधू नई मिस यूनिवर्स हैं। संधू ने आज इजराइल के इलियट में आयोजित 70वें मिस यूनिवर्स 2021 में भारत का प्रतिनिधित्व किया। पंजाब के 21 वर्षीय हरनाज़ संधू ने पराग्वे की नादिया फरेरा और दक्षिण अफ्रीका की लालेला मसवाने को हराकर ताज अपने नाम किया।

संधू को मेक्सिको की पूर्व मिस यूनिवर्स 2020 एंड्रिया मेजा द्वारा ताज पहनाया गया। चंडीगढ़ बेस्ड मॉडल हरनाज़ संधू से पहले मिस यूनिवर्स का खिताब सिर्फ दो भारतीय मॉडलों ने जीता है, पहला 1994 में एक्ट्रेस सुष्मिता सेन और दूसरा 2000 में लारा दत्ता ने जीता था।

यह पूछे जाने पर कि वह युवा महिलाओं को उनके द्वारा सामना किए जाने वाले दबावों से निपटने के लिए क्या सलाह देंगी, एक रचनाकार संधू ने कहा, आज का युवा जिस सबसे बड़े दबाव का सामना कर रहा है, वह यह है कि आप खुद पर विश्वास करें, यह जानें कि आप अद्वितीय हैं और यही आपको सुंदर बनाता है। अपनी तुलना दूसरों से करना बंद करें और आइए दुनिया भर में हो रही अधिक

महत्वपूर्ण चीजों के बारे में बात करें। संधू ने कहा यह वही है जो आपको समझने की जरूरत है। बाहर आओ, अपने लिए बोलो क्योंकि तुम अपने जीवन के नेता हो, तुम अपनी खुद की आवाज हो। मुझे खुद पर विश्वास था और इसलिए मैं आज यहां खड़ी हूं।

17 साल की उम्र में पेजेंट्री में अपनी यात्रा शुरू करने वाली संधू को पहले मिस दिवा 2021, फेमिना मिस इंडिया पंजाब 2019 का ताज पहनाया गया था और यहां तक कि उन्हें फेमिना मिस इंडिया 2019 में शीर्ष 12 में भी रखा गया था।

भारत की हरनाज संधू मिस यूनिवर्स बन गई हैं। 21 साल बाद किसी भारतीय सुंदरी को यह खिताब मिला है। जीतने के बाद देश के नाम एक संदेश में उन्होंने कहा- चक दे फट्टे इंडिया, चक दे फट्टे। साल 2000 में लारा दत्ता मिस यूनिवर्स बनीं थीं। तब से भारत इस खिताब का इंतजार कर रहा था। 70वां मिस यूनिवर्स पेजेंट 12 दिसंबर को इजरायल में हुआ। इसमें हरनाज ने 79 देशों की सुंदरियों को पीछे छोड़ते हुए मिस यूनिवर्स का ताज पहना। मिस यूनिवर्स की रनर अप मिस पराग्वे नाडिया फेरेरा और सेकेंड रनर अप मिस साउथ

अफ्रीका लालेला मस्वाने रहीं। बॉलीवुड एक्ट्रेस उर्वशी रौतेला को मिस यूनिवर्स कॉन्टेस्ट को जज करने का मौका मिला था। वे भारत की तरफ से ज्यूरी टीम का हिस्सा थीं।

चंडीगढ़ की हरनाज संधू ने हाल ही में मिस दीवा मिस यूनिवर्स इंडिया 2021 का खिताब अपने नाम किया था। इसके बाद से ही उन्होंने मिस यूनिवर्स 2021 का ताज जीतने के लिए जी-जान से मेहनत शुरू कर दी थी।

पेशे से मॉडल हैं हरनाज, कर रहीं मास्टर्स की पढ़ाई

21 साल की हरनाज पेशे से एक मॉडल हैं। उन्होंने चंडीगढ़ के शिवालिक पब्लिक स्कूल से अपनी शुरुआती पढ़ाई की है। चंडीगढ़ से ही ग्रेजुएशन करने के बाद इन दिनों वे मास्टर्स की पढ़ाई पूरी कर रही हैं। उन्होंने मॉडलिंग और कई पेजेंट में जीत हासिल करने के बावजूद पढ़ाई से दूरी नहीं बनाई।

साल 2017 में दी थी पहली स्टेज परफॉर्मेंस

हरनाज का पूरा परिवार खेती या ब्यूरोक्रेसी से संबंधित रहा है। 2017 में कॉलेज में एक शो के दौरान उन्होंने पहली स्टेज परफॉर्मेंस दी। उसके बाद यह सफर शुरू हो गया। उन्हें घुड़सवारी, तैराकी, एक्टिंग, डांसिंग और घूमने का बेहद शौक है। वे फ्री होती हैं तो इन्हीं शौक को पूरा करती हैं। भविष्य में मौका मिलने पर फिल्मों में भी काम करना चाहती हैं।

दुबलेपन के लिए बनाया जाता था हरनाज का मजाक

17 साल की उम्र तक हरनाज काफी इंट्रोवर्ट हुआ करती थीं। स्कूल में उनके दुबलेपन का मजाक भी बनाया जाता था। इस वजह से कुछ समय के लिए वे डिप्रेशन में रहीं, लेकिन परिवार ने हमेशा उन्हें सपोर्ट किया। वे फूडी हैं पर फिटनेस का भी ख्याल रखती हैं। एक इंटरव्यू में हरनाज ने बताया था कि वे अपनी पसंद की हर चीज खाती हैं। इन सब के बावजूद वर्कआउट करना नहीं भूलतीं। उनका मानना है कि सभी को अपने मन का खाना खाना चाहिए, लेकिन

वर्कआउट करना नहीं छोड़ना चाहिए।

इन फिल्मों में आ चुकी हैं नजर

हरनाज अपनी पढ़ाई और पेजेंट की तैयारी करने के साथ-साथ कई फिल्मों में भी काम कर चुकी हैं। उन्होंने 'यारा दियां पू बारां' और 'बाई जी कुट्टांगे' जैसी फिल्मों में काम किया है।

चक दे फट्टे का मतलब क्या है?

पंजाबी में चक दे का मतलब उठा लेना और फट्टे का मतलब लकड़ी के पटियानुमा टुकड़े जिन्हें नहर-नाले पार करने के लिए पुल की तरह इस्तेमाल किया जाए। 'चक दे फट्टे' यानी लकड़ियां उठा लो, ताकि दुश्मन नहर-नाले के इस पार न आ पाए। यह जीत का प्रतीक है। यह वाक्य हौसला बढ़ाने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

ऐसे रचा इतिहास

भारत की हरनाज संधू ने तीन घंटे चली लाइव प्रतियोगिता में मिस यूनिवर्स का खिताब अपने नाम करने से पहले कई राउंड पार किए। उन्होंने नेशनल कॉस्ट्यूम, इवनिंग गाउन, इंटरव्यू और स्विमवियर राउंड में कॉन्फिडेंस और ग्रेस दिखाया। उनके साथ टॉप 10 में पराग्वे, प्यूर्टो रिको, यूएसए, दक्षिण अफ्रीका, बहामास, फिलीपींस, फ्रांस, कोलंबिया और अरूबा की सुंदरियां शामिल थीं। सभी राउंड में बेहतर प्रदर्शन करते हुए हरनाज ने इतिहास रचा। सेमीफाइनलिस्ट बनने से पहले हरनाज ने कहा था, कभी भी अपने शौक से समझौता नहीं करना चाहिए। क्योंकि इससे आपका सपना करियर बन सकता है। इस ब्यूटी पीजेंट में फ्रांस, कोलंबिया, सिंगापुर, ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, भारत, वियतनाम, पनामा, अरूबा, पराग्वे, फिलीपींस, वेनेजुएला और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं।

भारतीय नौसेना की उपलब्धियों का जश्न मनाने का दिन नौसेना दिवस

भारत हर साल 4 दिसंबर को भारतीय नौसेना की उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए नौसेना दिवस मनाता है और ऑपरेशन ट्राइडेंट के तहत 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान कराची बंदरगाह पर नौसैनिक हमले करने वाले बहादुरों की वीरता को याद करता है।

लगभग पांच दशक पहले इसी दिन भारतीय नौसेना ने भारत-पाक युद्ध में ऑपरेशन ट्राइडेंट के हिस्से के रूप में पीएनएस खैबर सहित चार पाकिस्तानी जहाजों को डुबो दिया था, जिसमें सैकड़ों पाकिस्तानी नौसेना के जवान मारे गए थे। भारतीय नौसेना ने 4 और 5 दिसंबर की दरम्यानी रात को ऑपरेशन चलाया, जिससे पाकिस्तानी जहाजों और सुविधाओं को भारी नुकसान हुआ।

ऑपरेशन ट्राइडेंट को भारतीय नौसेना द्वारा संचालित सबसे सफल ऑपरेशनों में से एक बनाने के मिशन के दौरान भारतीय पक्ष को कोई नुकसान नहीं हुआ या किसी के हताहत होने की सूचना नहीं थी। जबकि, पाकिस्तान ने कराची में एक माइनस्वीपर, एक विध्वंसक, गोला-बारूद ले जाने वाला एक मालवाहक पोत और ईंधन भंडारण टैंक खो दिया।

ऑपरेशन ट्राइडेंट ने भारतीय नौसेना को इस क्षेत्र में पहली बार जहाज-रोधी मिसाइलों का उपयोग करते हुए देखा। आईएनएस निपत, आईएनएस निर्घाट और आईएनएस वीर- भारतीय नौसेना के तीन युद्धपोत - ने हमले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और ऑपरेशन के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित किया। भारतीय नौसेना के बेड़े ने गुजरात के ओखा बंदरगाह के माध्यम से पाकिस्तानी जलक्षेत्र में प्रवेश किया और माइनस्वीपर पीएनएस मुहाफिज पर हमला किया, इससे पहले कि वह कराची के पाकिस्तान नौसेना मुख्यालय (पीएनएचक्यू) को संकेत भेज पाता। कार्य समूह में तीन विद्युत-श्रेणी की मिसाइल नौकाएँ - ढ्ढहृस निपत, ढ्ढहृस निर्घाट और ढ्ढहृस वीर, दो पनडुब्बी रोधी अर्नाला श्रेणी के कोरवेट - ढ्ढहृस किल्टन और ढ्ढहृस कच्छल, और एक बेड़े टैंकर - ढ्ढहृस पोशाक शामिल थे। इस दल का नेतृत्व 25वीं मिसाइल बोट स्क्वाड्रन के कमांडिंग ऑफिसर कमांडर बबरू भान यादव ने किया।

कई भारतीय नौसेना कर्मियों को सफल ऑपरेशन के लिए वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।नौसेना दिवस को चिह्नित करने के लिए हर साल, नौसेना मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया पर एक बीटिंग रिट्रीट समारोह का भी आयोजन करती है।

HUMAN RIGHTS

NEHAL SINGH

All human beings are born free and equal in dignity and rights . They are endowed with reason and conscience and should act towards one another in a spirit of brotherh ood. " article 1 of the Universal Declaration of Human Rights.On the 10th of December 1948 in world recovering from the still recovering from the aftermath of World War 2, the leaders of the world came together to declare the equal importance of each human life.

The Universal Declaration of Human Rights was adopted as a reflection of a long standing need for peace and freedom. A great history precedes this very date all the way from Magna carta of the 1200s to the French declarartion , the World wars and the league of nations. The declaration is a major achievement for humankind as it received unanimous recognition by a host nations with varied political ideologies. This unanimity in the face of diversity was unprecedented and came as a message of hope to the war ravaged world. Although the 58 member states which formed the UN at that time varied in their ideologies , political systems and religious and cultural background and had different patterns of socio-economic development, the declaration represented an affirmation of common goals and aspirations. Out of the 58 member states it was adopted with 48 in favour, 8 abstentions and 2 countries who did not vote.

India was one of the original 48 signatories of the declaration and enacted the rights through the fundamental rights in the Constitution of India. It was accepted by the United Nations General Assembly at palais de chaillot in paris, France. As a founding text of human and civil rights the declaration (called UDHR) details the individual's basic rights and freedoms and decribes the rights as inherent inalienable and applicable to all human beings. It has 30 articles and is enacted through 9 binding treaites as the UDHR in itself cannot be binding. As of present all 193 member states of UN have ratified at least one of the 9 treaties. It is the most translated document in the history of the world with the text being available in 524 languages.

The UN commemmortaes this day each year with a theme related to the UDHR. The theme if 2021 is EQUALITY : reducing inequalities, advancing human rights and is based with article 1 of the UDHR.Challenges still lie inspite of major accomplishments. Ethnic strife and secessionist wars still plague the world.

With happenings where the armies of a mighty nation freely indulged in war-reltaed atrocities humiliating those in captivity, it has become imperative to reiteriate to humanity the articles of the great charter of humanity and truly see , in the smallest corners of the world , the indulgence in the freedom of simply being born human. As Eleanor Roosevelt said " Where, after all, do universal human rights begin? In small places, close to home -- so close and so small that they cannot be seen on any maps of the world. Unless these rights have meaning there, they have little meaning anywhere. Without concerted citizen action to uphold them close to home, we shall look in vain for progress in the larger world.

बराबरी के खिलाफ है मर्दानगी

सुरेश तोमर
भोपाल

बात कुछ साल पहले की है। शायद 2009 या 2010 की। उस वक्त मैं ग्वालियर में संभागीय संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास विभाग के पद पर पदस्थ था। एक समाचार सुना कि भिण्ड जिले के गांव में एक दम्पत्ति अपनी नवजात कन्या को लेकर गायब हो गये हैं। प्रसव सरकारी अस्पताल में हुआ था, इसलिये खबर तेजी से फैली। बाद में मालूम हुआ कि उस बेटी को मार दिया गया है। प्रकरण में प्राथमिकी दर्ज हुई और मृतक नवजात कन्या के पिता, दादा और चाचा को गिरफ्तार कर लिया गया। मृतक कन्या का पिता पूर्व सरपन्च था और उसका स्थानीय राजनैतिक रसूखदारों से अच्छा खासा संपर्क था। गिरफ्तार होने पर उसकी प्रतिक्रिया थी कि - ‘‘का हम अब अपनी मोड़ी को भी ना मार सकत ? ’’ (क्या अब हम अपनी बेटी को भी नहीं मार सकते ?) गोया कि अपनी बेटी को मारना उनका जन्म सिद्ध अधिकार है यानि की अपने घर की बेटियाँ और अन्य स्त्रियों का जीवन, उनकी गतिविधियों पर नियन्त्रण रखना उनका अधिकार है स्त्रियाँ वस्तु के समान हैं उन पर अधिकार पुरूषों की मर्दानगी की निशानी है।

आम तौर पर हर घर में हमें बचपन से यह सिखाया जाता है कि लडकियाँ घर की इज्जत हैं। कभी यह सुनने को नही मिलता कि लड़कों से भी घर का मान-सम्मान है। ‘घर की इज्जत’ होने का बोझ लड़कियों के उपर इतना मानसिक दबाब बनाता है कि वे अपना स्वाभाविक जीवन जी नहीं पातीं। हर वक्त एक अनजाना सा भय उन पर हावी रहता कि उनके किसी कृत्य से ‘घर की

इज्जत’ को आंच न आ जाये। वे घर से दूर स्कूल में पढ़ने नहीं जा पाती क्योंकि वे असुरक्षित हैं। ग्रामीण परिवेश में यह ज्यादा होता है। बालिका अशिक्षा और बाल विवाह जैसी कुरीतियों के पीछे भी यही दबाव है। दो घटनाएं और हैं। कुछ समय पहले पाकिस्तान की एक मॉडल कंदील बलोच की हत्या उसी के भाई के द्वारा इसलिए कर दी गयी क्योंकि कन्दील की व्यवसायिक आवश्यकताओं के चलते उसे उसके समाज में स्वीकार्य वेशभूषा से इतर कम कपडे पहनने होते थे या अंग प्रदर्शन कराना होता था। कंदील का स्वतंत्र व्यवहार उसके भाई के लिए असम्मान की बात थी। यानी वही ‘घर की इज्जत’ खराब होने वाली बात। कंदील बलोच की हत्या सीधे-सीधे ऑनर किलिंग का मामला था। लगभग उसी समय ग्वालियर के एक बालिका गृह में रह रही एक बालिका को उसी के पिता व चाचा के द्वारा धारदार हथियार से मार दिया गया क्योंकि वह अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध उस लडके के साथ घर से चली गयी थी जिससे कि कभी उन्होंने ही विवाह तय किया था जो कि सजातीय ही था। हमारे देष की खाप पंचायते भी यही करती हैं।

देखा जाये तो लड़कियों पर होने वाले अत्याचार शोषण

के मामले में पूरे भारतीय उप महाद्वीप की सोच लगभग एक जैसी ही है। समाज पितृसत्तात्मक है और पुरूष आपराधिक स्तर तक मर्दानगी से भरे हुए।

सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यन्तर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यन्तर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान

का भी साधन है। हमारी भाषा और मुहावरों पर भी पुरुषों का अधिकार है। एक जुमला है ''जोरू का गुलाम।'' मुझे लगता है कि ये जुमला समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे को सुरक्षित बनाए रखने के लिए गढ़ा गया होगा। जब किसी पुरुष ने अपनी पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार किया होगा या उसकी सहमति से कोई निर्णय लिया होगा तो दूसरे पुरुषों ने घबराहट के साथ उसे इस उपाधि से नवाजा होगा कि कहीं ऐसे पुरुषों का समूह बढ़ ना जाए जो अपनी पत्नी की सहमति के बिना निर्णय नहीं ले सकते। ''जोरू का गुलाम'' कह कर उनका इतना मजाक उड़ाया गया होगा कि कोई दूसरा तथाकथित मर्द ऐसा व्यवहार करने की हिम्मत न जुटा सके। खास बात तो यह है कि उसकी ये साजिश सफल है। आज ज्यादातर पत्नियां अपने मर्द पतियों के हाथों पिट रही हैं और ''जोरू का गुलाम'' हाशिये पर हैं।

जिन दो ऐतिहासिक महिलाओं के साहस और शौर्य के उदाहरण हमारे देश में दिये जाते हैं उनमें से पहली है झॉसी की रानी लक्ष्मी बाई। दूसरी हैं देश की पहली महिला प्रधानमंत्री रहीं श्रीमती इंदिरा गांधी। इन दोनों स्त्रियों ने स्त्रियों के लिए बनाई गई परम्पराओं, लीक से हटकर अदम्य साहस दिखाया और अपना नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज कराया है।

लेकिन हम उन्हें किस नजरिये से देखते हैं ? झॉसी की रानी लक्ष्मी बाई पर सुभद्रा कुमारी चौहान ने एक प्रसिद्ध कविता लिखी है 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।' उधर श्रीमती इंदिरा गांधी के बारे में कहा जाता था कि उनके मंत्रीमंडल में केवल एक ही मर्द है और वह है स्वयं इंदिरा गांधी। गोया कि साहस, हिम्मत केवल मर्दों का ही गुण है। अगर स्त्रियों में यह गुण है तो वह मर्दानी है। यह कहने के पीछे छुपी मान्यता यह है कि मर्द मजबूत हिम्मती साहसी और नियंत्रण रखने वाले होते हैं जबकि औरतें दब्बू और डरपोक। एक तरफ भारत में नारी को देवी का दर्जा दिया जाता है, उसे शक्ति स्वरूपा माना जाता है, किन्तु वास्तविकता में हमारा समाज स्त्री के साहस व शौर्य को स्वीकारने के बजाय उसे असंगत या पुरुषोचित मर्दाना व्यवहार से जोड़ता है। इससे इतर अगर किसी पुरूष में स्त्रित्व के गुण हैं तो उसे जनाना कहकर खारिज कर दिया जाता है। शायद इसी के चलते हमारी पहले के पीढ़ीयों में पिता अपने बच्चों को प्यार से कभी गोद में भी नहीं लेते थे।

उपर की सभी बातों का सार यही है कि मर्दानगी की सोच स्त्री-पुरूष बराबरी के खिलाफ है। मर्दानगी की सोच ही महिला निरक्षरता, घर के अंदर बाहर हिंसा, यौन हिंसा, हॉनर किलिंग, छेड़खानी, बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्या जैसी समस्याओं की मूल जड़ है। यह गंभीरता से सोचने का वक्त है कि स्त्रियों के खिलाफ यह आपराधिक मर्दानगी कब खत्म होगी।

रंग भेद की समस्या के बारे में किसी ने कहा है कि ये समस्या कालों (अफ्रीकन/नीग्रो) की नहीं बल्कि गोरों की है। वैसे ही स्त्री-पुरूष के बीच जो गैर बराबरी है वह स्त्रियों की समस्या नहीं है, बल्कि उनके साथ रहने वाले पुरूषों की समस्या है। क्योंकि भेदभाव स्त्रियों की ओर से नहीं, पुरुषों की ओर से होता है। जब भी हमें स्त्री सशक्तिकरण, स्त्रियों के शोषण और उन पर होने वाले अत्याचारों, घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों पर बात करनी होती है तो ये चर्चा भी हम स्त्री समूहों के साथ करते हैं। जबकि मेरा मानना है इन मुद्दों पर पुरूषों के साथ चर्चा की जाने की जरूरत है, तभी उनकी सोच में बदलाव आएगा। इस बदलाव के बाद ही हम किसी समाधान की ओर कदम बढ़ा सकेंगें।

"

रंग भेद की समस्या के बारे में किसी ने कहा है कि ये समस्या कालों (अफ्रीकन/नीग्रो) की नहीं बल्कि गोरों की है। वैसे ही स्त्री-पुरूष के बीच जो गैर बराबरी है वह स्त्रियों की समस्या नहीं है, बल्कि उनके साथ रहने वाले पुरूषों की समस्या है। क्योंकि भेदभाव स्त्रियों की ओर से नहीं, पुरुषों की ओर से होता है। जब भी हमें स्त्री सशक्तिकरण, स्त्रियों के शोषण और उन पर होने वाले अत्याचारों, घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों पर बात करनी होती है तो ये चर्चा भी हम स्त्री समूहों के साथ करते हैं। जबकि मेरा मानना है इन मुद्दों पर पुरुषों के साथ चर्चा की जाने की जरूरत है, तभी उनकी सोच में बदलाव आएगा। इस बदलाव के बाद ही हम किसी समाधान की ओर कदम बढ़ा सकेंगें।

भारत को परम वैभव के शिखर पर ले जाने हेतु समर्पित रहे अटल बिहारी वाजपेयी

भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन का क्षण-क्षण भारत को परम वैभव के शिखर पर ले जाने हेतु समर्पित रहा। अटल जी जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व वाले जननेता को पाकर भारतीय राजनीति धन्य हुई है। उनका मूल्यों व आदर्शों आधारित जीवन हम करोड़ों कार्यकर्ताओं के लिए एक अनमोल धरोहर है। अटल बिहारी वाजपेयी, बिहारी का जन्म 25 दिसंबर, 1924, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत में हुआ था और वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता थे और 1996 में और फिर 1998 से 2004 तक भारत के दो बार प्रधान मंत्री रहे।

वाजपेयी पहली बार 1957 में भारतीय जनसंघ (बीजेएस) के सदस्य के रूप में संसद के लिए चुने गए थे, जो भाजपा के अग्रदूत थे। 1977 में बीजेएस जनता पार्टी बनाने के लिए तीन अन्य दलों में शामिल हो गया, जिसने जुलाई 1979 तक सरकार का नेतृत्व किया। जनता सरकार में विदेश मंत्री के रूप में, वाजपेयी ने पाकिस्तान और चीन के साथ संबंधों में सुधार के लिए प्रतिष्ठा अर्जित की। 1980 में, जनता पार्टी में विभाजन के बाद, वाजपेयी ने बीजेएस को खुद को भाजपा के रूप में पुनर्गठित करने में मदद की।

वाजपेयी ने मई 1996 में प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ली थी, लेकिन अन्य दलों के समर्थन को आकर्षित करने में विफल रहने के बाद, केवल 13 दिनों में ही पद पर थे। 1998 की शुरुआत में वे फिर से प्रधान मंत्री बने, जिसमें भाजपा ने रिकॉर्ड संख्या में सीटें जीतीं, लेकिन उन्हें क्षेत्रीय दलों के साथ एक अस्थिर गठबंधन बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। 1999 में भाजपा ने संसद में अपनी सीटें बढ़ाईं और सरकार पर अपनी पकड़ मजबूत की।

1998 में भारत के कई परमाणु हथियारों के परीक्षण की पश्चिमी आलोचना के सामने वाजपेयी ने एक विद्रोही मुद्रा ग्रहण की। पहले भारत के मुस्लिम अल्पसंख्यक के प्रति उनके सुलह के इशारों के लिए उनकी प्रशंसा की गई थी। 2000 में उनकी सरकार ने कई प्रमुख सरकारी उद्योगों से सार्वजनिक धन के विनिवेश का एक व्यापक कार्यक्रम शुरू किया। 2002 में वाजपेयी की सरकार की गुजरात में दंगों पर प्रतिक्रिया करने में धीमी गति के लिए आलोचना की गई थी जिसमें लगभग 1,000 लोग (मुख्य रूप से मुस्लिम) मारे गए थे। फिर भी, 2003 में वाजपेयी ने कश्मीर क्षेत्र को लेकर पाकिस्तान के साथ भारत के लंबे समय

से चल रहे विवाद को सुलझाने के लिए एक ठोस प्रयास किया। उनके नेतृत्व में, भारत ने स्थिर आर्थिक विकास हासिल किया, और देश सूचना प्रौद्योगिकी में एक विश्व नेता बन गया, हालांकि भारतीय समाज के गरीब तत्व अक्सर आर्थिक समृद्धि से वंचित महसूस करते थे।

वाजपेयी ने 2005 के अंत में राजनीति से अपनी सेवानिवृत्ति की घोषणा की। दिसंबर 2014 के अंत में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

लंबी बीमारी के बाद 16 अगस्त, 2018 को 93 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

भारत के राजनीतिक स्पेक्ट्रम में नागरिकों और नेताओं के निधन पर सोमवार को पूर्व प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि दी गई। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ-साथ अन्य लोगों ने नई दिल्ली में सदैव अटल समाधि पर वाजपेयी को पुष्पांजलि अर्पित की .

केंद्रीय मंत्रियों, भाजपा नेताओं और विपक्षी नेताओं ने सोशल मीडिया पर दिग्गज राजनेता को श्रद्धांजलि दी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि वाजपेयी ने एक नए भारत के निर्माण की आधारशिला रखी और एक सक्षम और मजबूत भारत के निर्माण में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।

एक सांसद के रूप में वाजपेयी का करियर चार दशकों में फैला और प्रधान मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, भारत ने 1998 में पोखरण-द्वितीय नामक अपना दूसरा परमाणु बम परीक्षण किया। एक सरकारी बयान में कहा गया है कि पीएम के रूप में उनकी विरासत में चतुर और बुद्धिमान आर्थिक नीतियां भी शामिल हैं, जिन्होंने स्वतंत्र भारत के इतिहास में निरंतर विकास की सबसे लंबी अवधि की नींव रखी। उन्हें 2014 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था और उनकी जयंती, जो 25 दिसंबर को आती है, को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाता है। अक्टूबर 2018 में गंगोत्री ग्लेशियर के पास चार हिमालयी चोटियों का नाम वाजपेयी के नाम पर रखा गया था।

WomenEmpowerment in MP

Honorable Delhi High Court division bench has given a landmark judgment for empowerment of short service Commissioned women officer. Indian army to be served as permanent commission officer in April 2010.This concept for permanent commission For women officer was accepted by Honorable Supreme Court.Honorable supreme court given against landmark judgment that women/girls Will appear in NDA examination in this year i.e 2021What is it is historical legal sensitivity of Honorable Supreme Court for empowerment of women, from ancient time woman has very high place in the society. In Holkar Dynasty Devi Ahilya is known figure for transparency in governance in 18century (1725-1795) In Malwa area, now part of Indore division. Her work will be published separately for empowerment of women in M.PRajMata Vijay Raje Scindia given landmark strength to BJP in political formShe was one important pillar to support late Honorable Prime Minister Atal Bihari Vajpayee for strong democracy of India. Her efforts for education department thought dignity of Chambal Valley. Hardwork will be published separately for empowerment of women in Madhya Pradesh

Mr Yadunath Singh Sikarwar

दुनियाभर में फिर से रूप बदल कर पाँव पसार रहा है कोरोना

भारत में भले कोरोना की चाल कुछ धीमी पड़ी हो लेकिन यह खत्म नहीं हुआ है यूरोपीय देशों में तो इसका कहर जारी है और जिस तरह दक्षिण अफ्रीका में कोरोना के नये वैरिएंट का पता चला है उसको देखते हुए भारत में भी चिंता व्यक्त की जा रही है। केंद्र ने तो सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से कहा है कि दक्षिण अफ्रीका, हांगकांग और बोत्सवाना से आने वाले या इन देशों के रास्ते आने वाले सभी अंतरराष्ट्रीय यात्रियों की कड़ी स्क्रीनिंग और जांच की जाए क्योंकि इन देशों में कोविड-19 के गंभीर जनस्वास्थ्य प्रभावों वाले नये स्वरूप सामने आने की सूचना है।

दक्षिण अफ्रीका की बात करें तो वहां कोरोना वायरस के एक नए स्वरूप का पता लगा है जिससे अधिक तेजी से संक्रमण फैलने की आशंका है और अधिकारियों ने इससे जुड़े 22 मामलों की पुष्टि की है। इंपीरियल कॉलेज लंदन के विषाणु विज्ञानी डॉ. टॉम पीकॉक ने इस सप्ताह की शुरुआत में अपने ट्विटर अकाउंट पर वायरस के नए स्वरूप (बी.1.1.529) का विवरण पोस्ट किया था। उसके बाद वैज्ञानिक इस स्वरूप पर गौर कर रहे हैं। हालांकि ब्रिटेन में इसे चिंता पैदा करने वाले स्वरूप की श्रेणी में अभी औपचारिक रूप से वर्गीकृत नहीं किया गया है। दुनिया भर के वैज्ञानिक तेजी से फैलने के संकेतों के लिए नए स्वरूप पर अब गौर करेंगे। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान- नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर कम्युनिकेबल डिजीज (एनआईसीडी) ने पुष्टि की कि दक्षिण अफ्रीका में बी.1.1.529 का पता चला है और जीनोम अनुक्रमण के बाद बी.1.1.529 के 22 मामलों की पुष्टि हुयी है। एनआईसीडी के कार्यवाहक कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर एड्रियन प्यूरेन ने कहा, ÷इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि दक्षिण अफ्रीका में एक नए स्वरूप का पता चला है... हालांकि आंकड़े अभी सीमित हैं, हमारे विशेषज्ञ नए स्वरूप को समझने के लिए सभी स्थापित निगरानी प्रणालियों के साथ लगातार काम कर रहे हैं।''

दूसरी ओर, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कहा है कि पिछले सप्ताह यूरोप में कोरोना वायरस संक्रमण के मामलों में 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई और दुनिया का यह एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जहां कोविड-19 के मामले अक्टूबर के मध्य से लगातार बढ़ रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की स्वास्थ्य एजेंसी ने महामारी को लेकर अपने साप्ताहिक मूल्यांकन में कहा कि वैश्विक स्तर पर संक्रमण के मामलों और मौतों में लगभग छह प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पिछले सप्ताह संक्रमण के लगभग 36 लाख मामले आए तथा 51,000 लोगों की मौतें हुईं। डब्ल्यूएचओ के यूरोप के निदेशक डॉ. हैंस क्लूज ने आगाह किया है कि जल्द एहतियाती कदम नहीं उठाए गए तो महाद्वीप में वसंत के मौसम तक 700,000 और मौतें हो सकती हैं। क्लूज ने कहा, ''यूरोपीय क्षेत्र कोविड-19 महामारी की मजबूत गिरफ्त में बना हुआ है।'' उन्होंने देशों से टीकाकरण बढ़ाने और ''लॉकडाउन के अंतिम उपाय'' से बचने के लिए मास्क लगाने तथा सामाजिक दूरी जैसे अन्य उपाय का पालन करने का आह्वान किया।

डब्ल्यूएचओ ने कहा कि आसानी से फैलने वाला डेल्टा स्वरूप वैश्विक स्तर पर कोरोना वायरस का प्रमुख स्वरूप बना हुआ है। पिछले सप्ताह सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटाबेस पर अपलोड 840,000 से अधिक जीनोम अनुक्रमण मामलों में से करीब 99.8 प्रतिशत मामले डेल्टा स्वरूप के थे। म्यू, लैम्ब्डा और गामा सहित कोरोना वायरस के अन्य स्वरूपों का योगदान एक प्रतिशत से भी कम है। हालांकि, लातिन अमेरिका में नमूनों के जीनोम अनुक्रमण में इन स्वरूपों का बड़ा अनुपात है। वहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन के यूरोप कार्यालय ने कहा है कि पूर्वानुमानों के मुताबिक इस महाद्वीप के 53 देशों में अगले वसंत तक कोरोना वायरस महामारी से सात लाख और लोगों की मृत्यु हो सकती है, जिससे संक्रमण से मौत के कुल मामले 20 लाख से अधिक हो सकते हैं। इस बीच एक बड़ी खबर आई है कि यूरोपीय संघ (ईयू) के औषधि नियामक ने पांच से 11 साल के बच्चों के लिए फाइजर कंपनी के कोविड-19 रोधी टीके को मंजूरी दे दी। इसके साथ ही यूरोप में कोरोना वायरस के नए मामलों में वृद्धि के बीच लाखों स्कूली बच्चों के टीकाकरण का रास्ता साफ हो गया। हम आपको बता दें कि यह पहला मौका है जब यूरोपियन मेडिसिन एजेंसी ने बच्चों के टीकाकरण के लिए किसी कोविड टीके को मंजूरी दी है। एजेंसी ने कहा कि उसने पांच से 11 वर्ष की आयु के बच्चों के टीकाकरण के लिए कोविड-19 टीके 'कॉमिरनेटी' को मंजूरी दी है।

वहीं अगर इटली की बात करें तो वहां की सरकार ने कोरोना वायरस संक्रमण को फैलने से रोकने और अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने के लिए उन लोगों पर कुछ पाबंदियां लगाने का फैसला किया है, जिन्होंने अभी तक कोविड-19 रोधी टीके नहीं लगवाए हैं। नए दिशानिर्देशों के अनुसार, छह दिसंबर से रेस्तरां में भोजन करने, सिनेमा घर जाने या किसी खेल प्रतियोगिता देखने जाने के लिए लोगों को कोविड-19 से हाल ही में उबरने का या टीकाकरण का प्रमाणपत्र दिखाना होगा। इटली में नए नियमों के तहत कानून प्रवर्तन, सैन्य तथा सभी स्कूली कर्मचारियों के लिए टीकाकरण अनिवार्य कर दिया गया है। इससे पहले टीकाकरण केवल स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारियों और शिक्षकों के लिए अनिवार्य था।

पीएम मोदी ने देश को समर्पित किया काशी कॉरिडोर, कहा- नया इतिहास रचा जा रहा है

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में श्री काशी विश्वनाथ धाम गलियारे का उद्घाटन किया। परियोजना के उद्घाटन समारोह में 3,000 से अधिक धार्मिक, आध्यात्मिक गुरु, दक्षिणी शैव संप्रदाय के पुजारी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भाजपा शासित राज्यों के कई अन्य मुख्यमंत्री उपस्थित रहे हैं। पीएम ने काशी विश्वनाथ धाम का उद्घाटन करते हुए कहा, काशी विश्वनाथ परिसर हमारी संस्कृति, परंपरा और प्रगति का प्रतिबिंब है। जब आप यहां आते हैं तो केवल आस्था ही नहीं आपको यहां लाती है, यह एक ऐसा स्थान भी है जहां आप अतीत पर गर्व करेंगे और देखेंगे कि कैसे प्राचीन और वर्तमान यहां मिल रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि विश्वनाथ धाम आज ऊर्जा से भरपूर है और इसका महत्व स्पष्ट है। आसपास के खोए हुए कई प्राचीन मंदिरों को फिर से बहाल कर दिया गया है।काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के निर्माण में अपना सहयोग देने वाले मजदूरों के साथ प्रधानमंत्री ने भोजन किया। इससे पहले पीएम ने मजदूरों पर पुष्पवर्षा भी थी और उनके साथ फोटो भी खिचवाई थी।

पीएम ने जनता से मांगे तीन संकल्प

पीएम मोदी ने कहा कि मेरे लिए जनता ही भगवान है। आज मैं अपने भगवान(जनता) से तीन संकल्प मांगता हूं। पहला- स्वस्छता, दूसरा- सृजन और तीसरा- आत्मनिर्भर भारत के लिए निरंतर प्रयास।

काशी वो है जहां सत्य ही संस्कार है

पीएम मोदी ने कहा कि मेरी काशी आगे बढ़ रही है। काशी वो है जहां सत्य ही संस्कार है। काशी शिवमयी है, ज्ञानमयी है। आज पूरा विश्व काशी से जुड़ गया है। ये परिसर(काशी धाम) हमारे संकल्प का साक्षी है।

काशी में तो एक ही सरकार है वो सरकार है बाबा की

पीएम मोदी ने कहा, कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बनारस के लोगों पर शक करते थे। कहते थे कि ये कैसे होगा, वो कैसे होगा। बनारस पर आरोप लगाए जा रहे थे। लेकिन उनको पता नहीं था कि काशी तो अविनाशी है। काशी में तो एक ही सरकार है वो सरकार है बाबा की। पीएम ने कहा कि काशी में महादेव की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता। ये जो कुछ भी हुआ है, वो सब बाबा की दया है। बाबा की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। बाबा के साथ अगर किसी और का योगदान है तो वो है काशी के वासियों का। काशी वासियों में भगवान बसते हैं.... इदं शिवाय इदं नमः।कॉरिडोर के उद्घाटन से पहले पीएम ने गंगा में पूजा-पाठ करते हुए पवित्र डुबकी लगाई और इसके बाद काल भैरव मंदिर में पूजा-अर्चना भी की।काशी विश्वनाथ कॉरिडोर घाटों को प्रतिष्ठित दशाश्वमेध घाट के पास ऐतिहासिक काशी विश्वनाथ धाम से जोड़ेगा। इस भव्य परियोजना को 339 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है। परियोजना के तहत परिसर का क्षेत्रफल 3,000 वर्ग फुट से बढ़ाकर लगभग पांच लाख वर्ग फुट कर दिया गया है। परियोजना के तहत 40 प्राचीन मंदिरों को भी उनकी पूर्व सुंदरता में बहाल कर दिया गया है। भक्तों को कई प्रकार की सुविधाएं प्रदान करने के लिए परिसर में 23 नए भवन भी जोड़े गए हैं।

महंगाई हटाओ रैली में कांग्रेस का हल्ला बोल

राहुल बोले- 2014 से हिंदुत्ववादियों का राज, इन्हें बाहर निकाल हिंदुओं को सत्ता में लाना है

राजस्थान के जयपुर में कांग्रेस ने विशाल रैली का आयोजन कर मंहगाई समेत कई मुद्दों को लेकर केंद्र की मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा। रैली में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा और राहुल गांधी ने भी हिस्सा लिया। इस दौरान राहुल गांधी ने कहा कि यह

हिंदुओं का देश है, हिंदुत्ववादियों का नहीं। उन्होंने आगे कहा कि हिंदू और हिंदुत्ववादी शब्द एक नहीं है, ये दो अलग-अलग शब्द है और इनका मतलब भी अलग है। मैं हिंदू हूं मगर हिंदुत्ववादी नहीं हूं। महात्मा गांधी हिंदू और गोडसे हिंदुत्ववादी। चाहे कुछ भी हो जाए हिंदू सत्य को ढूंढता है।

महंगाई हटाओ रैली में कांग्रेस नेता ने कहा कि ये देश हिंदुओं का देश है हिंदुत्ववादियों का नहीं है और आज इस देश में महंगाई, दर्द, दुख है तो ये काम हिंदुत्ववादियों ने किया है। हिंदुत्ववादियों को किसी भी हालत में सत्ता चाहिए।उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने पूरी जिंदगी सच को ढूंढने बीता दी और अंत में एक हिंदुत्ववादी ने उनकी छाती में तीन गोली मारी। हिंदुत्ववादी अपनी पूरी जिंदगी सत्ता को खोजने में लगा देता है उसको सत्य से कुछ लेना देना नहीं है उसे सिर्फ सत्ता चाहिए और उसके लिए वो कुछ भी कर देगा।

रैली में राहुल ने कहा, आप सभी हिन्दू हैं। हिन्दुत्ववादी सत्ता के भूखे होते हैं। 2014 से हिन्दुत्ववादी सत्ता में हैं, हिन्दू सत्ता से बाहर हैं। हमें इन हिन्दुत्ववादियों को हटाकर हिन्दुओं को सत्ता में लाना है। राहुल गांधी ने कहा कि हमें

डराया नहीं जा सकता, हम मौत से नहीं डरते हैं। हिन्दुत्ववादी को सिर्फ सत्ता चाहिए, सत्य नहीं। उनका रास्ता सत्याग्रह नहीं, सत्ता ग्रह है। हिंदू अपने डर का सामना करता है, वो शिव जी की तरह अपने डर को पी जाता है। मोदी पर निशाना साधते हुए कांग्रेस नेता ने कहा कि चीन ने अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख में हमारी जमीन ली है, मोदी जी कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ। 700 किसान शहीद हुए, मोदी जी कहते हैं कि कुछ नहीं हुआ। बहुत कुछ हुआ है, बहुत लोगों की जान गई है और अब देश को आगे बढ़ना पड़ेगा।

इस दौरान कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार हजारों करोड़ रुपए विज्ञापन में खर्च कर रही है, लेकिन वहीं सरकार किसानों को खाद नहीं दिला पा रही। मैं ऐसे परिवारों से मिल कर आई हूं जिसके मुखिया ने खाद लेने के लिए लाइन में खड़े-खड़े दम तोड़ दिय बता दें कि यह रैली पार्टी के लिए काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस रैली से अगले साल कई राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी के रणनीति बनाने की उम्मीद जताई जा रही है। इसमें राजनीतिक तौर से महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश, गुजरात और पंजाब शामिल हैं, जहां सत्ता को बनाए रखने के लिए पार्टी जूझ रही है।

किसान आंदोलन समाप्त

किसान आंदोलन स्थगित

पिछले 1 साल से चला रहा किसान आंदोलन फिलहाल स्थगित हो गया है। सरकार की ओर से लिखित आश्वासन के बाद किसान अपने गांव की ओर लौटने लगे हैं। इसके साथ ही दिल्ली के तमाम बॉर्डर पर बैठे किसानों ने जगह को खाली कर दिया है। इस सप्ताह चाय पर समीक्षा के लिए हम भी किसानों के बीच पहुंचे। हमारे साथ प्रभासाक्षी के संपादक नीरज कुमार दुबे भी मौजूद थे। घर वापसी को लेकर जहां किसानों में खुशी थी, वहीं इस बात का भी गम था कि वह एक दूसरे से बिछड़ रहे हैं। इस दौरान नीरज कुमार दुबे ने कहा कि कहीं ना कहीं किसान एक बहुत बड़ी खुशी लेकर दिल्ली से लौट रहे हैं। सरकार ने इनकी लगभग सभी मांगों को मान ली है या फिर इन्हें लिखित आश्वासन दिया है। किसानों में इस बात की खुशी है कि उनका संघर्ष रंग लाया और आखिरकार सरकार को झुकना पड़ा। किसानों ने यह खुलकर माना कि सरकार को आज नहीं तो कल हमारी मांग को मानना ही था। ट्रैक्टरों के बड़े-बड़े काफिलों के साथ पिछले साल नवंबर में दिल्ली की सीमाओं पर पहुंचे आंदोलनरत किसानों ने सुबह अपने-अपने गृह राज्यों की तरफ लौटना शुरू कर दिया। साल भर से ज्यादा वक्त तक अपने घरों से दूर डेरा डाले हुए ये किसान अपने साथ जीत की खुशी और सफल प्रदर्शन की यादें लेकर लौट रहे हैं। किसानों ने सिंघू, टिकरी और गाजीपुर सीमाओं पर राजमार्गों पर नाकेबंदी हटा दी और तीन विवादास्पद कृषि कानूनों को निरस्त करने और फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर कानूनी गारंटी के लिए एक समिति गठित करने सहित उनकी अन्य मांगों को पूरा करने के लिए केंद्र के लिखित आश्वासन का जश्न मनाने के लिए एक विजय मार्च निकाला। एक सफल आंदोलन के बाद पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों में किसानों के अपने घरों के लिए रवाना होने के साथ ही भावनाएं उत्साह बनकर उमड़ने लगीं। रंग-बिरंगी रोशनी से सजे ट्रैक्टर जीत के गीत गाते हुए विरोध स्थलों से निकलने लगे

और रंगीन पगड़ियां बांधे बुजुर्ग युवाओं के साथ नृत्य करते नजर आए। पंजाब के मोगा निवासी किसान कुलजीत सिह ओलाख ने घर लौटने को उत्सुक अपने साथी किसानों के साथ सफर शुरू करने से पहले कहा, ÷सिंघू बॉर्डर पिछले एक साल से हमारा घर बन गया था। इस आंदोलन ने हमें (किसानों को) एकजुट किया, क्योंकि हमने विभिन्न जातियों, पंथों और धर्मों के बावजूद काले कृषि कानूनों के खिलाफ एक साथ लड़ाई लड़ी। यह एक ऐतिहासिक क्षण है और आंदोलन का विजयी परिणाम और भी बड़ा है।÷ गाजीपुर सीमा पर एक किसान जीतेंद्र चौधरी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपने घर लौटने के लिए अपनी ट्रैक्टर-ट्रॉली तैयार करने में व्यस्त थे। उन्होंने कहा कि वह सैकड़ों अच्छी यादों के साथ और 'काले' कृषि कानूनों के खिलाफ मिली जीत के साथ घर जा रहे हैं। किसान 11 दिसंबर को 'विजय दिवस' के रूप में मना रहे हैं। तीन कृषि कानूनों को निरस्त करने की मांग को लेकर हजारों किसान पिछले साल 26 नवंबर से राष्ट्रीय राजधानी की सीमाओं पर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। इन कानूनों को निरस्त करने के लिए 29 नवंबर को संसद में एक विधेयक पारित किया गया था। हालांकि, किसानों ने अपना विरोध समाप्त करने से इनकार कर दिया और कहा कि सरकार उनकी अन्य मांगों को पूरा करे जिसमें एमएसपी पर कानूनी गारंटी और उनके खिलाफ पुलिस में दर्ज मामले वापस लेना शामिल है।

ग्वालियर को गार्बेज फ्री सिटी 3 स्टार अवार्ड

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

ग्वालियर स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 में गार्बेज फ्री सिटी 3 स्टार अवार्ड ग्वालियर को मिला है। अवार्ड देश की

राजधानी दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में दिया गया और इसके साथ ही 10 लाख से अधिक की आबादी वाले शहरों में ग्वालियर स्वच्छता रैंक में 15वें स्थान पर रहा। साथ ही सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज में ग्वालियर को गोल्ड मिला है। अवार्ड लेने के लिए नगरनिगम आयुक्त किशोर कन्याल, अपर आयुक्त संजय मेहता एवं स्वच्छता के नोडल अधिकारी श्रीकांत काटे दिल्ली गये थे। निगमायुक्त ने बताया कि निगम के सफाई मित्रों की मेहनत और लगन का परिणाम है कि आज ग्वालियर ने स्वच्छता के क्षेत्र में 4523.52 का स्कोर किया था जिस कारण नगर निगम ग्वालियर ने 10 लाख से अधिक की आबादी वाले शहरों में 15वीं रैंक हासिल की है। निगमायुक्त ने शहरवासियों से अपील करते हुए कहा कि हमें स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 के लिए अभी से जुटना हैं जिसमें आपका महत्वपूर्ण सहयोग हमें चाहिए। कचरा वाहन आने पर गीला व सूखा गचरा अलग-अलग दें साथ ही कचरा सिर्फ डस्टबिन में ही डालें और साथ ही स्वच्छ शहर के लिए दूसरों को भी कचरा खुले में न डालने के लिए प्रेरित करें और इसके साथ ही उन्होने निगम के सफाई मित्रों से कहा कि हमें दुगनी क्षमता के साथ शहर को साफ व स्वच्छ रखने के लिए जुटना है। जिससे स्वच्छ सर्वेक्षण 2022 में हम उच्चतम स्थान पर आ सकें। निगमायुक्त श्री किशोर कन्याल ने बताया कि ग्वालियर नगर निगम को गार्वेज फ्री सिटी का अवार्ड मिला है। उन्होंने कहा कि शहर के नागरिकों व निगम के अधिकारी, कर्मचारी व सफाई मित्रों की मेहनत का परिणाम है कि ग्वालियर सिटी को गार्वेज फ्री सिटी में 3 स्टार अवार्ड से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज में ग्वालियर ने गोल्ड जीता है। यह परिणाम हमारे सफाई मित्रों के लिए ऊर्जा का संचार करने वाला है। सफाई मित्रों द्वारा शर्दी, गर्मी व बरसात में दिन रात शहर को साफ रखने के लिए काम किया उसी का परिणाम है।

निगमायुक्त ने बताया कि निगम के सफाई मित्रों की मेहनत और लगन का परिणाम है कि आज ग्वालियर ने स्वच्छता के क्षेत्र में 4523.52 का स्कोर किया था जिस कारण नगर निगम ग्वालियर ने 10 लाख से अधिक की आबादी वाले शहरों में 15वीं रैंक हासिल की है। निगमायुक्त श्री कन्याल ने शहर वासियों से अपील करते हुए कहा कि हमें स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 के लिए अभी से जुटना हैं जिसमें आपका महत्वपूर्ण सहयोग हमें चाहिए। कचरा वाहन आने पर गीला व सूखा गचरा अलग-

स्वच्छता के लिये शहर को मिले अवार्ड सौंपे

स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 में ग्वालियर शहर को गार्वेज फ्री श्री स्टार अवार्ड और सफाई मित्र सुरक्षा चैलेंज में गोल्ड मैडल मिला है। प्रभारी मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट एवं अन्य जनप्रतिनिधियो को बैठक में नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल ने यह अवार्ड सौंपे।

अलग दें साथ ही कचरा सिर्फ डस्टबिन में ही डालें। साथ ही स्वच्छ शहर के लिए दूसरों को भी कचरा खुले में न डालने के लिए प्रेरित करें। इसके साथ ही उन्होंने निगम के सफाई मित्रों से कहा कि हमें दुगनी क्षमता के साथ शहर को साफ व स्वच्छ रखने के लिए जुटना है। जिससे स्वच्छ सर्वेक्षण 2022 में हम उच्चतम स्थान पर आ सकें।

जांबाज कर्तव्यनिष्ठ आईपीएस अफसर हैं अमित सांघी

ग्वालियर पुलिस अधीक्षक आईपीएस अमित सांघी कर्तव्यनिष्ठ जांबाज ईमानदार पुलिस अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं जब से उन्होंने ग्वालियर की कमान संभाली है तब से ग्वालियर में कई ताबड़तोड़ अपराधों की घटनाओं को ट्रेस किया एवं अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने का काम उनके द्वारा किए जा रहा है

● **टीम गूंज न्यूज नेटवर्क**

पुलिस कप्तान अमित सांघी एक सुलझे हुए पुलिस कप्तान के रूप में चर्चित है। मध्य प्रदेश के तमाम जिलों में अपनी सफल सेवाऐं देने वाले श्री सांघी एक मिलनसार

और अपराधों के निराकरण में माहिर पुलिस अफसर माने जाते है। श्री सांघी अपराधों के नियंत्रण में पुलिस की रणनीति बनाने वाले एक सफल पुलिस अधिकारी के रूप में भी जाने जाते है। नियमो का सख्ती से पालन करने और करवाने वाले आईपीएस अमित सांघी के काम करने का यही तरीका है। उनकी एक और खासियत ये है की वो टीमवर्क पर यकीन करते है। अपने अधीनस्तों को अच्छे काम पुरस्कृत करने मैं वो पीछे नहीं रहते है।

जनता की तकलीफ को वो बखूबी समझते हैं, इसलिए ही आम आदमी अपनी समस्या के निदान के लिए उनसे बिना संकोच मिल लेता है. अपनी दो दशक की पुलिस सेवा में उन्होंने ज्यादातर वक्त मैदान मैं ही गुजरा है. इसलिए भी शायद लोगों की परेशानी वो आसानी से समझ कर उसका निदान करने में पीछे नहीं हटते उनकी पोस्टिंग के दौरान भिंड, सागर, बालाघाट, जबलपुर, इंदौर आदि जगह पर उन्हें काम करने का मौका मिला है। बहुत कम लोगों को पता होगा की अगर अमित सांघी जी पुलिस सेवा में नहीं होते तो शायद वो पत्रकार होते ,क्यों की मूल रूप से जबलपुर के श्री सांघी ने जर्नलिज्म में भी डिग्री हासिल की है. आप के परिवार मैं आप के ताऊजी रोशन लाल सांघी भी जाने-माने आईपीएस अफसर रहे है।

कोरोना के नए वेंरिएंट ओमीक्रॉन को देखते हुए भी ग्वालियर पुलिस पूरी तरह से सतर्क है और लोगों को मास्क पहनने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है एवं चालानी कार्रवाई भी की जा रही है जिससे लोग नियमों का पालन करें और मास्क पहनें।

वहीं दूसरी ओर ग्वालियर में महिला सुरक्षा के लिए उनके अधिकारों के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर भी ग्वालियर पुलिस द्वारा समय-समय पर अभियान चलाकर महिलाओं को जागरूक करने का काम किया जा रहा है। जिससे महिलाओं के प्रति अपराधों पर अंकुश लगे ग्वालियर में अब अपराधी ज्यादा दिनो तक पुलिस की पकड़ के बाहर नहीं रह सकता है और शीघ्र से शीघ्र गिरफ्तारी हो सके ,इसके लिए हमने थाना प्रभारीयों को पुलिस अधीखक द्वारा निर्देशित कर दिया है तथा क्राइम ब्रांच ग्वालियर में भी एक कार्य योजना बनाई है जिसके सार्थक परिणाम मिल रहे हैं साथ ही शहर के ट्रैफिक की बात करें तो अभी हाल में ही में कई रूटों का वन वे करके जाम से मुक्ति दिलाने का काम किया गया।

क्राइम ब्रांच की साइबर सेल ने 30 दिन में अलग-अलग स्थानों से गायब हुए 31 मोबाइल ट्रेस किए हैं। बरामद मोबाइलों की कीमत पुलिस ने पांच लाख 34 हजार रुपये बताई है। एसपी अमित सांघी ने बरामद मोबाइलों को शिकायतकर्ताओं को बुलाकर वापस किए।

पुलिस अधीक्षक ग्वालियर अमित सांघी, द्वारा एक और नवीन पहल करते हुए पुलिस विभाग से ड्यूटी के दौरान दिवंगत हुए पुलिस कर्मियों के बच्चों का सम्मान किया गया। पुलिस कन्ट्रोल रूम ग्वालियर सभागार में आयोजित कार्यक्रम में दिवंगत पुलिस कर्मियों के अनुकंपानियुक्ति प्राप्त बालआरक्षक तथा उनके परिजन उपस्थित रहे।

स्वच्छता में नंबर 1 बनेगा अपना ग्वालियर

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

स्वच्छता में पिछले चार साल से देश में सिरमौर बने इंदौर शहर ने एक बार फिर सबसे स्वच्छ शहर का अवार्ड अपने नाम कर लिया है। इंदौर पांचवी बार स्वच्छता सर्वेक्षण में नंबर वन रहा। वहीं ग्वालियर को अबकी बार स्वच्छता में अव्वल नंबर पर लाने के लिए निगम ने अभी से कमर कस ली है। ग्वालियर नगर निगम पुरानी गलतियों से सबक लेकर स्वच्छता की ओर ध्यान देकर शहर को स्वच्छता के पायदान पर आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है और इस कार्य में सभी शहरवासियों को भी आगे बढ़कर साथ देना है तब ही हम नंबर 1 बनेंगे।

कृति सिंह की कलम से

स्वच्छता रैंकिंग-2022 के लिए 90 दिन का रोडमैप ग्वालियर को अव्वल करके दिखाएगा। ग्वालियर शहरवासी यह प्रण लें कि अबकी बार अपने ग्वालियर को स्वच्छता में नंबर 1 बनाकर ही दम लेंगे। स्वच्छता में ग्वालियर को पहले पायदान पर पहुंचाने के लिए नगर निगम के साथ मिलकर सभी शहरवासियों, सामाजिक संस्थाओं, समाजसेवियों, को एक साथ आगे बढ़कर स्वच्छता की अलख जगाने होगी और हमें खुद से ही शुरूआत करनी होगी कि हम कैसे ग्वालियर को स्वच्छ रखें। सड़कों पर गंदगी ना करें, कचरा नियत स्थान पर ही डालें, नगर निगम तो अपना काम कर ही रहा है लेकिन शहरवासियों को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी तब ही हमारा ग्वालियर स्वच्छता में नंबर 1 बनेगा। स्वच्छता रैं0कग में दो पायदान पिछड़ने के बाद अब ग्वालियर ने ठान लिया है किस्वच्छता में ग्वालियर जैसा कोई नहीं थीम पर काम होगा।

निगमायुक्त किशोर कान्याल ने शहरवासियों से अपील करते हुए कहा कि हमें स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 के लिए अभी से जुटना है जिसमें आपका महत्वपूर्ण सहयोग हमें चाहिए। कचरा वाहन आने पर गीला व सूखा गचरा अलग-अलग दें साथ ही कचरा सिर्फ डस्टबिन में ही डालें और साथ ही स्वच्छ शहर के लिए दूसरों को भी कचरा खुले में न डालने के लिए प्रेरित करें और इसके साथ ही उन्होंने निगम के सफाई मित्रों से कहा कि हमें दुगनी क्षमता के साथ शहर को साफ व स्वच्छ रखने के लिए जुटना है। जिससे स्वच्छ सर्वेक्षण 2022 में हम उच्चतम स्थान पर आ सकें। स्वच्छता में ग्वालियर शहर को अव्वल दर्जा दिलाने पुख्ता रणनीति बनाएँ स्वच्छता में ग्वालियर को

निगम कमिश्नर किशोर कान्याल ने स्वच्छता अभियान में स्वच्छता का संदेश दिया एवं शहर में स्वच्छता अभियान का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को दिशा निर्देश देते हुए लोगों को स्वच्छता में सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि कचरा सिर्फ कचरा वाहन में डालें तथा गीला व सूखा कचरा अलग अलग दें। स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 में हमे अपने शहर को टॉप पर लाना है।

अव्वल शहर बनाने के लिये पुख्ता रणनीति बनाने की जरूरत है साथ ही जनप्रतिनिधिगण, समाजसेवी, स्वयंसेवी, विद्यार्थी व व्यवसाइयों सहित समाज के सभी लोगों को भागीदार बनाकर शहर में स्वच्छता को जन आंदोलन का रूप दें तब ही स्वच्छता में हम अग्रणी होंगी। वहीं पिछले दिनों ग्वालियर के प्रभारी मंत्री तुलसी सिलावट ने यह निर्देश दिए और कहा कि स्वच्छता में देश भर में प्रथम स्थान पर आए इंदौर शहर में लागू की गई सफाई व्यवस्था की खूबियों को समझने के लिये जल्द ही इंदौर व ग्वालियर के अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक आयोजित करने के लिये भी कहा। यह बैठक जल्द ही इंदौर में होगी। प्रभारी मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने बैठक में जोर देकर कहा कि अमृत के तहत शहर में डाली गई पेयजल व सीवर लाइनों से खराब हुई सड़कों की मरम्मत युद्ध स्तर पर कराएँ। साथ ही जहां जरूरी हो वहां नई सड़कें भी बनाई जाएं। उन्होंने कहा नई सड़कों के निर्माण लिये शासन स्तर से धनराशि दिलाई जायेगी। नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कान्याल ने बैठक में जानकारी दी कि शहर में सड़कों की मरम्मत का कार्य युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। शेष सड़कों की मरम्मत का काम जल्द पूरा होगा। साथ ही शहर को 94 किलोमीटर सड़कें बनाने के प्रस्ताव शासन को भेजे गए हैं। उन्होंने बताया कि अमृत की पाइप लाइन डालने की वजह से शहर की जो सड़कें बहुत ज्यादा क्षतिग्रस्त हुई हैं, उनके स्थान पर नई सड़कें बनाई जायेंगीं।

गूंज न्यूज नेटवर्क भी शहरवासियों से अपील करता है कि ग्वालियर को स्वच्छता में नंबर 1 बनाने में ग्वालियर नगर निगम का सहयोग करें और अपनी जिम्मेदारी निभाएं शहर को क्लीन रखें।

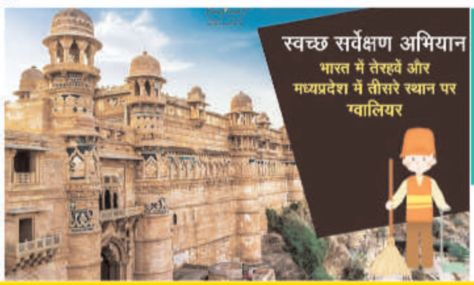

आमजन के सहयोग से क्राइम को करेंगे कंट्रोल: राजेश दंडौतिया

GOONJ INTERVIEW

अति. पुलिस अधीक्षक शहर राजेश दण्डोतिया तेज तर्रार कर्तव्यनिष्ट ईमानदार पुलिस अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं। वह इससे पहले जहां भी पदस्थ रहे उन्होंने अपराधियों और अपराधों पर पूर्णत: अंकुश लगाने का काम किया है। ग्वालियर पदस्थ होने के बाद वह लगातार क्राइम केसेस को सोल्वड करके अपराध को कम करने का काम कर रहे हैं। अभी हाल ही में उन्होंने कई बड़े चर्चित हत्याकांडों का खुलासा महज कुछ ही दिन या फिर घंटों में करके आरोपियों को सलाखों के पीछे पहुंचाया है। उनकी यही फास्ट पुलिसिंग की बदौलत वह काफी चर्चित पुलिस अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं। उनके हाथ में जो भी केस आता है वह उसे तुरन्त की अपनी सूझबूझ और मुखबिर तंत्र की मदद से सोल्व्ड करते हैं। अभी पिछले दिनों आईजी अविनाश शर्मा ने एएसपी राजेश दंडोतिया को शबाशी दी थी और उनकी खूब तारीफ की थी और 30 हजार रूपये का कैश रिवॉर्ड भी दिया गया था। आईजी ने कहा था कि राजेश दण्डोतिया बड़े ही एक्टिव पुलिस ऑफिसर हैं। ग्वालियर से पहले से ही परिचित भी रहे हैं वह पूराने माहिर खिलाड़ी है, ग्वालियर की नस-नस से वाकिफ हैं। क्योंकि पहले भी यहां सीएसपी रह चुके है। मुखबिर तंत्र भी काफी मजबूत है।

तेज तर्रार एएसपी राजेश दण्डोतिया से गूंज की विशेष बातचीत

● **टीम गूंज न्यूज नेटवर्क**

आप हमारे पाठकों को अपने बारे में कुछ बताइए ।

अति. पुलिस अधीक्षक शहर राजेश दण्डोतिया ने बताया कि मैं मूल रूप से मध्य प्रदेश के चंबल मुरैना का रहने वाला हूँ मेरे पिताजी एक कॉन्ट्रैक्टर थे और मेरी माँ भी मुरैना से ही हैं, मेरी स्कूलिंग मुरैना और ग्वालियर से हुई । जीवाजी विश्वविद्यालय से मैंने अपनी ग्रैजुऐशन की डिग्री कम्प्लीट की है। एमपीपीएससी की तैयारी की और 16 वीं रैंक आई मेरी और 2002 में मैंने पुलिस विभाग में शुरूआत की और वर्तमान में मैं ग्वालियर का अडिशनल एसपी के रूप में पदस्थ हूँ। 2017 में शादी हुई और मेरी वाइफ़ भी डीएसपी हैं जो जबलपुर में पोस्टेड हैं।

ड्यूटी के दौरान आपको किन-किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है ?

हमेशा पुलिस में इस तरह की परिस्थितियां बनती रहती हैं, कहीं वारदात होती है जब भिण्ड में पदस्थ था तब किड्नैपिंग दिन में होती थी तो वो भी अपने आप में एक चुनौती थी कि कैसे पर्दाफ़ाश करते और चोरों को पकड़ा जाए और कुछ ऐसे मर्डर होते हैं जैसे ग्वालियर में रामखिलाड़ी हत्याकाण्ड हुआ था वो भी एक चैलेंज था ।

क्या आपको बचपन से ही पुलिस फ़ोर्स में ही जाना था ?

जब मैं स्कूली छात्र था तो मुझे एक क्रिकेटर बनना था और फिर पढ़ाई पर भी काफ़ी फ़ोकस रखता था फिर बाद में मैंने डॉ. बनने का सोचा लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं पुलिस में जाऊँगा।

भविष्य में आगे आपकी क्या योजनाएं हैं ?

दायित्व मिले उसका अच्छी तरह से निर्वहन करना और जो टारगेट्स मिले हैं उनको अर्चीव करना। जो लोग समस्याएँ लेकर आए हैं लीगल पहलू दिमाग़ में रखते हुए परेशनियाँ कैसे सुलझा सकें और आमजनता से संबंध और मिलनसार हो सके। जिससे क्राइम को कम करने में भी आसानी होगी लोग सूचनाएं देंगे जो केस सॉल्व करने में आसानी होगी।

युवाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

ग्वालियर के युवाओं को यह संदेश देना चाहूंगा मैं अपनी पढ़ाई पूरी करे और फ़ोकस करें क्यूँकि जो क्राइम की घटनाएँ हो रही हैं वो 21-24 साल के लड़के ज़्यादा कर रहे हैं। इसीलिए युवा अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दें। अपना टारगेट वो अर्चीव कर लेंगे तो इसे तरह की घटना नहीं होंगी और क्राइम भी कम होंगे। । ग्वालियर में साइबर क्राइम काफ़ी बढ़ गए है इसलिए किसी भी संदेहजनक मेसिज या लिंक पर क्लिक ना करें

आपके आदर्श कौन हैं ?

जहां तक पुलिस सिस्टम की बात है सांई मनोहर सर और फ़ैमिली में मैं अपने फ़ादर को आदर्श मानता हूँ।

ग्वालियर में पुलिस टीम कितनी सपोर्टिंग है ?

यहाँ बेस्कली टीम बहुत अच्छी है, क्राइम ब्रांच में भी काफ़ी अच्छे लोग शामिल हैं। एसपी और आईजी साहब का काफ़ी कुशल मार्गदर्शन मिला है।

फुल एक्शन में ग्वालियर पुलिस अपराधियों में हड़कंप

दिनदहाड़े जिम संचालक की सनसनीखेज हत्या की वारदात का हुआ पर्दाफाश

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

पुलिस अधीक्षक अमित सांघी के नेतृत्व में ग्वालियर पुलिस फुल एक्शन में काम कर रही है जिससे ग्वालियर में अपराधियों में हड़कंप एवं खौफ का माहौल है । थाना बहोडापुर क्षेत्रान्तर्गत आनन्दनगर निवासी जिम संचालक पप्पू राय की अज्ञात बदमाशों द्वारा गोलीमारकर की गई हत्या की वारदात को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक ग्वालियर अमितसांघी,अति0 पुलिस अधीक्षक अपराध राजेश डण्डोतिया एवं अति0 पुलिस अधीक्षक शहर मध्य हितिका वासल, को थाना बल एवं क्राइम ब्रांच की टीम बनाकर उक्त हत्याकाण्ड को अंजाम देने वाले बदमाशों की शीघ्र गिरतारी हेतुमुखबिरतंत्र विकसित करने के लिये निर्देशित किया था। प्रेसवार्ता में मीडिया को संबोधित करते हुए आईजी अविनाश शर्मा ने बताया कि चर्चित प्रॉपटी डीलर व जिम संचालक पप्पू राय की हत्या का खुलासा हो गया है। कांग्रेस नेता के भाई ने प्रॉपर्टी विवाद में बेइज्जती का बदला लेने के लिये 20 लाख रूपये में सुपारी दी थी। चार दिन तक उसकी रैकी करने के बाद तिघरा कुलैथ के एक बदमाश ने उसकी हत्या की थी। सुपारी पंकज राय ने दी थी। हत्याकाण्ड का पर्दाफाश करने में थाना प्रभारी क्राइम ब्रांच टीआई दामोदर गुप्ता, एसआई सुरजीत सिंह परमार एएसआई राजीव सोलंकी, हैड कान्स्टेबल घनश्याम जाट, जितेन्द तोमर, भगवती सोलंकी, रामबाबू, चन्द्रवीर आरक्षक नवीन पाराशर, आशीष शर्मा, रूपेश शर्मा, हरिओम व्यास, योगेन्द तोमर, अरूण पवैया एवं थानाबहोडापुर से थानाप्रभारी बहोडापुर टीआई अमरसिह सिकरवार, एएसआई जानकीनंदन, आरक्षक तारा सिंह, विजय गुर्जर, धर्मेन्द्र तोमर, हिम्मत, अवनेन्द्र सिंह आदि टीम ने हत्याकांड का खुलासा करने कड़ी मशक्कत की।

हत्याकांडः 5 घण्टे में हत्यारों को किया गिरफ्तार

अभी हाल ही में फरियादी जगदीश वाजपेयी निवासी कोटेश्वर कॉलोनी ग्वालियर ने थाना ग्वालियर में अपने भांजे भरत उर्फ अमन दीक्षित की हत्या होने की रिपोर्ट की थी। उपरोक्त रिपोर्ट पर से थाना ग्वालियर में धारा 302,34 ताहि के तहत हत्या का प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया गया। पुलिस अधीक्षक अमित सांघी द्वारा उक्त हत्या की घटना को गंभीरता से लेते हुए अति. पुलिस अधीक्षक शहर राजेश दण्डोतिया को पुलिस की टीम बनाकर हत्या के आरोपियों को तत्काल गिरफ्तार करने हेतु निर्देशित किया। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के निर्देशों के परिपालन में नगर पुलिस अधीक्षक ग्वालियर नागेन्द्र सिंह सिकरवार के कुशल मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी ग्वालियर आलोक सिंह परिहार के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम द्वारा उक्त हत्या के प्रकरण के आरोपियों की तलाश हेतु लगाया गया। उक्त टीम द्वारा मुखबिर की सूचना एवं विवेचना में आये तकनीकी साक्ष्यों के विश्लेषण के आधार पर 5 घण्टे के अन्दर ही उक्त हत्या के आरोपियों की तस्दीक एवं पहचान कर कड़ी मेहनत के बाद उनको अटल गेट पुरानी छावनी से धरदबोचा।

वहीं दूसरी ओर अवैध हथियारों का व्यापार करने वालों को भी ग्वालियर पुलिस ने अभी हाल ही में धर दबोचा है जिनसे अवैध हथियार तस्करों के खिलाफ पुलिस की ताबड़तोड़ कार्यवाही करते हुये दो 32 बोर पिस्टल, पांच 315 बोर कट्टा किया गिरफ्तार किया गया था। अवैध हथियार तस्करों पर ग्वालियर पुलिस की ताबड़तोड़ कार्रवाई निरंतर जारी है।

ड्रोन तकनीक के इस्तेमाल में मप्र को अग्रणी बनायेंगे

केन्द्रीय मंत्री तोमर व सिंधिया सहित राज्य सरकार के मंत्रिगण भी हुए शामिल

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि विकास एवं कल्याण के क्षेत्र में ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल कर मध्यप्रदेश को अग्रणी राज्य बनायेंगे। ड्रोन एक ऐसी क्रांतिकारी तकनीक है जिसका उपयोग जनकल्याण एवं सुशासन में किया जा सकता है। मुख्यमंत्री श्री चौहान शनिवार को ग्वालियर में आयोजित हुए ÷ड्रोन मेला÷ में मौजूद युवाओं और किसानों को संबोधित कर रहे थे। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी कार्यक्रम में मौजूद थे। कार्यक्रम में पहुँचने के बाद मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान सहित अन्य सभी अतिथियों ने सीडीएस स्व. विपिन रावत के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

ग्वालियर के माधव प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (एमआईटीएस) में केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की पहल पर प्रदेश के पहले ड्रोन मेले का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 20 कंपनियों ने अपने ड्रोन का प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मेले ग्वालियर की प्राचीन परंपरा हैं, पर ग्वालियर में आज ड्रोन मेले के रूप में अद्भुत मेला लगा है। यह ड्रोन मेला एक मेला भर नहीं, जनता की जिंदगी बदलने का अभियान है। उन्होंने कहा कि ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल खेतों में उर्वरक तथा कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करने में किया जा सकता है। इससे किसान हानिकारक रसायनों के दुष्प्रभाव से बच सकते हैं। यह तकनीक खर्चीली भी कम है। ड्रोन तकनीक से 25 प्रतिशत तक खाद की बचत होती है।

केन्द्रीय किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि उच्च तकनीक व मजबूत अर्थव्यवस्था के साथ श्रेष्ठ भारत का निर्माण हो इसी सोच के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार काम कर रही है। इसी कड़ी में ड्रोन तकनीक को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने ड्रोन तकनीक किसानों के लिये क्रांतिकारी साबित हो रही है। उन्होंने पिछली साल टिड्डी दल के आक्रमण का हवाला देते हुए कहा कि ड्रोन तकनीक से इस पर सफलतापूर्वक काबू पाया गया। इसी तरह स्वामित्व योजना भी इसी तकनीक की बदौलत सफल रही है। कृषि के क्षेत्र में मानव सुरक्षा, उर्वरक बचत व कृषि उत्पादन बढ़ाने में ड्रोन तकनीक विशेष लाभकारी रही है।

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि ड्रोन मेला ग्वालियर के लिये एक ऐतिहासिक दिन है। इसके माध्यम से हम नई क्रांति के साक्षी बने हैं। उन्होंने कहा आगे आने वाले समय में ड्रोन तकनीक से विश्व की अर्थव्यवस्था व जीवन में बड़े बदलाव आयेंगे। श्री सिंधिया ने कहा खुशी की बात है कि ड्रोन तकनीक के इस्तेमाल में मध्यप्रदेश देश का अव्वल राज्य है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सोच है कि ऐसी तकनीक हो जो जन-जन की जिंदगी में बदलाव लाए। प्रधानमंत्री की इसी मंशा के अनुरूप ड्रोन तकनीक को बढ़ावा दिया जा रहा है। श्री सिंधिया ने कहा कि रक्षा, कृषि, स्वास्थ्य हर क्षेत्र में ड्रोन तकनीक क्रांतिकारी साबित हो रही है। यह तकनीक गरीबी को समृद्धि में तब्दील करने का साधन बनी है। साथ ही युवाओं के लिये विकास के नए अवसर लेकर आई है। श्री सिंधिया ने कहा कि आगे आने वाले समय में ड्रोन तकनीक से 3 लाख युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे।

केआरजी महाविद्यालय की छात्राओं को सिंधिया ने दिया आत्मविश्वास का मंत्र

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने शासकीय कमलाराजा कन्या स्वशासी महाविद्यालय की छात्राओं से संवाद किया और आत्मविश्वास हर स्थिति में बनाए रखने का गुरू मंत्र दिया। इस मौके पर प्रदेश के जल संसाधन मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, पूर्व विधायक श्री रमेश अग्रवाल, केआरजी कॉलेज के प्राचार्य श्री एम एल कौशल सहित जनप्रतिनिधि, प्राध्यापकगण और महाविद्यालय की छात्रायें उपस्थित थीं।

केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने महाविद्यालय में वैश्वीकरण के दौरान में ग्वालियर में अवसर और चुनौतियां विषय पर छात्राओं से संवाद किया। उन्होंने छात्राओं से अभिभावक की तरह संवाद किया। छात्राओं ने भी खुलकर संवाद किए। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन के संस्मरण सुनाकर विद्यार्थियों को दिशा निर्धारित कर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया। श्री सिंधिया ने कहा कि जिंदगी में चुनौतियों को अपनाएँ और आत्मविश्वास को कम न होने दें, सफलतायें अवश्य मिलेंगीं।

केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर का महत्व हमेशा रहा है और रहेगा। ग्वालियर रियासत के समय भी ग्वालियर की पहचान न केवल देश में बल्कि विश्व भर में थी। यहां की ऐतिहासिक धरोहरों के साथ ही संगीत और कला के क्षेत्र में भी अपनी अलग पहचान है। उन्होंने यह भी कहा कि ग्वालियर की पहचान देश और विदेश में बनी रहे, इसके लिये हम सबको विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है।

केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने कहा कि ग्वालियर की पहचान विश्व स्तर पर बने, इसके लिये हमें शिक्षा, अधोसंरचना, कृषि और डेयरी विकास, फूड प्रोसेसिंग, सोलर एनर्जी, कला और शिल्प, पॉटरीज के विकास के क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि ग्वालियर में शीघ्र ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर का हवाई अड्डा बनकर तैयार होगा। इसके साथ ही ग्वालियर का रेलवे स्टेशन भी आधुनिक बनने जा रहा है। खेल के क्षेत्र में भी एक नया स्टेडियम शीघ्र ही हमको मिलेगा। जिस पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मैच भी हो सकेंगे।

केन्द्रीय मंत्री श्री सिंधिया ने कहा कि यातायात प्रबंधन के लिये भी स्वर्ण रेखा पर 15 किलोमीटर एक रिंग रोड़ का निर्माण कराया जायेगा। केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने स्वच्छता के महत्व को बताते हुए कहा कि हमारा शहर स्वच्छ और सुंदर हो, इसके लिये शहर के हर नागरिक को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना होगी। न हम

कचरा फैलाएँ और न फैलाने दें। इसके लिये हमको एकजुट होकर प्रयास करने की आवश्यकता है। शहर का हर नागरिक जब स्वच्छता दूत बनेगा तभी हमारा शहर स्वच्छता में अव्वल बन सकेगा। केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कार्यक्रम के अंत में सभी छात्राओं सहित उपस्थित प्राध्यापकों और अतिथियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि हम सब प्रण करें कि हम अपने शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे।

स्वच्छता के प्रति आमजन में हो ललक, तभी हमारा शहर स्वच्छता में होगा अव्वल

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

ग्वालियर। नागरिकों की भागीदारी स्वच्छता के लिये जरूरी' जीवाजी यूनिवर्सिटी के अटल सभागार आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में ग्वालियर सांसद श्री

विवेक नारायण शेजवलकर ने सभागार में उपस्थित शहर के नागरिकों में उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि हम सबने ठाना है ग्वालियर को स्वच्छता में नम्बर एक स्थान पर लाना है। इस अवसर पर नगर निगम प्रशासक व संभागीय आयुक्त श्री आशष सक्सैना व ग्वालियर कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह, पूर्व निगमायुक्त श्री विनोद शर्मा के साथ ही जनप्रतिनिधिगण, प्रबुद्धजन, वार्ड क्राइसिस मैनेजमेंट समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य, जिला प्रशासन, नगर निगम, आमजन, सामाजिक संस्थायें उपस्थित रहे।

सभी को सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक करना होगा: शेजवलकर

सांसद श्री शेजवलकर ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान देश का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है देश के नागरिकों को चाहे गांव के हों या शहरों के, उन्हें सफाई के प्रति, उनके सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक करना होगा। क्योंकि जब तक वे जागरूक नहीं होंगे हमारे निगम के कर्मचारी भले ही सड़कों पर झाडू लगाकर और कूड़ा उठाकर उसे साफ करते रहें, लेकिन हम नागरिकों के रूप में यहाँ-वहाँ कचरा डालकर उन्हें गंदा करते ही रहेंगे। यह अभियान उस दिन अपने आप सफल हो जाएगा जिस दिन इस देश का हर नागरिक चॉकलेट या चिप्स खाकर कचरा फेंकने के लिए डस्टबिन ढूँढेगा, भले ही उसे आधा किमी चलना ही क्यों न पड़े और यह सब किसी जुर्माने के डर से नहीं, बल्कि देश को स्वच्छ रखने में अपना योगदान देने के लिए। स्वच्छता के प्रति आमजन में हो ललक दिखनी चाहिए।

हम अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझें: सिकरवार

ग्वालियर पूर्व विधायक श्री सतीश सिकरवार ने इस अवसर पर सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई। साथ ही कहा कि हम अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझें तो हम अपने ग्वालियर को स्वच्छता में अव्वल ला सकते हैं। शहर का प्रत्येक नागरिक शहर को अपना घर समझे तभी हमारा शहर स्वच्छ हो सकता है। नगर निगम आयुक्त श्री किशोर कन्याल ने निगम द्वारा स्वच्छता सर्वेक्षण 2022 की तैयारियों को लेकर स्वच्छता के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों को प्रजेंटेशन के माध्यम से सभी को अवगत कराया कि उन्होंने स्वच्छता के लिए क्या-क्या तैयारियां की हैं, नगर निगम क्या करने जा रहा है, नगर निगम आपसे क्या अपेक्षा रखता है तथा अच्छी रैक आने पर क्या फायदा होगा आदि बिंदुओ पर प्रजेंटेशन दिया। उन्होंने बताया कि केदारपुर लैंडफिल साइड को चालू कर लिया गया है तथा शहर में 7 कचरा ट्रांसफर स्टेशन में से 5 चालू हो चुके हैं एवं दो को एक सप्ताह में चालू कर लिया जाएगा। डोर टू डोर कचरा संग्रहण 100 प्रतिशत किया जा रहा है। इसके साथ ही स्वच्छता के लिए जरूरी नये वाहन खरीदें हैं, जिसमें 5 वाटर कैनन मशीन में से 3 आ चुकी हैं। डेरियों से गोबर संग्रहण किया जा रहा है।

समाज के सभी वर्ग समनव्य के साथ स्वच्छता का कार्य करें: प्रवीण पाठक

ग्वालियर दक्षिण विधानसभा के विधायक श्री प्रवीण पाठक ने इस अवसर पर कहा कि नगर निगम ने स्वच्छता के लिए जो पहल की है वह सराहनीय है। समाज के सभी वर्ग समनव्य के साथ स्वच्छता का कार्य करें, तो हम स्वच्छता में अव्वल आ सकते हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि स्वच्छता की जिम्मेदारी हम सबकी है इसलिए दक्षिण विधानसभा को शहर में सबसे साफ व स्वच्छ बनाने के लिए विधानसभा के प्रत्येक वार्ड में सात दिवस का स्वच्छता अभियान चलाउंगा।

आमजन को करेंगे जागरूक: कन्याल

निगम आयुक्त श्री कन्याल ने बताया कि आमजन को जागरूक करने के लिए शहर में हर घर स्वच्छता के स्टीकर लगाये जा रहे हैं। साथ ही स्वच्छता की शिकायत के लिए टोल फ्री नम्बर जारी किया गया है। इसके साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से शहर के नागरिकों को जोडा जा रहा है। जहां वे अपनी समस्या आसानी से बता सकते हैं। इसके साथ ही आने वाले समय में सभी अधिकारियों को वायरलेस सेट उपलब्ध कराया जाएगा जिससे कार्य में तेजी आए।

लोकतांत्रिक मूल्यों की जीवंतता के लिये सदैव प्रयासरत रहे प्रणब दा

देश के पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी का जन्म 11 दिसंबर 1935 में पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में हुआ था। कामदा किंकर मुखर्जी और राजलक्ष्मी मुखर्जी के घर जन्मे प्रणव का विवाह बाइस वर्ष की आयु में 13 जुलाई 1957 को शुभ्रा मुखर्जी के साथ हुआ था। उनके दो बेटे और एक बेटी- कुल तीन बच्चे हैं। पढ़ना, बागवानी करना और संगीत सुनना- उनके व्यक्तिगत शौक भी हैं। उन्होंने शुरुआती पढ़ाई बीरभूम में की और बाद में राजनीति शास्त्र और इतिहास विषय में एमए किया। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से एलएलबी की डिग्री भी हासिल की।

वे 1969 से 5 बार राज्यसभा के लिए चुने गए। बाद में उन्होंने चुनावी राजनीति में भी कदम रखा और 2004 से लगातार 2 बार लोकसभा के लिए चुने गए। उनके राजनीतिक सफर की शुरुआत साल 1969 में हुई, जब भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की मदद से उन्होंने सन् 1969 में राजनीति में प्रवेश किया, जब वे कांग्रेस के टिकट पर राज्यसभा के लिए चुने गए। सन् 1973 में वे केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल कर लिए गए और उन्हें औद्योगिक विकास विभाग में उपमंत्री की जिम्मेदारी दी गई। प्रणब दा ने अपनी आत्मकथा लिखा है कि वे इंदिरा गांधी के बेहद करीब थे और जब आपातकाल के बाद कांग्रेस की हार हुई, तब वे इंदिरा गांधी के साथ उनके सबसे विश्वस्त सहयोगी बनकर उभरे।

प्रणब दा के राजनीतिक जीवन की अनेक विशेषताएं एवं विलक्षणताएं रही हैं। कानून, सरकारी कामकाज की प्रक्रियाओं और संविधान की बारीकियों की बेहतरीन समझ रखने वाले प्रणब दा 2014 के बाद नई भाजपा सरकार से अच्छे संबंध बनाने में सफल रहे। देश की राजनीतिक परिस्थितियों, देश की घटनाओं से वे अपने आपको अवगत रखते थे। प्रधानमंत्री की विशेष पहल पर उन्होंने शिक्षक दिवस पर राष्ट्रपति भवन परिसर में बने स्कूल में छात्रों को पढ़ाया भी। इन्होंने राष्ट्रपति भवन में एक संग्रहालय का भी निर्माण करवाया, जहां आम लोग अपनी इस विरासत को देख सकते हैं।

राष्ट्रपति के रूप में प्रणब मुखर्जी को विद्वता और शालीन व्यक्तित्व के लिए याद किया जाता है। उन्होंने अपने कार्यकाल में लीक से हटकर अनूठे एवं अविस्मरणीय फैसले लिए। राष्ट्रपति पद के साथ औपचारिक तौर पर लगाए जाने वाले 'महामहिम' के उद्बोधन को उन्होंने खत्म करने का निर्णय लिया। रायसीना की पहाड़ी पर बने राष्ट्रपति भवन में अब तक कई राष्ट्रपतियों ने अपनी छाप छोड़ी है। उनमें राष्ट्रपति के रूप में प्रणब दा का कार्यकाल ऐतिहासिक, यादगार, गैरविवादास्पद और सरकार से बिना किसी टकराव का रहा। आमतौर पर राष्ट्रपति को भेजी गई दया याचिकाएं लंबे समय तक लंबित रहती हैं लेकिन प्रणब मुखर्जी कई आतंकवादियों की फांसी की सजा पर तुरंत फैसले लेने के लिए याद किए जाएंगे।

मुंबई हमले के दोषी अजमल कसाब और संसद हमले के दोषी अफजल गुरु की फांसी की सजा पर मुहर लगाने में प्रणब मुखर्जी ने बिलकुल भी देर नहीं लगाई। राष्ट्रपति के तौर पर 5 साल के अपने कार्यकाल के दौरान प्रणब मुखर्जी ने राजनीतिक जुड़ाव से दूर रहकर काम किया। प्रणब दा जब केंद्र सरकार में थे तो उन्हें सरकार के संकटमोचक के तौर पर देखा जाता था, जब वे बातचीत के जरिए विभिन्न समस्याओं का समाधान निकालने वाले में माहिर माने जाते थे। पांच दशक के राजनीतिक जीवन में, जिसमें उन्होंने असंख्य शब्द कहे, एक भी अभद्र टिप्पणी उनकी आप याद नहीं कर सकते। दक्षिण भारत में जो कांग्रेस का जनाधार बनकर उभरा वह भी इनकी मेहनत एवं राजनीतिक कौशल का परिणाम था।

सन् 1980 में वे राज्यसभा में कांग्रेस पार्टी के नेता बनाए गए। इस दौरान मुखर्जी को सबसे शक्तिशाली कैबिनेट मंत्री माना जाने लगा और प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति में वे ही कैबिनेट की बैठकों की अध्यक्षता करते थे। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद प्रणब मुखर्जी को प्रधानमंत्री पद का सबसे प्रबल दावेदार माना जा रहा था, पर तब कांग्रेस पार्टी ने राजीव गांधी को प्रधानमंत्री चुन लिया। 1984 में राजीव गांधी सरकार में उन्हें भारत का वित्तमंत्री बनाया गया। बाद में कुछ मतभेदों के कारण प्रणब मुखर्जी को वित्तमंत्री का पद छोड़ना पड़ा। वे कांग्रेस से दूर हो गए और एक समय ऐसा आया, जब प्रणब मुखर्जी ने एक नई राजनीतिक पार्टी बनाई। उन्होंने राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस का गठन किया। दरअसल, वे अपने मत में स्पष्ट थे और अपना विरोध दर्ज करवाना जानते थे इसलिए उन्होंने राजीव गांधी से दूरी बनाई।

वीपी सिंह के कांग्रेस छोड़ने के बाद पार्टी की स्थिति डांवाडोल हो गई। बाद में कांग्रेस ने प्रणब मुखर्जी पर फिर भरोसा जताया और उन्हें मनाकर फिर पार्टी में लाया गया और उनकी पार्टी का कांग्रेस में विलय हो गया।

प्रणब मुखर्जी को पीवी नरसिंहराव सरकार ने योजना आयोग का उपाध्यक्ष बनाया। बाद में उन्हें विदेश मंत्री की जिम्मेदारी भी दी गई। 1997 में उन्हें संसद का उत्कृष्ट सांसद चुना गया। ये वो दौर था, जब कांग्रेस का जनाधार सिकुड़ने लगा था। केंद्र में मिली-जुली सरकारों का दौर चल रहा था और राष्ट्रीय राजनीति बदलाव के दौर से गुजर रही थी। लोकसभा चुनाव जीतने के बाद उन्हें लोकसभा में सदन का नेता बनाया गया, क्योंकि तब प्रधानमंत्री राज्यसभा के सदस्य थे। वरिष्ठ सदस्य होने के नाते गठबंधन सरकार में अलग-अलग विचारधारा वाली पार्टियों को साथ लेकर चलने में प्रणब मुखर्जी की अहम भूमिका रहती थी। प्रणब मुखर्जी 23 वर्षों तक कांग्रेस पार्टी की कार्यसमिति के सदस्य भी रहे। कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता होने के कारण अनेक अवसर ऐसे आये, जब लोग उन्हें भावी प्रधानमंत्री के तौर पर देख रहे थे, मगर नियति को शायद कुछ और मंजूर था। वे 2009 से 2012 तक मनमोहन सरकार में फिर से वे भारत के वित्तमंत्री रहे। जब कांग्रेस ने उन्हें अपना राष्ट्रपति उम्मीदवार चुना, तब उन्होंने इस पद से इस्तीफा दे दिया। देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होने वाले वे पश्चिम बंगाल के पहले व्यक्ति बने। वे भारतीय अर्थव्यवस्था और राष्ट्र निर्माण पर कई पुस्तकें लिख चुके हैं। उन्हें पद्मविभूषण और 'उत्कृष्ट सांसद' जैसे पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। उनके कार्यकाल को एक प्रखर राजनेता के राजनय के उदाहरण के रूप में याद किया जाएगा।

नम्रता अग्रवाल
(लेखिका)

आने वाला है नया साल

दिन बीते,महीने बीते
बीत गया ये भी साल
आने वाला है नया साल
हर साल कि नई शुरुआत में
हम सोचते है ये करे वो करे
कितनो को घर बुलयेगे ओर इसके घर भी जायेगे
ना जाने कितने सपने सजाते है
अब करलो अपने सपने पूरे
इस साल वो न रहेंगे अधूरे
पिछ्ले दो सालों में न जाने क्या क्या
हमने देखा है
ये सोचकर ही मन घबराता है
न जाने किसने क्या क्या खोया है
हर गम (दुखो) को अब भुलना है
उमीदों के दामन थामे आगे भड़ते जाना है
नये साल की खुशीयों को
दोनो हाथों से दामन में समेटना है
हर घर में अब हलचल रहेगी
बच्चों के स्कूल जाने की हड़बड़ी रहेगी
अब सड़कों पर भी रोनक मिलेगी
बाज़ार और हाट भी लगेगी
सिनेमा हॉल में लव स्टोरीज़ की रील भी चलेगी
दोस्त यारों की मेहफिल भी जमेगी
अब दिन रात फोने पर ये सुनने को मिलेगा
आने वाला है नया साल
लाने वाला है खुशियाँ हज़ार

कृति सिंह की कलम से

लक्ष्य बदलने की कोशिश न कर

न रुक, न थम, न ठहर , बस चलता चल,
लेहरों को चीरता, दहाड़ता चल, बेखौफ होकर संकल्प को पुकारता चल !

न डर, न बेहव, न सकुच, और न शंका कर,
कंचन सा तप, सूरज सा जल, चट्टानों सा बन, ख्वाबों को जीना है, तो तूफानों को पछाड़ता चल !

गति बदल, दिशा बदल, राह और रहनुमां बदल, सोच बदल खुद को बदल,
पर लक्ष्य बदलने की कोशिश न कर !

जुर्रत, हिम्मत, संघर्ष कर, हालातों को ललकारता चल
हथेली की लकीरे तेरी मोहताज होंगी और मंज़िल तेरी राह खुद तकेगी,
बस चल,चल और तू चलता चल !!

POEMS

GOONJ

जसविंदर की कलम से
(लेखक कवि)

औरत दरख़्त को काट कर
बेटा किस शाख पर उगाओगे

वो खुदा है, हिसाब सब रखता है
उसे क्या मुह दिखाओगे

—

इंसान कहलाना काफी नहीं
इंसानियत के मायने भी रखा करो

आसान है उंगली उठाना औरों की तरफ
जेबों में आईने भी रखा करो

मैं तब वही बैठा था आंगन में
माँ में उस दिन रब नज़र आया था

लकड़ियां नहीं थी घर में उस दिन
माँ ने चुल्हे में खुद को जलाया था

तेरे बाद भी ख़ाली ही रखी हमने,
वो जगह जो दिल में ख़ाली करके गए थे तुम अपनी।

कभी मेरे शहर से गुज़रो तो देखना,
रोज़ धूल साफ़ करते हैं, जैसे किताबे साफ़ करता है कोई।

ये बात उस दौर की है
जब हम गुलज़ार पढ़ा करते थे

तेरे चहरे पर तेरी जुल्फों से
रुख्सार पढ़ा करते थे

तू रेडियो सी थी देखने से ज्यादा
तुझे सुनना पसंद था हमे

तुझे सुनते थे, देखते थे
फिर सफ़ों पर उर्दू जड़ा करते थे

...तुम कहो तो...

तुम्हें देख नज़रे झुकी सी रहती है
तू कहे तो परदे हटा दूं

एक पहलू में तेरे लिए छांव
एक मे तुफां लिए घूमता हूं
तूं कहे तो दोनो दिखा दूं

सफ़र में थे
सफ़र में ही रहेंगे

अभी ढला नहीं सूरज
शफ़क़ में ही रहेंगे

ये जो सियासतें हैं
जचती है तुम पर

हम इन अदाओं से
बेखबर ही रहेंगे

क्या ही करना है दूर तक जाकर
जहां मानी मिलेगा, जिंदगी मिल जाएगी

बंधी है पेशानी आसमां की तो क्या बता
खोल देंगे गिरहें, धूप खिल जाएगी

छुट्टी लेकर ख्वाहिशों से अब रुकेंगे थोड़ा
थोड़ी उधड़ी है जो, सांसे सिल जाएंगी

छटे जो बर्फ तो जाएंगे अबके काठगढ़
छूकर हथेलियां उनकी, ये हथेलियां पिघल जाएंगी

रुठी सी जिंदगी मिले तो गले लगाए ज़ोर से
अभी खफा है फिर खुश ग़ज़ल नजर आएगी

ओडिशा के कोणार्क मंदिर की शैली पर बना है ग्वालियर का सास-बहू मंदिर

ग्वालियर को इतिहास और आधुनिकता का अनोखा संगम भी कह सकते हैं। यहां के दर्शनीय स्थलों की बात करें तो सबसे पहले सूर्य मंदिर का नाम आता है। ग्वालियर का सूर्य मंदिर देश के अन्य मंदिरों के लिए एक आदर्श है। यह मंदिर पंडे-पुजारियों और भिखारियों के आतंक से तो मुक्त है ही साथ ही अन्य जगहों की अपेक्षा यहां सफाई पर भी अत्यधिक ध्यान दिया गया है। यह सूर्य मंदिर ओडिशा के कोणार्क मंदिर की शैली पर बना है। लाल पत्थर से निर्मित इस भव्य मंदिर के चारों ओर मनोरम उद्यान भी हैं। मध्य प्रदेश के उत्तर में स्थित ग्वालियर शहर अपने आप में इतिहास की कई गाथाएं समेटे हुए है और राज्य के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशेष स्थान भी रखता है। इतिहास की पुस्तकों में उल्लेख मिलता है कि ग्वालियर गुर्जर-प्रतिहार राजवंश, तोमर तथा बघेलों की राजधानी रहा है। ग्वालियर को गालव ऋषि की तपोभूमि भी कहा जाता है।

भारत के प्रमुख किलों में गिना जाने वाला ग्वालियर का किला राजा मानसिंह ने गूजरी रानी के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए बनवाया था। बलुए पत्थर की पहाड़ी पर निर्मित इस किले में छह महल हैं जिनमें से मान मंदिर और मृगनयनी का गूजरी महल प्रमुख है। 15वीं सदी में बना यह किला भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है। रानी झांसी का स्मारक भी देखने योग्य है। इस स्मारक में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की नायिका रानी लक्ष्मीबाई की विशाल अश्वारूढ़ प्रतिमा तथा समाधि है। यह किला रानी का बलिदान स्थल भी है। मुहम्मद गौस तथा तानसेन का मकबरा भी आप देखने जा सकते हैं। गुरु-शिष्य परम्परा के प्रतीक इस स्थल में मुगल शैली में निर्मित तानसेन के प्रारम्भिक गुरू मुहम्मद गौस का मकबरा है। इसी विशाल और भव्य मकबरे के अहाते में संगीत सम्राट तानसेन की क़ब्र भी है।

आधुनिक इटालियन वास्तुकला शैली के अनुपम उदाहरण जयविलास महल में जहां एक ओर बेशकीमती चीजें नुमाइश के लिए रखी गई हैं, वहीं दूसरी ओर विशाल फानूसों की चकाचौंध रोशनी में महल की सुनहरी पच्चीकारी और रंगसज्जा देखते ही बनती है। नुमाइश के लिए रखी गई चीजों में बड़ा कालीन तथा चांदी का पलंग, छत्र और नाश्ते की रेल दर्शकों को खासी आकर्षित करती है। ग्वालियर में सास-बहू का मंदिर भी है। मिस्त्र के पिरामिड़ों की आकृति वाले ये दोनों मंदिर 1093 में बने थे। एक-दूसरे के बिल्कुल पास बने इन मंदिरों में नक्काशीदार खंभे तथा बड़ी-बड़ी खिड़कियां लगी हैं। इन मंदिरों में जो सबसे अजीब चीज देखने को मिलती है वह यह कि बहू का मंदिर सास के मंदिर से बड़ा है। दोनों ही मंदिर मान्यताओं के अनुसार भगवान विष्णु से संबंधित हैं। सास-बहू के मंदिर के पास ही स्थित है तेली का मंदिर। यह मंदिर भी भगवान विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह द्रविड़ शैली में बना है। शायद इसका निर्माण तेलंगाना से किसी प्रकार संबंधित रहा है। यही वजह है कि इस को तेली का मंदिर कहते हैं।

चट्टानों में आदि मानव द्वारा उकेरे गए शैलचित्र

चट्टानों में आदि मानव द्वारा उकेरे गए शैलचित्र, मानव सभ्यता के विकास के साक्षी माने गए हैं। मुरैना जिले की जौरा तहसील के अन्तर्गत पहाड़गढ़ ब्लाक में ग्राम निची बहराई के समीप स्थित लिखीछाज भी ऐसे ही स्थानों में से एक है। लिखीछाज समूह में आसन नदी के किनारे पर रेतीले पत्थर के पहाड़ को छतरीनुमा अर्धवृत्ताकार रूप में काटकर, इन कटी हुई दीवालों पर लाल रंग से चित्र बनाए गए हैं। जिन प्रमुख शैलचित्रों में शैल चित्र प्राप्त हुए हैं, उनमें लिखीछाज, चपरेटा, परेवा, आमझिर, खाई श्यामदेव और पगारा उल्लेखनीय हैं। इन शैलचित्रों में नील गाय, सांभर, वृषभ, चीता आदि वन्य प्राणी, गजारोही, अश्वारोही, धनुर्धारी, योद्धाओं के साथ शिकार करने के चित्र शामिल हैं। इनमें गाभिन गाय, और अरना भैंस का अंकन देखते ही बनता है।

डॉ. सुरेश सम्राट
वरिष्ठ संपादक, लेखक
8839261908

इन चित्रों के बारे में निचली बहराई और आसपास के गांवों में यह धारणा प्रचलित है कि पांडवों ने निर्वासन काल के दौरान जब वे विराट नगर (वर्तमान बैराड़ जिला शिवपुरी) में रहे थे, एक वर्ष के गुप्त प्रवास के दौरान उन्होंने लिखीछाज नाम स्थान पर पहाड़ काट कर आवास बनाया था। जिसकी दीवारों पर द्रोपदी ने यह चित्र उकेरे थे। जबकि पुरातत्वविदों के अनुसार यह चित्र 23 हजार साल पुराने हैं। उस समय के मानव ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए इन चित्रों का लिपि के रूप में प्रयोग किया था। वस्तुतः आसन नदी के किनारे सौ से अधिक ऐसी गुफाएं अभी भी अवस्थित हैं, जिनमें पानी एवं भोजन की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध थी। इन गुफाओं में पुराकालीन बर्तन, गौरिया, औखली और चकिया के चिन्ह मिले हैं।

आदिमानव कालीन साक्ष्यों से भरे इस क्षेत्र की व्यापकता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि यह क्षेत्र आसन नदी के किनारे-किनारे ही छह सौ वर्ग किलोमीटर से अधिक भू भाग में फैला हुआ है। यह भू-भाग पहाड़ी इलाके के सघन जंगलों में हैं। दुर्गम पहाड़ों और घने वनों का सीना चीर कर तेज गति से बहने वाली आसन नदी के साथ कई सहायक नदियों और नाले मिलकर इसके आकार और गति को बढ़ा देते हैं। इसमें गिरने वाले नालों में खारी नाला, पाड़खो, नाला और भद्दे नाला प्रमुख हैं। इन नालों तथा कई अन्य नालों के दोनों किनारों पर स्थित गुफाओं में शैलाश्रय देखे जा सकते हैं। कुल मिलाकर अभी तक लगभग 90 शैलाश्रय का पता लग चुका है। इनमें कई शैलश्रय तो नाम से प्रचिलित हैं जो इस बात को साबित करते हैं कि इनकी पहचान वर्षों पूर्व हो चुकी है। इनमें लिखी छाज के अलावा नोवता, कुण्डीघाट, वर्रादह, चपरेटा, खजुरा, चूनेवाली, कील्या, पंखा, सिद्धवाली, भछेछाज, नरेरा छाज, वर्रादह, चपरेटा, खजुरा, चूनेवाली, कील्या, पंखा, सिद्धवाली, भछेछाज, नरेरा छाज, पाड़ खो, देवता दह, कटावली, रानीदह, हवा महल, ऐसी ही गुफाएं हैं, जिनके नामकरण का विश्लेषण किया जाए तो उनसे जुड़ी मान्यताएं और उनसे जुड़ी

धारणाएं, उनकी प्राचीनता से आवरण हटाकर, उनकी पहचान को और उजला कर सकती है।

लिखीछाज समूह की अभी तक निजी स्तर पर जो खोज और अन्वेषण हुए हैं उससे आदि मानव कालीन सभ्यता से जुड़े अनेक साक्ष्य यहां शैलाश्रय और शैलाश्रयों में

शैलचित्र होने की पुष्टि करते हैं। इन साक्ष्यों से जहां शैलाश्रयों की संरचना का पता चलता है वही शैलचित्रों के स्थान, अंकन और उनमें उभरे रंग उनकी प्राचीनता को ध्वनित करते हैं। इन शैलाश्रयों में दीवालों के अलावा छतों पर चित्र आंके गए हैं। अधिकांश चित्रों में कुछ लाल, गेरुआ, गहरे रंग और कुछ सफेद रंगों में उकरे हुए हैं। जहां तक शैलाश्रयों की संरचना का सवाल है, इन आश्रयों में गुफाएं भी मिली हैं। लिखीछाज शैलाश्रय के अंदर भी गुफा है। जबकि बर्रादह, नौबता, सिद्धवाली, शैलाश्रयों में तो कई-कई छोटी बड़ी गुफाओं के गुच्छ शामिल हैं। जैसा कि प्राकृतिक दृष्टि से स्वाभाविक है सभी शैलाश्रयों और गुफाओं की बनावट अलग है। कुछ वृत्ताकार है तो कुछ अर्धवृत्ताकार। कुछ दो तरफ से खुली हैं तो कुछ तीन तरफ से। कुछ गुफाएं कम गहरी हैं तो कुछ गुफाए पहाड़ के अन्तस को चीरता हुई काफी गहराई तक चली गई हैं। कुछ अंदर जाकर छोटे-छोटे भागों में विभाजित हैं। कुछ का प्रवेश द्वार बहुत सकारा है लेकिन आन्तरिकता काफी फैली और विस्तृत है। शैलाश्रयों और गुफाओं की यह संरचना बताती है कि आदि मानव संरचना के हिसाब से रहने, सोने, आमोद-प्रमोद और उत्सवों के लिए इनका उपयोग करते रहे होंगे।

आसन नदी पर पगारा बांध (1911-1927) बन जाने के कारण बांध के डूब क्षेत्र में न जाने कितनी ही गुफाएं डूब गई होंगी। यहीं निकट में चाचुल गांव के पास पुराकालीन शिव मंदिर बना हुआ है जो वर्षों से भक्त पर्यटकों का लोकल पर्यटन केन्द्र बना हुआ है। निरार से निचली बहराई तक पक्का मार्ग है। यह वही निचली बहराई है जहां, पगारा, टिकटोली दूमदार आगे बढ़ाने के स्पष्ट साक्ष्य हैं। इतनी पुरा और ऐतिह्य साक्ष्य उपलब्ध होने के बावजूद यहां अभी तक पुरातत्व अथवा किसी विभाग ने कोई खुदाई नहीं की है। जबकि वर्षों पूर्व सुश्री गीतम मिश्र (मुरैना में जन्मे महाकवि वीरेन्द्र मिश्र की पुत्री) लिखी छाज पर आदिमानव की आर्टगैलरी जैसे सार्थक शीर्षक से वृत्तचित्र बनाकर दूरदर्शन पर प्रदर्शित कर चुकी हैं। बावजूद इसके अभी तक इस क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की दिशा में भी कोई पहल नहीं हुई। लगभग छह सौ वर्ग किलोमीटर में फैले आदिमानव और उसके बाद के इतिहास के साक्ष्यों से भरे पड़े इस क्षेत्र में घटनाक्रमों की बेहद दिलचस्प भूमिका रही है।

चपरेट की गुफा

इस गुफा में दो वृत्तों के साथ बड़े आकार का एक ऐसा चित्र है, जिसका केंद्र बिन्दु एक ही है और जिसके ऊपर स्टार बना है। बड़े वृत्त में ऐसे आठ स्टार हैं, जिनमें से चार स्टारों को गहरे रंग से तथा शेष चार स्टारों को हल्के रंग से दिखाया गया है। लगता है यह चित्र वैदिक ज्योतिष के अधीन आठ माहों में बांटा गया है। इसके साथ ही एक समकोणीय चित्र भी है, जिसके रेखांकन में एक ऐसा सूर्य के हल्के भाग की ओर बढ़ाई गई है। यह चित्र इस बात की मांग करता है कि यहां के इस शैलचित्र का वैदिक, तांत्रिक अथवा ज्योतिष विज्ञान से भी कोई संबंध है या नहीं।

एतिहासिक चम्बल की ऐतिहासिक धराहरें

मुरैना भारत के मध्य प्रदेश प्रान्त का एक नगर है एतिहासिक चम्बल की ऐतिहासिक धराहरें पर्यटकों को आकर्षित करतीं हैं। उत्तरी मध्य प्रदेश में स्थित मुरैना चंबल घाटी का प्रमुख जिला है। 5000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस जिले से चंबल, कुंवारी, आसन और सांक नदियां बहती हैं। पर्यटन के लिए आने वालों के देखने के लिए यहां अनेक दर्शनीय स्थल हैं। इन दर्शनीय स्थलों में सिहोनिया, पहाडग़ढ़, मीतावली, नूराबाद, सबलगढ़ का किला और राष्ट्रीय चंबल अभ्यारण्य प्रमुख हैं। यहां एक पुरातात्विक संग्रहालय और गैलरी भी देखी जा सकती है। यह जिला ग्वालियर नगर से लगभग 46 कि.मी. की दूरी पर है। 5000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले इस जिले से चंबल, कुंवारी, आसन और सांक नदियां बहती हैं। पर्यटन के लिए आने वालों के देखने के लिए यहां अनेक दर्शनीय स्थल हैं। इन दर्शनीय स्थलों में सिहोनिया, पहाडग़ढ़, मीतावली, नूराबाद, सबलगढ़ का किला और राष्ट्रीय चंबल अभ्यारण्य प्रमुख हैं। यहां एक पुरातात्विक संग्रहालय और गैलरी भी देखी जा सकती है। यह जिला ग्वालियर नगर से लगभग 46 कि.मी. की दूरी पर है।

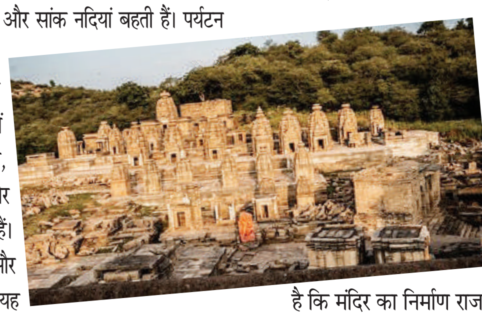

सबलगढ़ किला

मुरैना के सबलगढ़ नगर में स्थित यह किला मुरैना से लगभग 60 कि.मी. की दूरी पर है। मध्यकाल में बना यह किला एक पहाड़ी के शिखर बना हुआ है। इस किले की नींव सबल सिंह गुर्जर ने डाली थी जबकि करौली के महाराजा गोपाल सिंह ने 18वीं शताब्दी में इसे पूरा करवाया था। कुछ समय बाद सिकंदर लोदी ने इस किले को अपने नियंत्रण में ले लिया था लेकिन बाद में करौली के राजा ने मराठों की मदद से इस पर पुनः अधिकार कर लिया। किले के पीछे सिंधिया काल में बना एक बांध है, जहां की सुंदरता देखते ही बनती है।

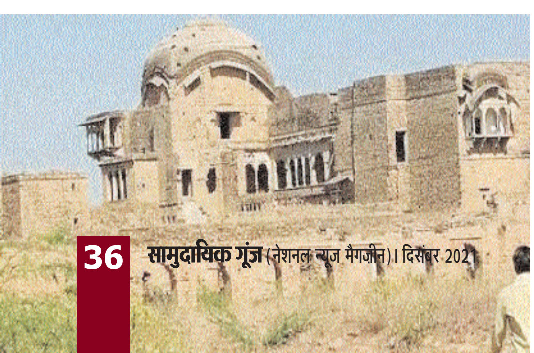

सिहोनिया

सास-बहू अभिलेखों से ज्ञात होता है कि सिहोनिया या सिहुनिया कुशवाहों की राजधानी थी। इस साम्राज्य की स्थापना 11वीं शताब्दी में 1015 से 1035 के मध्य हुई थी। कछवाह राजा ने यहां एक शिवमंदिर बनवाया था, जिसे काकनमठ नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि मंदिर का निर्माण राजा कीर्तिराज ने रानी काकनवटी की इच्छा पूरी करने के लिए करवाया था। खजुराहो मंदिर की शैली में बना यह मंदिर 115 फीट ऊंचा है। सिहोनिया जैन धर्म के अनुयायियों के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। यहां 11वीं शताब्दी के अनेक जैन मंदिरों के अवशेष देखे जा सकते हैं। इस मंदिरों में शांतिनाथ, कुंथनाथ, अराहनाथ, आदिनाथ, पार्श्वनाथ आदि जैन तीर्थकरों की प्रतिमाएं स्थापित हैं।

पड़ावली

नाग काल के बाद इसी क्षेत्र में गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई थी। पदावली के घरोंन गांव के आसपास अनेक मंदिरों, घरों और बस्तियों के अवशेष देखे जा सकते हैं। यहां एक प्राचीन और विशाल विष्णु मंदिर था जिसे बाद में गढ़ी में परिवर्तित कर दिया गया। इस मंदिर का चबूतरा, आंगन और असेम्बली हॉल प्राचीन संस्कृति के प्रतीक हैं। यहां का क्षतिग्रस्त दरवाजा और सिंह की मूर्ति प्राचीन वैभव की याद दिलाती हैं। पदावली से भूतेश्वर के बीच पचास से भी अधिक इमारतें देखी जा सकती हैं।

मितावली

नरसर के उत्तर में एक चौसठ योगिनी मंदिर है जो 100 फीट ऊंची पहाड़ी पर बना है। यह गोलाकार मंदिर दिल्ली के संसद भवन की शैली में निर्मित है। इसकी त्रिज्या 170 फीट है। मंदिर में 64 कक्ष और एक विशाल आंगन बना हुआ है। मंदिर के बीचोंबीच भगवान शिव का मंदिर है।

पहाडग़ढ़

पहाडग़ढ़ से 12 मील की दूरी पर 86 गुफाओं की शृंखला देखी जा सकती है। इन गुफाओं को भोपाल की भीमबेटका गुफाओं का समकालीन माना जाता है। सभ्यता के प्रारंभ में लोग इन गुफाओं में आश्रय लेते थे। गुफाओं में पुरुष-महिला, चिड़िया, पशु, शिकार और नृत्य से संबंधित अनेक चित्र देखे जा सकते हैं। यह चित्र बताते हैं कि प्रागैतिहासिक काल में भी मनुष्य की कला चंबल घाटी में जीवंत थी।

चंबल अभ्यारण्य

इस अभ्यारण्य की स्थापना जीव-जंतुओं और वनस्पतियों से संपन्न नदी पारिस्थिति तंत्र को सुरक्षित रखने के लिए की गई थी। मछलियों की विभिन्न प्रजातियों के अलावा डॉल्फिन, मगरमच्छ, घडियाल, कछुआ, ऊदबिलाव जैसी जलीय प्रजातियां यहां देखी जा सकती हैं। देवरी का मगरमच्छ केन्द्र हाल ही में पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है। बर्ड वाचर्स के लिए भी यह जगह स्वर्ग से कम नहीं है। नवंबर से मार्च के दौरान हजारों की संख्या में प्रवासी पक्षी देखे जा सकते हैं। नदी में बोटिंग का आनंद भी उठाया जा सकता है।

किस्मत बदलने वाला..... कैंची धाम

देश-विदेश से हज़ारों लोग यहां हनुमान जी का आशीर्वाद लेने आते हैं। बाबा नीब करौरी ने इस आश्रम की स्थापना 1964 में की थी। बाबा नीब करौरी 1961 में पहली बार यहां आए और उन्होंने अपने पुराने मित्र पूर्णानंद जी के साथ मिल कर यहां आश्रम बनाने का विचार किया था। बाबा के आशीर्वाद से यंहा एक भव्य मंदिर का निर्माण हुआ। जिसके बाद बाबा के भक्तो की आस्था यंहा उमड़ पड़ी। हार साल यंहा एक भव्य मेले का आयोजन भी किया जाता है, जिसको आश्रम के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है।

बाबा नीम करोली का प्रिय धाम

इस चमत्कारी धाम से खाली नहीं लौटता कोई, माने जाते हैं हनुमानजी का अवतार बाबा नीम करोली बाबा नीम करौली को कैंची धाम बहुत प्रिय था। बाबा के भक्तों ने इस स्थान पर हनुमान का भव्य मन्दिर बनवाया। यहां बाबा नीम करौली की भी एक भव्य मूर्ति स्थापित की गयी है। बाबा नीम करौली महाराज के देश-दुनिया में 108 आश्रम हैं। इन आश्रमों में सबसे बड़ा कैंची धाम और अमेरिका के न्यू मैक्सिको सिटी स्थित टाउस आश्रम है। भक्तो के अनुसार कहा जाता है कि बाबा नीब करौली को भगवान हनुमान की उपासना करने के बाद अनेक चमत्कारिक सिद्धियां प्राप्त हुई थीं। लोग उन्हें हनुमान जी का अवतार भी मानते हैं। लेकिन बाबा बेहद साधारण तरीके से रहते थे और अपने पैर किसी को नहीं छूने देते थे। जब भी कोई भक्त बाबा के चरण स्पर्श करना चाहता था, तो बाबा उसको रोक कर महाबली हनुमान जी के आगे नतमस्तक होने का आदेश देते थे। बाबा के अनुसार कलयुग में भाग्यविधाता हनुमान की सरण ही भक्तो को कस्ट से मुक्ति दिलाते है।

कौन थे चमत्कारी बाबा नाम करौली

इस चमत्कारी धाम से खाली नहीं लौटता कोई, माने जाते हैं हनुमानजी का अवतार बाबा नीम करोली
नीम करौली बाबा एक सन्यासी थे। बाबा नीम करौली का जन्म फिरोजाबाद के अकबरपुर में हिरन गांव में हुआ था। उनका आश्रम उत्तराखंड के नैनीताल से 65 किलोमीटर दूर पंतनगर में है। यह आश्रम इस समय एक ट्रस्ट चला रहा है। उनका निधन 1973 में हुआ था। बताया जाता है की सबसे ज्यादा इस आश्रम में अमेरिकी आते हैं। इसी वजह से अमेरिका में बाबा नीम करौली के भक्तों की लम्बी लिस्ट है।

बाबा के भक्तों में ओबामा ही नहीं बल्कि जूलिया रोबर्ट भी शामिल हैं। जूलिया ने बाबा नीम करौली की फोटो देखी और उनका ऐसा सम्मोहन हुआ की जूलिया ने हिन्दू धर्म अपना लिया। एक बार वह भारत नीम करौली बाबा से मिलने उनके नैनीताल के कैंची धाम पहुंची तब उनको पता चला की उनकी मृत्यु को बरसों पहले हो गई थी। वह इस बात से चकित हुईं की उनकी तस्वीर में इतना जादू है तो वह बाबा चमत्कारी हैं।

बाबा की सरण में दुनिया के बिजनेसमैन

इस चमत्कारी धाम से खाली नहीं लौटता कोई, माने जाते हैं हनुमानजी का अवतार बाबा नीम करोली केवल आम आदमी ही नहीं अरबपति-खरबपति भी बाबा के भक्तों में शामिल हैं। पीएम मोदी और हॉलीवुड अभिनेत्री जूलिया राबर्ट्स, एप्पल के फाउंडर स्टीव जाब्स और फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग जैसी हस्तियां भी बाबा की भक्त है। दुनियाभर में बाबा के कई आश्रम स्थित है, जंहा भक्त श्रद्धा के साथ बाबा से अपनी मन्नत मांगते है। पिछ्ले दिनों भारत दौरे पर आये फेसबुक के मालिक ज़ुकरबर्ग ने पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात के दौरान बताया था की एप्पल के फाउंडर स्टीव जॉब्स की सलाह पर वह नैनीताल के कैंची धाम मंदिर गए थे। इस मंदिर में उन्होंने एक बाबा के दर्शन किये थे जो जीवित नहीं।एप्पल के फाउंडर स्टीव जॉब्स 1974 में पंतनगर अध्यात्म की खोज में आये थे। तब उनको बाबा के बारे में पता चला। वह बाबा से मिल नहीं सके थे क्यूंकि बाबा का निधन हो गया था।

एफएम रेडियो के जरिए संवारे कैरियर

ग्वालियर का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम. आपकी अपनी आवाज़ अब शहरवासियों के बीच ऑन एयर हो चुका है शहरवासियों का गूंज 90.8 एफ.एम. को अच्छा रिस्पॉस मिल रहा है। लोग गूंज एफ. एम. के

माध्यम से ग्वालियर शहर से जुड़े इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन, कम्युनिटी, एग्रीकल्चर, शिक्षा आदि विषयों पर कई जानकारी मिल रही हैं। हर छोटे-बड़े शहर में रेडियो चैनल तेजी से अपने पांव पसार रहे हैं। सामुदायिक रेडियो चैनल भी तेजी से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। पहले जहां केवल प्रिंट मीडिया का वर्चस्व था, वहीं अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, वेब मीडिया, सोशल मीडिया, यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म और एफएम चैनल्स अपनी तरफ खूब आकर्षित कर रहे हैं।विभिन्न शहरों में एफएम चैनल्स खुलने से आरजे के लिए संभावनाएं बढ़ गई हैं... हर छोटे-बड़े शहर में रेडियो चैनल तेजी से अपने पांव पसार रहे हैं। सामुदायिक रेडियो चैनल भी तेजी से अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। इसके अलावा, आजकल सोशल मीडिया तो मुख्य मीडिया को भी पीछे छोड़ते हुए अपनी दमदार उपस्थिति को दर्ज करवा रहा है। ऐसे में प्रशिक्षित पत्रकारों की तुलना में आम आदमी भी यहां बढ़-चढ़कर देश दुनिया की खबरें और वीडियो शेयर कर रहा है या खुद तैयार कर सोशल मीडिया पर अपलोड कर रहा है। जाहिर है अब यह क्षेत्र भी व्यावसायिक रूप ले चुका है और यहां भी प्रशिक्षित लोगों की जरूरत बढ़ने लगी है, क्योंकि जब आप अपनी खबर को प्रस्तुत करेंगे तो उसका तौर-तरीका पता होना जरूरी है और स्थानीय या राष्ट्रीय रेडियो चैनल्स पर काम करेंगे तो उसकी भी कार्य प्रणाली का ज्ञान होना जरूरी है।

करियर संभावनाएं

कोर्स के तुरंत बाद किसी बड़े रेडियो स्टेशन, टीवी पर काम की उम्मीद नहीं लगानी चाहिए, बल्कि छोटे रेडियो स्टेशन, टीवी प्रोग्राम्स में खुद को शामिल कराने का प्रयास करना चाहिए, जिससे रेडियो और टीवी से जुड़ी प्रैक्टिकल स्किल सीखने को मिल सके। आपको ऐसे चैनल्स पर अपने रेज्यूमे भेज कर ऑडिशन का समय लेना चाहिए। ऑल इंडिया रेडियो में भी कुछ-कुछ अंतराल पर ऑडिशन होते रहते हैं।

शैक्षिक योग्यता

टीवी न्यूज एंकरिंग या रेडियो जॉकी बनने के लिए 12वीं के बाद जहां सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, शॉर्ट टर्म या वीकेंड कोर्स किए जा सकते हैं, वहीं ग्रेजुएशन के बाद पीजी डिप्लोमा कोर्सेज के लिए आवेदन किया जा सकता है। इस क्षेत्र में आने के लिए डिप्लोमा, डिग्री के अलावा एक और योग्यता बेहद जरूरी है और वह है आपकी भाषा। सही उच्चारण, शब्द भंडार और भाषा के व्याकरण पर पूरी पकड़ होनी बहुत जरूरी है। इसके अलावा न्यूज एंकरिंग के लिए आपका व्यक्तित्व आकर्षक होना महत्वपूर्ण शर्त है। साथ में आपकी अभिव्यक्ति भी दमदार होनी चाहिए।

स्किल्स-

एक आरजे में बेहतर कम्यूनिकेशन स्किल के साथ ही प्रेजेंटेशन स्किल का होना भी जरूरी है। एक आरजे के रूप में आपकी आवाज प्रभावशाली होना चाहिए आपके उच्चारण सही और आवाज पर नियंत्रण होना जरूरी है। आपका स्टाइल ओरिजिनल होना चाहिए ताकि लोग आपको पसंद कर सके। आपको मिमिक्री के अलावा अपने शहर की खास लैंग्वेज भी आना जरूरी है ताकि आप अपने शो को और भी अधिक मजेदार बना सके। आपको म्यूजिक की अच्छी समझ होना जरूरी है। एक ऋष्ठ को अपने शहर की जानकारी

के साथ-साथ देश और विदेश में होने वाली गतिविधियों की जानकारी होना जरूरी है।

रेडियो जॉकी का काम-

एक रेडियो जॉकी अपनी आवाज की वजह से पहचाना जाता है, यहां उसे हर रोज शो प्रजेंट करना होता है। लेकिन इसके अलावा भी कई काम होते है जो एक रेडियो जॉकी को करने पड़ते है जैसे पटकथा लेखन, म्यूजिक प्रोग्रामिंग और रेडियो एडवरटाइजिंग बनाने का काम करना होता है। इसके अलावा शहर में आई हुई सेलेब्रिटी का इंटरव्यू लेना, शहर के किसी बड़े अधिकारी से किसी मुद्दे पर बात करना आदि।

योग्यता-

एक रेडियो जॉकी बनने के लिए ये जरूरी नही है कि आपके पास कोई प्रोफेशनल डिग्री हो। लेकिन फिर भी आप चाहे तो 12वीं पास करने के बाद इसके किसी डिग्री या डिप्लोमा कोर्स में एडमिशन ले सकते है ताकि अपने गुणों को और अच्छे से निखारा जा सके।

कलौंजी से मिलेगी निखरी-निखरी त्वचा

कलौंजी एक्ने के लिए काल के समान है। अगर आपकी स्किन ऑयली है और आप एक्ने से परेशान रहते हैं तो इस पैक का इस्तेमाल करें। इसके लिए आप एक चम्मच कलौंजी पाउडर लें और इसमें आधा चम्मच नींबू के छिलके का पाउडर और एक चौथाई चम्मच एप्पल साइडर विनेगर डालकर मिक्स करें। अमूमन महिलाएं एक अच्छी स्किन पाने के लिए महंगे-महंगे प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करती हैं। लेकिन अच्छी त्वचा का राज

आपकी किचन के अंदर ही है। किचन में ऐसे कई इंग्रीडिएंट्स होते हैं, जो आपकी स्किन के लिए वरदान समान होते हैं। इन्हीं में से एक है कलौंजी। कलौंजी के बीज स्किन पर किसी चमत्कार की तरह काम करते हैं। यह ना केवल एक्ने को दूर करते हैं, बल्कि स्किन के टेक्सचर को भी बेहतर बनाते हैं। इतना ही नहीं, अगर आप अपनी स्किन कॉम्प्लेक्शन को बेहतर बनाना चाहते हैं तो भी आप कलौंजी का इस्तेमाल कर सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको फ्लॉलेस स्किन के लिए कलौंजी का इस्तेमाल करने के कुछ बेहतरीन आइडियाज के बारे में बता रहे हैं-

बनाएं स्क्रब

अगर आप अनइवन स्किन टोन से लेकर टैनिंग आदि से छुटकारा पाना चाहती हैं तो ऐसे में कलौंजी की मदद से स्क्रब बनाकर इस्तेमाल करें। इसके लिए पहले आप कलौंजी के बीजों को पीसकर उनका पाउडर बना लें। अब आप एक चम्मच कलौंजी का पाउडर लें और फिर उसमें एक चम्मच दूध को मिक्स कर लें। इसे अच्छी तरह मिक्स करें और फिर चेहरे और गर्दन पर लगाएं। अब, आप हल्के हाथों से मसाज करें और फिर नॉर्मल पानी से धो लें। अंत में, फेस को मॉइश्चराइज कर लें।

एक्ने को कहें अलविदा

कलौंजी एक्ने के लिए काल के समान है। अगर आपकी स्किन ऑयली है और आप एक्ने से परेशान रहते हैं तो इस पैक का इस्तेमाल करें। इसके लिए आप एक चम्मच कलौंजी पाउडर लें और इसमें आधा चम्मच नींबू के छिलके का पाउडर और एक चौथाई चम्मच एप्पल साइडर विनेगर डालकर मिक्स करें। अगर आपकी स्किन संसेटिव है तो आप सिरके के स्थान पर गुलाब जल का इस्तेमाल करें।

डायबिटीज़ को रखना है सही तो सर्दियों में खाएं यह इम्युनिटी बूस्टर फल

संतरे जैसे खट्टे फलों में विटामिन सी पोषक तत्व की एक बड़ी मात्रा पायी जाती है, जो एक शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट है। ऑरेंज फाइबर से भरपूर होता है, जो रक्तचाप व संबंधी समस्याओं के उनके अधिकतम स्तर तक पहुंचने से रोक सकता है। अगर हम खाने पीने की बात करें तो साल का सबसे पसंदीदा समय सर्दियों का मौसम होता है। सर्द मौसम में अक्सर लोग धूप में बैठकर मौसमी खाद्य पदार्थों का आनंद लेते हैं। चाय की गर्म प्याली, मूंगफली, गाजर का हलवा और संतरे जैसे कुछ ऐसे खाद्य पदार्थ हैं जिन्हें हम सर्दियों के मौसम में अक्सर खाना पसंद करते हैं। लेकिन यदि आप मधुमेह से पीड़ित हैं, तो आपको इनका आनंद लेने से बचना चाहिए।मधुमेह से पीड़ित लोगों को अपने खानपान को लेकर थोड़ा सतर्क रहना चाहिए। किसी भी भोजन को पूरी तरह से टालने का सबसे अच्छा विकल्प यह है कि उसे मॉडरेशन में लिया जाए। तो, अब सवाल ये उठता है कि क्या मधुमेह रोगी सर्दियों के दिनों में संतरे जैसे रसदार फलों का आनंद ले सकते हैं? जी हाँ, ले सकते हैं। मधुमेह रोगियों को ऐसे खाद्य पदार्थ खाने की सलाह दी जाती है जो फाइबर से भरपूर हों और उनमें मध्यम ग्लाइसेमिक इंडेक्स हो। संतरे फाइबर से भरे हुए होते हैं और इसकी जीआई सीमा 40-50 के बीच होती है। साथ ही, फल में प्राकृतिक शुगर होती है, जो कि मधुमेह रोगियों के लिए पूरी तरह से सुरक्षित है।यहाँ हम आपको कुछ स्वादिष्ट और पौष्टिक सर्दियों के फल के बारे में बताने जा रहें है, जिन्हें आप ब्लड शुगर नियंत्रण करने और वज़न घटाने में सहायता करने के लिए अपने डायबिटिक डाइट में शामिल कर सकते हैं।

1. संतरा- संतरे जैसे खट्टे फलों में विटामिन सी पोषक तत्व की एक बड़ी मात्रा पायी जाती है, जो एक शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट है। ऑरेंज फाइबर से भरपूर होता है, जो रक्तचाप व संबंधी समस्याओं के उनके अधिकतम स्तर तक पहुंचने से रोक सकता है।

2. नाशपाती- नाशपाती में एक प्रभावशाली कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, जो इस बात का माप है कि शरीर के भोजन में कार्बोहाइड्रेट को ग्लूकोज में कैसे परिवर्तित करता है। यह कहा जाता है कि नाशपाती की त्वचा में बहुत ज्यादा पोषक तत्व होते हैं और विशेष रूप से उच्च ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित करने में फ़ायदेमंद होते हैं। तो, बिना छीले ही इसका स्वाद लें।

3. अमरूद- इस फल में एक बढ़िया पोषण

तत्व होता है। इसमें उच्च मात्रा में पोटेशियम और कम मात्रा में सोडियम होता है। यह फाइबर और विटामिन सी से भरा हुआ होता है और इसमें कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है। यह सर्दियों में मधुमेह आहार के लिए सबसे उपयुक्त फल है।

4. कीवी- यह हरा फ़ल आश्चर्य एंटीबायोटिक गुणों से भरपूर होता है और एंटी-इन्फ्लैमटॉरी गुणों से भरा हुआ होता है। यह डाइटरी फाइबर से भी भरपूर होता है, जिससे यह आपकी डाइट को परफेक्ट करता है।

5. सेब- इस फल में एक विशेष प्रकार का एंटीऑक्सिडेंट होता है, जिसे एंथोसायनिन कहा जाता है, जो ब्लड शुगर को नियमित करके और शरीर के मेटाबॉलिज़्म को संतुलित करके इसके स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है।

6. अंगूर- अंगूर सर्दियों का एक ऐसा फल है जो ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में फायदेमंद साबित होता है। फल में रेसवेराट्रॉल नामक फाइटोकेमिकल होता है, जो इंसुलिन रिलीज करने की शरीर की क्षमता को बेहतर बनाने में मदद करता है। उपर्युक्त यह मौसमी फल आपके मधुमेह आहार के लिए एक बढ़िया इज़ाफ़ा हो सकते हैं, लेकिन आपको इनके अधिक सेवन से भी बचना होगा। यह आपके आहार के लिए कितना अच्छा हो सकता है, इसके लिए हम आपको अपने चिकित्सक से एक बार परामर्श करने की भी सलाह देते हैं।

इन चीजों को खाने से दूर होगी विटामिन ई की कमी

मूंगफली और उसकी मदद से बनने वाले मक्खन में विटामिन ई प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। महज दो टेबलस्पून पीनट बटर के सेवन से आप अपने शरीर के विटामिन ई की दैनिक आवश्यकता का 18 प्रतिशत प्राप्त कर सकते हैं।शरीर के लिए विटामिन ई उतना ही आवश्यक है, जितना कि अन्य पोषक तत्व। विटामिन ई वसा में घुलनशील एक विटामिन है। इसकी मुख्य भूमिका एक एंटीऑक्सिडेंट के रूप में कार्य करना है। इतना ही नहीं, यह इम्युन सिस्टम को भी बेहतर बनाता है और दिल की धमनियों में थक्के बनने से रोकता है। लेकिन जब आप पर्याप्त मात्रा में विटामिन ई नहीं लेते तो इससे आपको कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं शुरू हो जाती हैं। तो चलिए आज हम आपको उन आहार के बारे में बता रहे हैं, जो विटामिन ई से भरपूर हैं और जिनके सेवन से आप शरीर में विटामिन ई की कमी को आसानी से दूर कर सकते हैं-

एवोकैडो-एवोकाडो कई पोषक तत्वों का एक समृद्ध स्रोत है, जैसे पोटेशियम, ओमेगा -3 एस, और विटामिन सी और विटामिन के। आधा एवोकाडो भी आपके विटामिन ई की दैनिक आवश्यकता का 20 प्रतिशत तक होता है। वैसे आम और कीवी में भी विटामिन ई होता है,

लेकिन एवोकाडो में विटामिन ई की मात्रा अधिक पाई जाती है।

सूरजमुखी के बीज-डायटीशियन के अनुसार, सूरजमुखी के बीज में विटामिन ई के अलावा मैग्नीशियम, कॉपर, विटामिन बी1, सेलेनियम और फाइबर मिलता है। ऐसे में आप इसे अपने ब्रेकफास्ट में बेहद आसानी से शामिल कर सकते हैं।

पीनट बटर-मूंगफली और उसकी मदद से बनने वाले मक्खन में विटामिन ई प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। महज दो टेबलस्पून पीनट बटर के सेवन से आप अपने शरीर के विटामिन ई की दैनिक आवश्यकता का 18 प्रतिशत प्राप्त कर सकते हैं।

बादाम-आपको शायद पता ना हो लेकिन बादाम भी आपके शरीर में विटामिन ई की कमी को पूरा करने में मदद करते हैं। करीबन एक औंस बादाम से आपको 7.3 मिलीग्राम विटामिन ई प्राप्त होता है। वैसे बादाम के सेवन से आपको अन्य भी कई लाभ प्राप्त होते हैं। जैसे याददाश्त का तेज होना, मोटापा और हृदय रोग के जोखिम का कम होना आदि।

पाइन नट-हेल्थ एक्सपर्ट बताते हैं कि बादाम की तरह ही पाइन नट्स में भी विटामिन ई पाया जाता है। दो टेबलस्पून पाइन नट से आपको करीबन 3 मिलीग्राम विटामिन ई प्राप्त होता है।

दूर करें गले की खराश गले में खराश

दर्द, खुजली या गले में जलन को संदर्भित करता है। गले में दर्द गले में खराश का प्राथमिक लक्षण है। जब आप भोजन और तरल पदार्थ निगलने की कोशिश करते हैं तो आपको निगलने में कठिनाई हो सकती है। ठण्ड के मौसम में अक्सर ऐसी शिकायतें देखने को मिलती हैं।प्रकृति में संक्रामक, गले में खराश अकसर पहला संकेत होता है जो हमारे शरीर को संक्रमण का एहसास देता है। यहाँ कुछ घरेलू उपचार दिए गए हैं जिनका पालन करके आप इस मुश्किल से छुटकारा पा सकते हैं-

करें यह फूड्स

गारगिल्स- गले में खराश के संक्रमण के लिए गरम पानी का गरारा इलाज का सबसे अच्छा और प्रभावी तरीका है। ऐसा इसलिए है क्योंकि नमक के साथ एक गिलास गुनगुना पानी ग्रसनी क्षेत्र में रक्त के प्रवाह को बढ़ाने में मदद करता है, जो अंततः संक्रमण को ख़त्म कर देता है। इसके अलावा, बलगम, जो अकसर ऐसे समय में सख्त हो जाता है, इससे यह ढीला हो जाएगा और शरीर से आसानी से बाहर निकल जाएगा।

गर्म तरल पदार्थ

चाय, जैसे दालचीनी चाय, अदरक तुलसी चाय, नींबू शहद चाय या बस एक कप देसी मसाला चाय आपके गले के लिए चमत्कार साबित हो सकती है। चूंकि संक्रमण के कारण गला घुट जाता है, गर्म तरल पदार्थ इस क्षेत्र को आराम करने में मदद कर सकता है।

मुलायम आहार

आपके पेट के लिए हल्का भोजन करना हमेशा सहायक होता है। क्योंकि ये आपके गले से नीचे जाते समय चोट नहीं करते हैं। सबसे अच्छे परिणामों के लिए आप सब्जियों को अच्छी तरह से पका कर और खिचड़ी या दाल के साथ मैश करके ले सकते हैं।

स्टीम

आप अपने स्टीम में कफ सप्रेसेंट डाल सकते हैं और तेजी से रिकवरी के लिए इसे ले सकते हैं। यह आपके नाक और गले को खोल देगा और आपको ठीक से सांस लेने में मदद करेगा।

शहद

शहद को चाय में मिलाकर लेना गले में खराश का एक सामान्य घरेलू उपचार है। एक अध्ययन में पाया गया है कि शहद आम खांसी दबाने वालों की तुलना में रात की खांसी को कम करने में अधिक प्रभावी होता है। शहद एक घाव भरने वाला तत्व है जो गले में खराश के लिए प्रभावी गति से मदद करता है।

पुदीना

पुदीना सांस की शुद्धिकरण के लिए जाना जाता है। पतला पेपरमिंट ऑयल स्प्रे भी गले की खराश से राहत दिला सकता है। पुदीना में मेन्थॉल होता है, जो पतले बलगम और गले में खराश और खांसी में मदद करता है। पेपरमिंट में जीवाणुरोधी और एंटीवायरल गुण होते हैं, जो गले को काफी राहत प्रदान करते हैं।

लहसुन

लहसुन में प्राकृतिक जीवाणुरोधी गुण होते हैं। इसमें एक ऑर्गेनोसल्फर कंपाउंड एलिसिन होता है, जो संक्रमण से लड़ने की क्षमता के लिए जाना जाता है। एक रिसर्च में पाया गया है कि नियमित रूप से लहसुन के पूरक लेने से सामान्य कोल्ड वायरस को रोकने में मदद मिल सकती है। अपने आहार में ताज़ा लहसुन शामिल करना भी इसके रोगाणुरोधी गुणों को प्राप्त करने का एक तरीका है।

विटामिन सी सीरम से स्किन को मिलते हैं क्या फायदे

आजकल महिलाएं अपनी स्किन की देखभाल के लिए कई तरह के स्किन केयर प्रॉडक्ट्स का इस्तेमाल करती हैं और इन्हीं में से एक है सीरम। यूं तो आपको मार्केट में कई तरह के सीरम मिल जाएंगे, लेकिन विटामिन सी सीरम को सबसे अच्छा प्रॉडक्ट माना जाता है। विटामिन सी सीरम में ना केवल एंटी-एजिंग इंग्रीडिएंट्स मौजूद होते हैं। बल्कि यह आपकी स्किन को अधिक स्मूद और ग्लोइंग भी बनाता है। आमतौर पर, यह माना जाता है कि बढ़ती उम्र की महिलाओं को विटामिन सी सीरम का इस्तेमाल करना चाहिए। हालांकि, हर स्किन की महिला इसे बेहद आसानी से यूज कर सकती है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको विटामिन सी सीरम से होने वाले कुछ बेहतरीन लाभों के बारे में बता रहे हैं-

स्किन को करे ब्राइटन

विटामिन सी सीरम को स्किन केयर रूटीन में शामिल करने का एक सबसे बड़ा लाभ यह है कि आपकी स्किन पर मौजूद पिगमेंटेशन को फेड करके उसे अधिक ब्राइटन करने में मदद करता है। अगर आप इसका इस्तेमाल करते हैं, तो यह डलनेस को दूर करता है और त्वचा को एक यूथफुल ग्लो प्रदान करता है। ऐसे में अगर आपकी स्किन को अधिक ग्लोइंग व यूथफुल बनाए रखना चाहते हैं तो आपको विटामिन सी सीरम का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।

स्किन टोन को करे इवन

विटामिन सी सीरम में एंटी-इंफ्लमेट्री गुण पाए जाते हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि अगर इसे स्किन पर सही तरह से अप्लाई किया जाए तो यह आपकी त्वचा को शांत करता है और सूजन को कम करता है, जिससे आपके चेहरे पर चमक आती है। वहीं, जिन लोगों को स्किन में रेडनेस, डॉर्क स्पॉट्स या फिर अनइवन स्किन टोन की समस्या होती है, उनके लिए भी विटामिन सी सीरम बेहद ही लाभदायक है। आप इसे बेहद आसानी से इस्तेमाल करके एक इवन स्किन टोन पा सकते हैं।

अंडर-आई सर्कल्स से छुटकारा

विटामिन सी सीरम आपकी स्किन के साथ-साथ अंडर आई एरिया को भी लाभ पहुंचाता है। जब आप इसे आंखों के नीचे के एरिया पर इस्तेमाल करते हैं तो यह उसे हाइड्रेट करता है, जिससे महीन रेखाओं को कम करने में मदद मिलती है। हालांकि विटामिन सी ओवरऑल रेडनेस को कम करने में अधिक प्रभावी है, लेकिन जिन लोगों को अंडर आई एरिया में डिस्कलरेशन की समस्या है, वह विशेष रूप से उस एरिया में सीरम का इस्तेमाल अवश्य करें।

फेस शेप के अनुसार कुछ इस तरह करवाएं हेयर कट

अगर आपका फेस शेप ओवल है तो यकीन मानिए कि आप बहुत अधिक लकी हैं। दरअसल, यह एक ऐसा फेस शेप है, जिस पर कई तरह के हेयरस्टाइल्स और हेयर कट्स को ट्राई किया जा सकता है। ओवल फेस शेप पर लगभग हर तरह का हेयर कट जंचता है। यह तो हम सभी को पता है कि हमारे लुक में हेयर का एक अहम् रोल होता है। तभी तो लोग जब भी अपने लुक में एक चेंज चाहते हैं तो हेयर कट करवाना पसंद करते हैं। यूं तो हर तरह के हेयर कट का अपना एक अलग चार्म होता है। लेकिन वह हेयर कट आप भी अच्छा लगे, यह जरूरी नहीं है। ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि हर व्यक्ति का फेस शेप अलग होता है और इसलिए उसे ऐसा हेयर कट करवाना चाहिए, जो उनके फेस शेप को कॉम्पलीमेंट करे। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको डिफरेंट फेस शेप के अनुसार कुछ हेयर कट्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आप बेहद आसानी से ट्राई कर सकते हैं-

अगर आपका फेस शेप ओवल है तो यकीन मानिए कि आप बहुत अधिक लकी हैं। दरअसल, यह एक ऐसा फेस शेप है, जिस पर कई तरह के हेयरस्टाइल्स और हेयर कट्स को ट्राई किया जा सकता है। ओवल फेस शेप पर लगभग हर तरह का हेयर कट जंचता है। ओवल फेस की महिलाएं जो शॉर्ट हेयर रखना पसंद करती हैं, वह ब्लंट बॉब हेयरकट या लॉब हेयरकट ट्राई कर सकती हैं। वहीं, अगर आप लॉन्ग हेयर लुक रखना चाहती हैं तो ऐसे में आप मिनिमल लेयर्स लुक रख सकती हैं।

स्क्वेयर फेस के लिए हेयर कट

अगर आपका फेस शेप स्क्वेयर है तो इसका अर्थ है कि आपकी जॉलाइन बेहद शॉर्प है और ऐसे में आपको ऐसे हेयर कट्स को चुनना चाहिए, जो उसे एक सॉफ्ट लुक दें। आपको ऐसे ब्लंट कट से बचना चाहिए, जो जॉलाइन पर खत्म हो, क्योंकि ऐसे हेयरकट आपकी जॉलाइन को और भी अधिक शॉर्प दिखाते हैं। साथ ही आपका फेस अधिक स्क्वेयर नजर आता है। आप हेयरकट में लेयर्स का ऑप्शन चुन सकती हैं। इसके अलावा, एमेट्रिकल बैंग्स कट भी स्केवयर फेस पर काफी अच्छा लगता है।

राउंड फेस के लिए हेयर कट

राउंड फेस शेप की महिलाओं को ऐसे हेयर कट का चयन करना चाहिए, जो उनकी जॉलाइन के थोड़ा लम्बा होने का भ्रम पैदा करें। इसके लिए आप लॉन्ग बॉब कट का ऑप्शन चुन सकती हैं। इसके अलावा, साइड स्वेप्ट बैंग्स भी इस फेस शेप के लिए एक अच्छा ऑप्शन माना जाता है। वहीं अगर आप अपने फेस में एक स्ट्रक्चर एड करना चाहती हैं तो हेयर कट में लेयर्स का ऑप्शन भी चुन सकती हैं।

सारा के साथ काम नहीं करना चाहती है अमृता सिंह

बॉलीवुड अभिनेत्री सारा अली खान को लगता है कि उनकी मां अमृता सिंह उसके साथ काम नहीं करना चाहती है। सारा अली खान की अपनी मां अमृता सिंह के साथ अच्छी बॉन्डिंग है। सारा अपनी मां से बहुत प्यार करती है। दोनों ने एक विज्ञापन में भी साथ काम किया था। सारा चाहती है कि किसी फिल्म में उसे मां अमृता सिंह के साथ काम करने का मौका मिले, लेकिन सारा को लगता है कि उनकी यह ख्वाहिश शायद ही पूरी होगी। सार अली खान को लगता है कि उनकी मां उनके साथ काम नहीं करना चाहेगी। सारा अली खान ने कहा, उनकी मां उनके साथ काम नहीं करना चाहेंगी क्योंकि वह उनकी मां हैं। यदि शूट चल रहा है और उस दौरान मेरे चेहरे पर बाल भी आ गया तो वह शॉट के बीच में ही कट बोल सकती हैं जिससे वह मेरे बाल ठीक कर सकें। मेरी आंखों के सामने अभी वो विजुअल है जहां वह चाहती हैं कि मैं बेस्ट दिखूं क्योंकि मैं उनकी बेटी हूं। मुझे नहीं लगता कि मैं कभी उन्हें ऐसी स्थिति में डालना चाहूंगी। सारा ने कहा ,मेरी मां का मानना है कि आपको अपने काम को 100 प्रतिशत देना चाहिए।

सलमान खान ने मुझे नहीं बनाया : मलाइका

बॉलीवुड की बोल्ड और खूबसूरत एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा ने अपने सिजलिंग डांस मूव्स के जरिए इंडस्ट्री में अलग पहचान बनाई है। उन्होंने फिल्मों के कई हिट डांस नंबर्स में शानदार परफॉर्मेंस दी है। वहीं, मलाइका को अपने अंदाज को लेकर तारीफें तो मिलती ही हैं लेकिन इसके साथ ही उन्हें ट्रोल्स का सामना भी करना पड़ा है। लेकिन मलाइका ने इन को शानदार जवाब देना जानती हैं। एक वक्त पर मलाइका ने अपने नाम के साथ आइटम गर्ल जोड़े जाने पर बुरी तरह नाराजगी जाहिर की था। मलाइका ने कहा था कि उन्होंने खुद के दम पर सबकुछ हासिल किया है। छैंया-छैंया में शानदार टैलेंट दिखाने के बाद मलाइका को जबरदस्त शोहरत मिली थी। उन्होंने अरबाज खान से शादी के बाद भी डांस के जरिए लोगों के दिलों पर राज करने का सिलसिला जारी रखा था। वहीं, मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो राखी सावंत ने एक पुराने इंटरव्यू में कह डाला था कि मलाइका अरोड़ा को आइटम गर्ल इसलिए नहीं कहा जाता क्योंकि वो सलमान खान की रिश्तेदार हैं। वहीं, इसके बाद 2008 में मलाइका ने राखी के कमेंट पर जवाब देते हुए कहा था- इस हिसाब से तो मुझे सलमान की हर फिल्म और हर स्पेशल एपीयरेंस वाले गाने में होना चाहिए।

मलाइका ने इस इंटरव्यू में कहा था- सलमान खान ने मुझे नहीं बनाया है, मैं एक सेल्फ मेड महिला हूं। बता दें कि इन दिनों मलाइका डांस रिएलिटी शो इंडियाज बेस्ट डांसर 2 पर बतौर जज नजर आ रही हैं। उन्होंने 2017 में अरबाज खान से अपने रास्ते अलग कर लिए थे और अब वो अभिनेता अर्जुन कपूर को डेट कर रही हैं दोनों खुलकर एक-दूसरे के लिए अपनी फीलिंग्स जाहिर कर चुके हैं। हालांकि, दूसरी शादी को लेकर अभी तक मलाइका ने कोई फैसला नहीं लिया है।

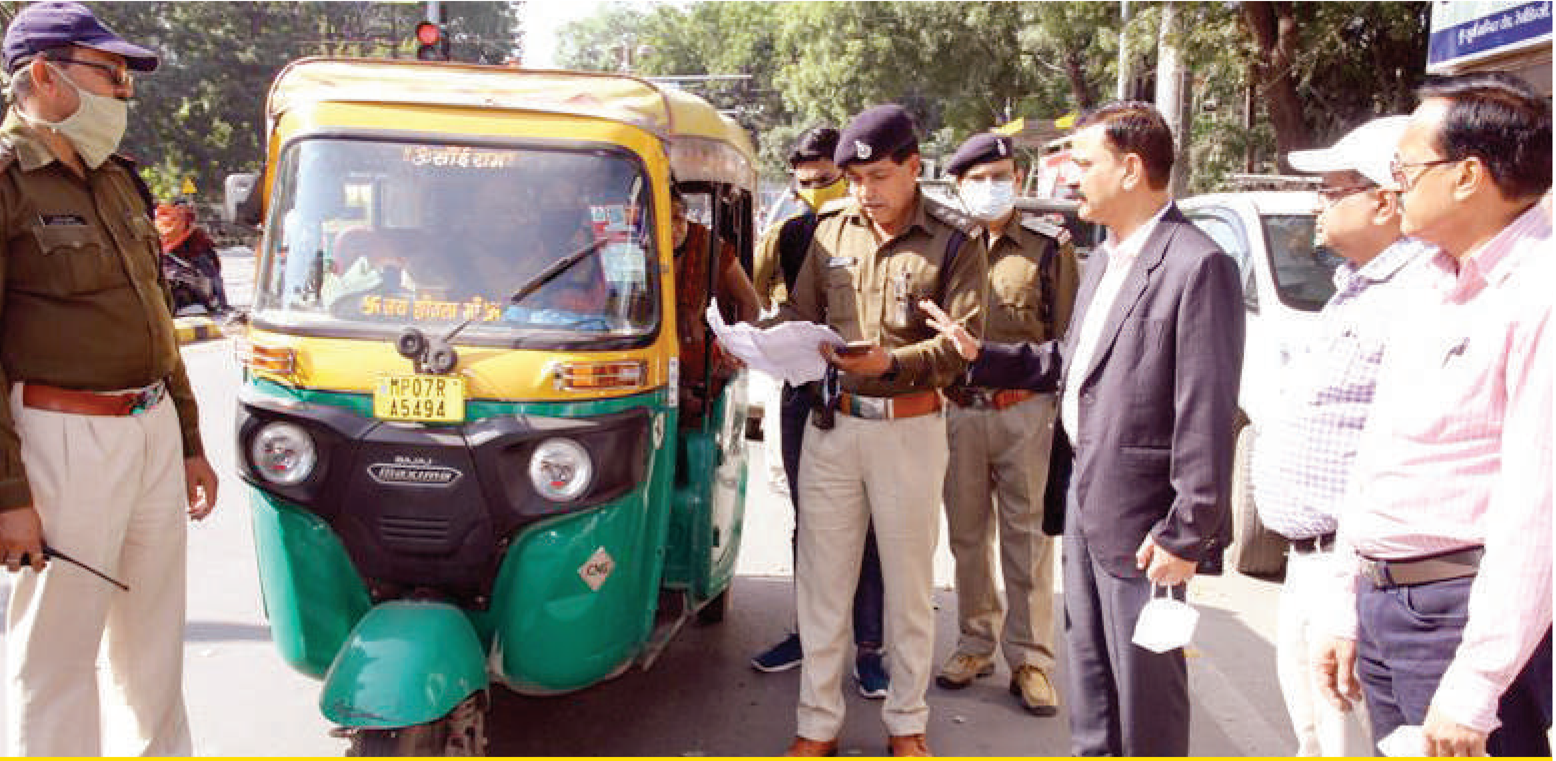

RTO और Traffic ने संयुक्त रूप से मिलकर चलाया चैकिंग अभियान

ट्रैफिम नियमों का पालन करने का पढ़ाया पाठ

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

ग्वालियर. शहर में बढ़ती दुर्घटनाओं को लेकर यातायात पुलिस और आरटीओ विभाग की टीम ने संयुक्त रूप से ग्वालियर शहर के मैन चौराहों पर

विशेष चैकिंग अभियान चलाया गया जिसमें मौटल तानसेन तिराहा, गोला का मंदिर और कंपू थाने क्षेत्र में की कार्यवाही में लगभग 60 ऑटो को जब्त किया है। जिसमें 48 ऑटों को आरटीओ विभाग ने जब्त करते हुए यातायात के थानों में रखा है। सिटीसेंटर चौराहा पर आरटीओ विभाग और यातायात पुलिस संयुक्त रूप से कार्यवाही करते हुए ट्रैफिम नियमों का पालन करने का पढ़ाया पाठ ऑटो चालकों को पढ़ाया और नियम विरुद्ध चल रहे वाहनों पर कार्रवाई भी की। परिवहन विभाग की एडिश्नल टीसी अरबिन्द सक्सैना, डिप्टी टीसी एके सिंह, आरटीओ एसपीएस चौहान, आरटीआई राजेन्द्र सोनी यातायात विभाग की ओर से डीएसपी ट्रैफिक नरेश अन्नोटिया, टीआई प्रजापति आदि ने ऑटो की चैकिंग में परमिट, फिटनेस, बीमा, लायसेंस और पॉल्यूशन के दस्तावेज चैक किये गयें। इनमें से कई ऑटो बिना रजिस्ट्रेशन शहर की सड़कों पर दौड़ रहे थे। यातायात पुलिस ने पूरे शहर में कार्यवाही की है। इस संबंध एएसपी यातायात हितिका वॉसल ने कहा है कि हम इस संबंध एक मजबूत योजना बना रहे हैं जिससे कोई भी वाहन यातायात के नियमों का उल्लघन न कर सकें। इसी संबंध में हमने ऑटो में चोरी न हो सके और महिलाओं की सुरक्षा हो सके इसी संबंध ग्वालियर पुलिस एप बनाया है जो काफी कारगर साबित हुआ है।

परिवहन विभाग की एडिश्नल टीसी अरबिन्द सक्सैना, डिप्टी टीसी एके सिंह, आरटीओ एसपीएस चौहान, आरटीआई राजेन्द्र सोनी यातायात विभाग की ओर से डीएसपी ट्रैफिक नरेश अन्नोटिया, टीआई प्रजापति

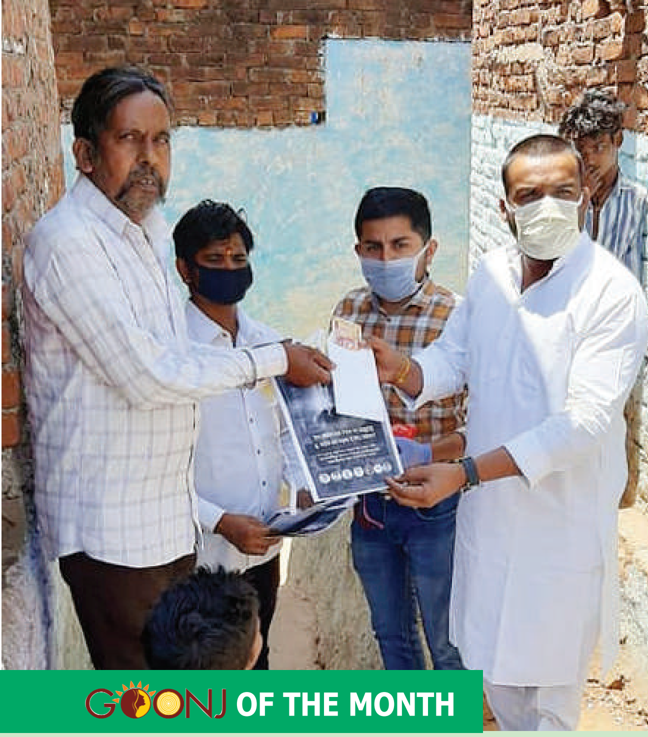

GOONJ OF THE MONTH

मेरा प्रयास मेरा कदम, जनसेवा प्रथमः हैवरन सिंह कंसाना

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

कामयाबी उन्हीं के कदम चूमती है जो कर्मठ और परिश्रमी होते हैं ऐसे ही परिश्रमी और जुझारू विराट व्यक्तित्व के धनी जिला अध्यक्ष यूथ कांग्रेस ग्वालियर हैवरन सिंह कंसाना जिन्होंने अपनी जिंदगी में कई उतार-चढ़ाव देखे और कड़ी मेहनत व सच्ची लगन के साथ जनता की सेवा राजनीति के माध्यम से कर रहे हैं। ग्वालियर युथ कांग्रेस का जिलाध्यक्ष हैवरन कंसाना जिनका जन्म ग्वालियर में हुआ है। जिनकी एजुकेशन ग्वालियर की जीवाजी विश्वविध्यालय से पूरी हुई है। एक सामाजिक कार्यकर्ता के साथ-साथ समाजसेवी के रूप में काम करते-करते उन्होंने एक राजनीतिक दल से जुड़ने का मौका मिला। वह गरीबों के लिए हमेशा खड़े रहते हैं कोरोना काल में भी उनके द्वारा कई पुनीत कार्य किए गए। सच्चे मन से लोगों की सेवा का जो उन्होंने संकल्प लिया है वह निरंतर आज भी अनवरत जारी है। ऐसे ही मेहनती और परिश्रमी व्यक्तित्व के लोगों को गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से सलाम करती है और ऑफ द मंथ शीर्षक में उनके जीवन के बारे में अपने पाठकों अवगत कराती है इस बार हम हैवरन सिंह कंसाना के जीवन से जुड़े कुछ पहलुओं एवं तथ्यों पर प्रकाश डालेंगे। गूंज को दिए एक साक्षात्कार में पढ़िए उनकी जिंदगी के कुछ महत्वपूर्ण अंश।

1. अपने बारे में हमारे पाठकों को बताएं?

मेरा नाम हैवरन कंसाना है मैं ग्वालियर युथ कांग्रेस का जिलाध्यक्ष हूँ मेरी एजुकेशन ग्वालियर की जीवाजी विश्वविध्यालय से पूरी हुई और यूथ कांग्रेस ग्वालियर का जिला अध्यक्ष होने के नाते मैं युवाओं के लिए और ग्वालियर वासियों के लिए हमेशा काम करता हूँ ।

2.पॉलिटिक्स और समाज सेवा में आने के लिए आपका प्रेरणा स्रोत क्या रहा?

महात्मा गांधी जी ,श्रीमती इंदिरा जी और नेहरू जी को मैंने काफी पढ़ा। इनको पढ़ने के बाद जाना की उन्होंने हमारे देश की आजादी के लिए काम किया और उनका हमारे देश को बनाने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा। युवाओं को भी अपने देश के लिए, अपने शहर के लिए और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए भी काम करना चाहिए। कार्यकर्ता के रूप में काम करते-करते मुझे एक राजनीतिक दल से जुड़ने का मोका मिला। राजनीति के सहारे हम लोगों की मदद भी करते हैं,हमारे आदिवासी भाइयों और बहनो स्ट/स्त्र के लोगों और अति पिछड़े लोगों की मदद करने का मौका मुझे राजनीति से मिला । लोगों की मदद करके अच्छा लगता है ।

3.आने वाले समय में आप ग्वालियर को कहां देखते हैं?

ग्वालियर से में काफी बचपन से जुड़ा हूं। मैं ग्वालियर में पैदा हुआ हूं तो मुझे लगता है कि आज हमारा जो ग्वालियर है, वो मेट्रो सिटी जैसे इंदौर, मुंबई, दिल्ली की ही तरह बने ।देश के कई शहरों को देखने के बाद हमारी हमेशा यही अपेक्षा रहती है, हमारा शहर भी आगे बढ़े, ऊंचाइयों को छुए ।हमारे ग्वालियर के अंदर अच्छे-अच्छे हॉस्पिटल हो, जिस से की स्वास्थ्य व्यवस्था और चुस्त हो साथ ही ग्वालियर में भी बड़े-बड़े खेल मैदान होने चाहिए जिस से अच्छे खिलाड़ि हमारे देश से निकले। हमारे यहाँ और भी मेडिकल कॉलेज होनी

चाहिए। ग्वालियर से जो छात्र कोटा- इंदौर जाते हैं, उनके लिए भी अच्छे पढाई के मौके ग्वालियर में आगे आने वाले समय में होंगे । ग्वालियर के लिए काम करने का मेरा मन हमेशा रहता है, मैं अपने साथियों से सदेव चर्चा करता हूँ कि कैसे हमारे नेताओं के साथ मिलकर ग्वालियर के लिए काम कर सकते है ।

4. आपके द्वारा कम्युनिटी के लिए किए गए कार्यों के बारे में बताएं?

मैने अपना समझ के लोगों की मदद हमेशा करी है। कोरोना के समय मैने जो मदद लोगों कि की वह मेरा सौभाग्य है । कोरोना के समय में किसी के पास यदि चप्पल नहीं थी तो किसके पास कपड़े नहीं थे, खासकर खाने की व्यवस्था नहीं थी मैन इन सभी लोगों के लिए कार्य किया । ग्वालियर के आसपास जो गांव में आदिवासी लोग है मेरी ऐसी कोशिश रहती है की जो भी बड़े मौके हो वो में यही मनाऊं,फिर चाहे वह बाल दिवस हो, गांधी जी की पुण्यतिथि हो, राजीव जी की जयंती हो हम लोग इनके बीच में जाकर बच्चों के साथ मिलकर खुशी मनाते हैं। मैं हमेशा प्रयास करता हूं कि अति पिछड़े लोगों के बीच में जाकर बड़ा त्योहार होली हो, दिवाली हो, इनके बीच में जाकर बनाता हूं । मैंने अपने साथियों के साथ मिलकर आदिवासी भाई बहनो के लिए क्रिकेट टूर्नामेंट ऑर्गेनाइज कराया था जो कि उनको बहुत अच्छा लगा।

5. ग्वालियर के लोगों को आप संदेश देना चाहेंगे?

मेरा मेरे ग्वालियर के लिए मैसेज है कि हम अपने शहर को साफ सुथरा रखें। अभी जो ग्वालियर स्वच्छता सर्वेक्षण में पहले से भी दो पायदान पीछे आ गया है हमे उसे आगे लेजाने की ज़रूरत है। मैं लोगों को मैसेज देना चाहता हूं कि जो आज हम कहीं भी कचरा फेंक देते हैं, उस कचरे को कचरा दान में डालना चाहिए।

छात्र-छात्राओं को विज़न ज़ीरो के प्रति किया जागरूक, बताए ट्रैफिक नियम

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

माँ पूर्णगिरी महिलामंडल संस्था द्वारा गूँज कम्युनिटी रेडियो के माध्यम से शहर के वाणी भारतीय विद्यालय में किशोर किशोरियों को विजन ज़ीरो एवं उसके अतर्गत आने वाली.

नवीन योजनाओं के प्रतियोगिता जागरूक किया गया. कार्यक्रम में में मुख्य अथिति के रुप में माँ पूर्णगिरी महिला मंडल गूँज संस्था की अध्यक्ष कृति सिंह उपस्थित थीं। उन्होंने अपने उद्बोधन में विज़न ज़ीरो क्या हैं तथा इसके अंतर्गत आने वाली सभी चीज़ो को विस्तार पूर्वक समझाया एवं उन्होने बताया की मध्य प्रदेश एक्सीडेंट के मामले में दूसरे स्थान पर हैं जिससे हम सबको बचना हैं.. साथ ही उन्होने बच्चों को रेड सिग्नल के वारे में भी बताया कार्यक्रम में विशेष अथिति के रुप में स्तुति सिंह उपस्थित थी उन्होने अपने उड़्वोदन में सभी बच्चों को किस प्रकार रोड पर चलना चाईए एवं युवा किस प्रकार एक्सीडेंट होने से बचा सकतें इस पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी. कार्यक्रम में अच्छेद्र सिंह कुशवाह द्वारा सभी लोगों को अन्य गतिविधियों पर जानकारी दी गयी. कार्यक्रम में कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के संचालक श्री सुनील जैन की कार्यक्रम का संचालक विद्यालय की और से राम जैन ने किया एवं आभार स्वाति तोमर ने किया. कार्यक्रम में 250 बच्चों को जागरूक किया।

ट्रक ड्राइवर्स को समझाए शासन के ट्रैफिक नियम

माँ पूर्णगिरी महिलामंडल संस्था द्वारा गूँज के माध्यम से ग्वालिर शहर के ट्रांसपोर्ट नगर में ट्रकर्स हेतु दौ अलग अलग जगह नुकड़ नटको को जागरूक किया गया... कार्यक्रम में में मुख्य अथिति के रुप में माँ पूर्णगिरी महिला मंडल गूँज संस्था की अध्यक्ष कृति सिंह उपस्थित थी उन्होने अपने उधवोदन में विज़न ज़ीरो क्या हैं तथा इसके अंतर्गत आने वाली सभी चीज़ो को विस्तार पूर्वक समझाया एवं उन्होने बताया की मध्य प्रदेश एक्सीडेंट के मामले में दूसरे स्थान पर हैं जिससे हम सबको बचना हैं.. कार्यक्रम में लखन सोलंकी की टीआ द्वारा नुकड़ नाटक एवं गीत गाकर लोगों को जागरूक किया गया. कार्यक्रम में अच्छेद्र सिंह कुशवाह द्वारा सभी लोगों को अन्य गतिविधियों पर जानकारी दी गयी. कार्यक्रम के अंत में संस्था की सदस्या स्तुति सिंह द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया....नाटक के माध्यम से 200 ट्रक ड्राइवर्स को जागरूक किया गया।

स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रोज़ा ओलयाई से गूंज की विशेष बातचीत

शरीर के लिए कैल्शियम डाइट बहुत ज़रूरीः डॉ. रोज़ा ओलयाई

नदी को कोई रास्ता देता नहीं है नदी अपना रास्ता खुद बनाती है। जिंदगी में सफलता और असफलता दोनों मिलती हैं, लेकिन असफलता मिलने का मतलब जिंदगी में रुक जाना नहीं बल्कि एक सबक होता है। हारते तो वहीं है जो चुनौतियों से लड़ते नहीं और जीतते वहीं है जो कुछ कर गुजरने की ठान लेते हैं ऐसी ही एक शख्सियत को आज गूंज अपने पाठकों से आज रूबरू करा रहे हैं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रोज़ा ओलयाई से जिन्होंने कोरोना काल में सच्चे कोरोना वॉरियर्स के रूप में समर्पण भाव से मरीजों की सेवा की और आज भी निरंतर मरीजों की सेवा जारी है उन्होंने हर परिस्थिति का सामना किया और पूरे समर्पण के साथ मरीजों की सेवा भाव में लगी रहीं गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्य से उन्हें सलाम करती है। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रोज़ा ओलयाई से गूंज की विशेष बातचीत के कुछ अंश

(गूंज न्यूज नेटवर्क)

1. हमारे पाठकों को अपने बारे में कुछ बताइए.

मैं डॉ. रोज़ा ओलयाई स्त्री रोग विशेषज्ञ ग्वालियर से हूँ डिरेक्टर ऑफ़ ओलयाई हास्पिटल, हॉस्पिटल रोड ग्वालियर . आज आपके साथ थोड़ी जानकारी देना चाहती हूँ जो महिलाओं और लड़कियों के लिए हैं। जिनकी समस्या बहुत ज़्यादा आजकल हो रही है जैसे कुछ इशूज़ स्वास्थ्य के बारे में जैसे मोटापन, अचानक फुंसी आ जाना चेहरे के ऊपर और इस तरीक़े से जो समस्याएं ज़्यादा फैल रही हैं। मैंने अपनी पढ़ाई ग्वालियर से की है , गजरा राजा मेडिकल कॉलेज से की है. कुछ समय के लिए मैं ऑस्ट्रेल्या गई थी , जहां मुझे काफ़ी अच्छी कुछ सीखने को मिला. पेशंट के साथ कैसे पेश आएँ, काउन्सलिंग करना बेहद ज़रूरी है, पेशंट को बीमारी के बारे में डिटेल में बताना ज़रूरी है.

2. एक फ़ीमेल को गायनकॉलिजस्ट को कब विज़िट करना चाहिए और कब-कब?

तो देखा जाए तो आज कल 10-15 साल की लड़कियों में शुरू होते हैं ये ज़रूरी नहीं कि वे जाकर चेकअप करवाए , लेकिन हाँ अगर कभी कुछ प्रॉब्लम आ रही है जैसे तेज दर्द होना, फ़्लो ज़्यादा होना, पेशाब में जलन होना, हाँ तब एक बार आपको ज़रूर डाक्टर से चैकअप करवाना चाहिए, रेगुलर चेकप एक फ़ीमेल को 35 साल से करवाना चाहिए , सफ़ेद पानी की जाँच जिससे बच्चे दानी में कैन्सर है या नहीं का पता पड़ता है।

3. एक उम्र के साथ फ़ीमेल बॉडी में काफी अंतर नज़र आने लगते हैं, आप उनको क्या डाइयट सजेस्ट करेंगी.

आजकल यही देखने को मिलता है हर कोई पिज्जा, बर्गर ज़्यादा खा रहा है बचपन से ही हमें बच्चे को एक बैलेंस डाइट देनी चाहिए । हरी पत्तेदार सब्ज़ियां दूध, पनीर, सोया ये उसके खाने में ज़रूर होना चाहिए। छोटी उम्र से ही आपकी हेल्थी डाइट रहती है तो वो आपका बेस बन जाती है जिससे आपको उम्रभर हड्डियों की परेशानी या बदन दर्द जैसी आम तकलीफों का सामना नहीं करना पड़ता है इसीलिए मेल और फ़ीमेल मेरा दोनों दोनों से यही कहना है कि बचपन से ही बच्चे को हेल्थी डाइट ज़रूर दे और जो 35-40 से ज़्यादा उमर के लोग हैं उनके लिए कैल्शियम डाइट बहुत ज़रूरी है क्योंकि वक्त के साथ बॉडी में कैलशियम काफ़ी ज़्यादा गिर जाता है इसी लिए कैलशियम इंटेक हाई रखें।

4. आजकल लेडीज़ में ऐल्कहाल इंटेक काफ़ी ट्रेंड में है , लेटर इससे कन्सीव करने में कोई परेशानी आती है क्या?

ये एक परेशानी का विषय तो है क्योंकि स्मोकिंग ड्रिंकिंग या ड्रग्स ये सब लेने से फ़ीमेल बॉडी में अंडे बनने की शक्ति कम हो जाती है, साथ ही लिवर पर भी काफ़ी अफेक्ट करता है. ज़्यादा सिगरेट पीने से स्ट्रेस बढ़ता है फिर लगता है 1 नहीं 2 नहीं 3 पीते रहे लेकिन ये हैबिट में बदल जाता है जिससे बाद में मुँह के कैन्सर बनते हैं बच्चे दानी के कैन्सर बनते हैं इसलिए कोशिश करें इसका सेवन न ही करें।

5. आप हमारे पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगी.

मैं यही संदेश देना चाहूँगी की जाँच के लिए सही डॉक्टर के पास जाएं क्योंकि आज कल गूगल पर सब मिल जाता है लेकिन ये नहीं है, मेरी यही राय है कि अपने चेकप के लिए सही डॉक्टर को चुने और सुरक्षित रहिए।

महिला उत्थान के लिए समर्पण भाव से कार्य कर रहीं एफपीएआई शाखा प्रबंधक श्रीमती नीलम दीक्षित

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से ग्वालियर अंचल की होनहार शख्सियतों से अपने पाठकों को रूबरू कराती है जिन्होंने कड़ी मेहनत और परिश्रम से अलग पहचान बनाई है एवं समाजसेवा व समाज कल्याण के लिए समर्पित भाव से कार्य किया है। उन्हें हम गूंज स्टार शीर्षक के माध्यम से पाठकों को रूबरू कराते हैं इस बार हम एफ.पी.ए.आई. ग्वालियर की शाखा प्रबंधक श्रीमती नीलम दीक्षित जो निरंतर कई वर्षों से प्रयत्नशील होकर महिला उत्थान के लिए कार्य कर रहीं हैं। आईए उनकी जिंदगी पर डालते हैं एक नजर।

एफ.पी.ए.आई. ग्वालियर की शाखा प्रबंधक श्रीमती नीलम दीक्षित बेटियों का जीवन संवारने हेतु एफपीएआई के माध्यम से निरंतर विगत कई वर्षों से प्रयत्नशील होकर कार्य कर रहीं हैं। श्रीमती दीक्षित अपने जीवन में सामाजिक उत्थान एवं जरूरतमंद लोगों की सेवा विगत 1984 से कर रहीं हैं। श्रीमती दीक्षित पौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से जुड़ीं और अशिक्षित महिलाओं को उन्होंने शिक्षा दिलाने का संकल्प लिया और करीब 60 से ज्यादा महिलाओं को साक्षर बनाने व उसके साथ ही उन्होंने विभिन्न ग्रामीणों क्षेत्रों में बेटियों को आगे बढ़ने एवं शिक्षा ग्रहण कराने में उन्होंने प्रयास किए और किशोरी मंडलों का गठन किया जिसमें बेटियों, महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्रीमती नीलम दीक्षित को उनके द्वारा महिला उत्थान, समाजसेवा में किए जा रहे प्रयासों के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने महिला दिवस के अवसर पर कई सामाजिक संस्थाओं ने सम्मानित किया एवं जिला कलेक्टर ने भी उन्हें सम्मानित किया। परिवार कल्याण कार्यक्रम में पुरष भागीदारी बढ़ाने में जिले द्वारा पुरस्कृत किया गया। थाईलैंड में उत्कृष्ट परामर्श हेतु प्रशिस्त पत्र मिला एवं एचआईवी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

नीलम दीक्षित जिला स्तरीय, राज्य स्तरीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परामर्श प्रशिक्षण प्राप्त कर जिलों को लाभ दे रहीं हैं। साथ ही उन्होंने ग्रामीण एवं शहरी पिछड़ी क्षेत्रों में महिलाओं को स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के रूप में तैयार करने का कार्य किया व वर्तमान में सैकड़ों ऊषा कार्यकर्ता क्षेत्र में काम रही हैं।

श्रीमती दीक्षित ने सामाजिक जिम्मेदारी एवं पारिवारिक नैतिक जिम्मेदारी बहुत ही अच्छे ढंग से निभाई है उन्होंने पति प्रवीण कुमार दीक्षित के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सामाजिक कार्यों में उत्कृष्ट भूमिका निभा रही हैं। एवं बच्चों को भी वही संस्कार दे रहीं हैं जिससे वह भी आगे चलकर समाज के विकास में योगदान दे सकें। वर्तमान में उनके बड़े पुत्र ईश दीक्षित आई. आई. टी. में इंजीनियर कर सेवा कर रहे हैं जबकि छोटे पुत्र यश दीक्षित पिता और भाई के नक्शेकदम पर चलकर आगे बढ़ रहे हैं।

सामाजिक महिला उत्थान एवं सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र और स्वास्थ्य के क्षेत्र में श्रीमती दीक्षित की सशक्त भागीदारी रही है। साथ ही उन्होंने फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया की शाखा प्रबंधक के रूप में अपना कार्यभार सन् 1996 से अभी तक पूरे जिले में स्वास्थ्य सेवाएं देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं। उनके द्वारा मोबाइल हेल्थ वेन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाया। आईसीटीसी सेंटर की शुरूआत की साथ ही मुफ्त में एचआईवी टेस्टिंग की भी व्यवस्था की साथ ही गोला का मंदिर संस्था के केन्द्र पर परामर्श देती हैं व अन्य सभी चिकित्सा सेवा की व्यवस्था की गई हैं, जिसमें महिला एवं पुरुष सेवा प्रदान की जाती है। साथ ही आसपास के क्षेत्रों में सब सेंटर की चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध

कराने में मदद की व महिलाओं को सशक्त करने परामश देती हैं जिसे युवा सूचना केन्द के नाम से जाना जाता है।

समाजसेवा के क्षेत्र में मिले सम्मान

विज़न ज़ीरो

परिवहन विभाग ने सड़क दुर्घटनाएँ रोकने और दुर्घटना में घायल लोगों की जान बचाने के लिए सुरक्षित प्रणाली पर आधारित विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना तैयार की है। विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना पाँच स्तम्भों पर आधारित है। इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड़, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरांत सहायता शामिल है। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जाएगा। सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। हम सबका नैतिक दायित्व है यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जा सके।

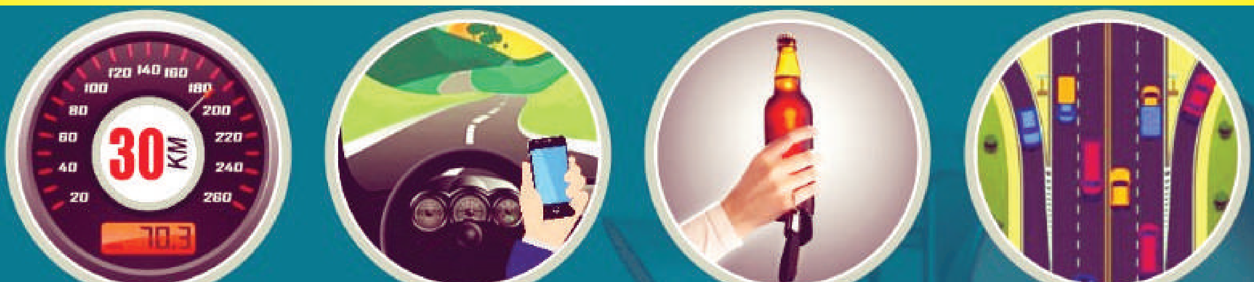

90% of ALL ACCIDENTS ARE LINKED TO HUMAN ERROR

THE BEHAVIORS OF ROAD USERS IS THE ARE WITH
BY FAR THE BIGGEST POTENTIAL FOR IMPROVING ROAD SAFETY

IN 30% OF FATAL ACCIDENTS SPEEDING IS THE MAIN FACTOR

DISTRACTION CAUSES 10-30% OF ROAD DEATHS

25% OF ALL ROAD FATALITIES IN EUROPE ARE ALCOHOL- RELATED

ABOUT 65% OF FATAL ACCIDENTS ARE CAUSED BY VIOLATIONS OF TRAFFIC RULES

EDUCATION AND TRAINING ARE CRUCIAL IN INSTILLING APPROPRIATE BEHAVIORS AND ATTITUDES IN ROAD USERS

CRACKING DOWN ON TRAFFIC OFFENCES WILL MAKE A DIFFERENCE

GUIDE FOR

ROAD SAFETY OPPORTUNITIES AND CHALLENGES:

LOW-AND MIDDLE-INCOME

COUNTRY PROFILES

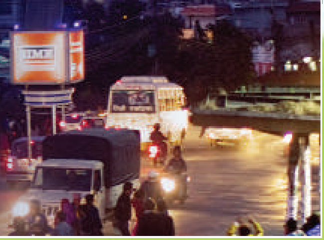

जन-जन तक पहुंच रही आपकी अपनी आवाज़

GOONJ

National News Magazine

सदस्यता फॉर्म

देश के सभी प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश के सभी जिलों में प्रसारित ग्वालियर चम्बल अंचल की लोकप्रिय पत्रिका गूंज की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करें

(मात्र 1500 रुपए में वार्षिक सदस्य बनें)

गूंज पत्रिका पढ़ें पूरे एक साल

पत्रिका में अपने संस्थान/संस्था/फर्म/बर्थ-डे/मैरिज एनीवर्सरी/पुण्यतिथि, अथवा कोई भी विज्ञापन पत्रिका में प्रकाशित करवाएं (साइज एक चौथाई) एक बार बिल्कुल फ्री

मैं गूंज नेशनल न्यूज मैगजीन की सदस्यता प्राप्त करने का इच्छुक हूं कृपया मुझे पत्रिका की सदस्यता प्रदान करें।

नाम..जन्म तिथि...................................व्यवसाय...

राज्य...शहर..............................संपर्क/पता...

.

हस्ताक्षर

website : www.goonjgwl.com, Email : goonjgwl@gmail.com

Address : E-69, Harishankarpuram, Gwalior (M.P.) Cont-7880075908 7880040908